

* સંપાદક *

पूज्य मुनि श्री हिव्यरत्न विजयश महाराज

national Fo

Personal Use (

www.i

ora

માશે સ્વાધ્યાય

- સંશોધક પરમપૂજ્ય આચાર્ય મુનિચંદ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા. પરમપૂજ્ય આચાર્ય જયસુંદરસૂરીશ્વરજી મ.સા.
 - આશીર્વાદ પૂ.પં. જયતિલક વિ. મ.સા.
- સંપાદક •
 પરમપૂજ્ય અધ્યાત્મયોગી આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય કલાપૂર્ણસૂરીશ્વરજી મહારાજાના
 પટ્ધર શિષ્ય
 પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય કલાપ્રભસૂરીશ્વરજી મહારાજાના
 શિષ્યરત્ન
 પૂજ્ય મુનિશ્રી દિવ્યરત્ન વિજય
 - પ્રકાશક શ્રી શ્રમણ સેવા પરિવાર c/o ૩૦૬,બી-વીંગ,કૃપાપ્રસાદ બીલ્ડીંગ, દાઉદ બાગ લેન, અંધેરી-વેસ્ટ, મુંબઇ.

मुद्रिताधार :- विविधस्तोत्र संग्रह, मुद्रा विज्ञान, विधि- प्रपामार्ग आदि ग्रंथ। मद्रा :- पुज्य पं इन्द्रजित विजयजी महाराज।

संशोधित + प्रक्षिप्त :-द्वितीयावृत्ति - नकल 1000

सहयोग :- विविध प् साधु-साध्वीजी महाराज ।

प्राप्तिस्थान :- पं. नानालालभाई घेलाभाई, श्री दादर आराधना भवन, अेस. के.बोलेरोड, दादर (वेस्ट), मुंबई

मूल्य : रु. ५०/-



-: मुद्रक :-वर्धमान पुस्तक प्रकाशन शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004 मों : 9227527244

આર્થિક સહયોગ

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી દિવ્યરત્ન વિજયજી મ.સા. તથા પૂ. મુનિરાજશ્રી હર્ષબોધિ વિજયજી મ.સા. ના સં. ૨૦૫૯ના ભવ્ય ચાતુર્માસની સ્મૃતિમાં શ્રી કૃષ્ણનગર જૈન શ્વે. મૂ. પૂ. સંઘ, કૃષ્ણનગર, સૈજપુર બોઘા, અમદાવાદ

તથા

પૂજ્યપાદ આચાર્યદેવશ્રી વરબોધિસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી હર્ષબોધિવિજય મ.સા.ની પ્રેરણાથી

શ્રી सुविधिनाथ जैन श्वे. मू. पू. संघ आई. टी. आई रोड सातारा जि. पुणे (महाराष्ट्र) ઉપરોક્ત બન્ને શ્રી સંઘોએ જ્ઞાનખાતામાંથી પુસ્તક પ્રકાશનનો લાભ લીધો છે. માટે ગૃહસ્થોએ ધ્યાન રાખવું.

अनुऋमणिका

| पृष्ठ | कृति | कर्ता |
|-------|-------------------------------------|----------------------|
| 8 | श्री नमस्कार महामंत्र | शाश्वत |
| ? | श्री वज्रपंजर स्तोत्र | अज्ञात पूर्वधरस्थविर |
| 3 | श्री जिनपंजर स्तोत्र | कमलप्रभसूरि |
| ξ | श्री उवसग्गहरं स्तोत्र | अज्ञात जैनश्रमण |
| १० | श्री चिंतामणिपार्श्वनाथ स्तोत्र | अज्ञात जैनाचार्य |
| १३ | श्री मंत्राधिराज पार्श्वनाथ स्तोत्र | अन्य अज्ञात जैन |
| १७ | श्री जीरावला पार्श्वनाथ स्तोत्र | मेरुतुंगसूरि |
| १९ | महामंत्रगर्भित श्री कलिकुंड | |
| | पार्श्वनाथ स्तोत्र | अज्ञात जैनश्रमण |
| २० | श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तुति | |
| २१ | श्री शऋस्तव | सिद्धसेनदिवाकर |
| २७ | प्रथम पावपडिग्घाय | चिरंतनाचार्य |
| | गुणबीजाहाणसुत्त | |
| 30 | मुनिनाम् अप्रमादयन्त्रम्- | सिद्धिषगणि |
| | [उपमिति] | |
| 38 | श्री शत्रुञ्जय लघुकल्प | अज्ञात जैनश्रमण |

श्री वर्धमान विद्या स्तव 38 श्री धर्मचऋ विद्या 34 ३५ श्री परमेष्ठी मंत्र श्री वर्धमान विद्या 36 ३६ श्री महावीरस्तव आचार्य अभयेदवसूरि गणि-पंन्यास पद धारक वर्धमान विद्या 36 बुहद् वर्धमान विद्या 80 ४२ श्री नैकार विद्या स्तवन श्री हींकार विद्या स्तवन 88 श्री नमस्कारमंत्राधिराजस्तोत्र 38 श्री लब्धिपदगर्भितमहर्षिस्तोत्र 80 लब्धिपद फल प्रकाशक कल्प 84 ५१ श्री सिद्धचऋस्तोत्र ५३ श्री गौतमाष्ट्रक ५५ सिरि गोयम थवो आचार्य मुनिसुंदरसूरि श्री गौतमस्वामी छन्द विजयसेनसुरि ५६ ५८ श्री अनुभूतसिद्धसारस्वतस्तोत्र आचार्य बप्पभट्टसूरि ६० श्री सरस्वती नाम स्तोत्र अज्ञात ६३ श्री सूरिमन्त्र स्तोत्र आचार्य मुनिसुंदरसूरि आचार्य मुनिसुंदरसूरि श्री सरस्वती - अष्टक ६४ श्री त्रिभ्वनस्वामिनी देवी स्तोत्र आचार्य मुनिसुंदरसूरि દ્દપ

| ६६ | श्री श्रीदेवी स्तोत्र | आचार्य मुनिसुंदरसूरि |
|------|--------------------------------|----------------------|
| ६७ | श्री यक्षराजगणिपिटक स्तोत्र | आचार्य मुनिसुंदरसूरि |
| ६८ | श्री पञ्चमपीठाधिष्ठायक स्तोत्र | आचार्य मुनिसुंदरसूरि |
| ६९ | श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र | आचार्य मुनिसुंदरसूरि |
| 90 | श्री चक्रेश्वरी स्तोत्र | |
| ७२ | श्री पद्मावती स्तोत्र | श्रीधराचार्य |
| ૭૫ . | श्री पद्मावती स्तोत्र | |
| ७६ | श्री चन्द्रप्रभ विद्यास्तव | |
| છહ | श्री ज्वालामालिनीदेवीमालामंत्र | |
| ८३ | श्री ज्वालामालिनी स्तोत्र | |
| ८६ | श्री शांतिधारापाठ | |
| ९० | श्री शान्तिघोषणा | अन्य अज्ञात |
| ९१ | श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र | |
| १०० | श्री गुरुस्तुति | |
| १०१ | श्री गुरुपादुका स्तोत्र | अज्ञात |
| १०२ | भैख क्षेत्रपाल स्तोत्र | |
| १०४ | श्री क्षेत्रपाल अर्चना | |
| १०५ | अथाष्ट्रक | |
| १०८ | जयमाला | |
| ११० | कल्पसूत्रांश | आचार्य भद्रबाहुसूरि |
| १११ | श्री शान्तिनाथ स्तोत्र | |

११२ श्री उपदेश श्लोक ૧૧૩ શ્રી વર્ધમાવિદ્યા જાપ વિધિ અમરહંસગણિ १२३ वासक्षेप मंत्रवानी विधि ૧૨૪ નવકારવાળી મંત્રવાની વિધિ ૧૨૫ બીજાક્ષરોનો સંક્ષિપ્ત અર્થ १२७ श्रीपञ्चषष्टि स्तोत्र १२८ पञ्चषष्टि यन्त्र स्थापना ૧૨૮ ધજા ઉપર લખવાનો યંત્ર ૧૨૮ દંડ-પાટલી ઉપર લખવાનો યંત્ર १२९ १७० यंत्र ૧૨૧ ઘંટ ઉપર લખવાનો યંત્ર १२९ सिद्ध भगवंत પૂ. આ. કલાપૂર્ણસૂરિ १३० નવગ્રહ જાપ ૧૩૧ શ્રી નવગ્રહ શાંતિ જાપ મંત્ર १३२ ચાતુર્માસ પ્રવેશ વગેરે પ્રસંગ પર નગરપ્રવેશની વિધિ १३४ भंडान प्रवेश विधि १३५ रक्षा पोटली मंत्रवानी विधि १३५ अारुम पाथरवानी विधि ૧૩૮ દેરાસરની વર્ષગાંઠે ધજા ચડાવવાનો વિધિ १३९ संसारचक्रमत्र (िशनागमान्तर्गत गाथाओ) १४० कर्मसूत्र

राग-परिहारसूत्र 888

धर्मसूत्र ६४३

संयमसूत्र १४५

१४७ अप्रमादसूत्र

आत्म-मोक्षसूत्र १४८

१४९ रत्नत्रयसूत्र

१५१ श्रमणधर्मसूत्र

समिति-गुप्तिसूत्र १५२

१५३ तपसूत्र

१५७ ध्यानसूत्र

अनुप्रेक्षासूत्र १५९

संलेखनासूत्र १६०

१६२ निर्वाणसूत्र

૧૬૩ મંત્ર પરંપરા

૧૬૪ મંત્રનાત્રણ લિંગ

૧૬૫ મંત્ર શાસ્ત્રોની નિધિ

૧૬૬ જાપના ૩ પ્રકાર

૧૬૬ મંત્ર-અનુષ્ઠાન આરંભ વખતના લગ્ન ફળ

૧૬૭ મંત્ર-વિદ્યા અનુષ્ઠાન આરંભ નક્ષત્રફળ

૧૬૮ આસન પ્રમાણે કળ:

૧૬૮ વિદ્યા - મંત્ર - ગ્રહણ કર્યા પછી સિદ્ધિ

૧૬૯ મંત્રફળ ક્યારે

૧૬૯ મંત્રના સંપ્રદાય અભિપ્રેત મંત્ર પ્રકારાદિ

श्री नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सळ्व-साहूणं एसो पंच-नमुक्करो सळ्-पाव-प्पणासणो मंगलाणं च सळेसिं पढमं हवइ मंगलं

※ ※ ※

॥ श्री वज्रपंजर स्तोत्र ॥

| र्जं परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकं । | |
|---|-------|
| आत्मरक्षाकरं वज्रपञ्जराभं स्मराम्यहम् | ।।१॥ |
| र्जं नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् । | |
| इ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् | ॥२॥ |
| व्यनमो आयरियाणां, अङ्गरक्षाऽतिशायिनी । | |
| 👸 नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोईढम् | ॥३॥ |
| र्जनमो लोए सळसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे । | |
| एसो पंचनमुकारो, शिला वज्रमयी तले | 11811 |
| सळ्यावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः । | |
| मंगलाणं च सव्वेसि खादिराङ्गारखातिका | ।।५॥ |
| स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं । | |
| वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे | ॥६॥ |
| महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । | |
| परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः | 11911 |
| यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा । | |
| तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चाऽपि कदाचन | 11311 |

श्री जिनपंजर स्तोत्र

| मुँ हीं श्रीं अर्ह अर्हद्भ्यो नमो नमः । | |
|---|-------|
| 👸 हीं श्रीं अर्ह सिद्धेभ्यो नमो नमः । | |
| मुँ हीँ श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नम: । | |
| 👸 हीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । | |
| इ हीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमो नमः | ॥१॥ |
| एष पंचनमस्कारः सर्वपापक्षयंकरः । | |
| मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् | ાારાા |
| ਰੁੱ हीं श्रीं जये विजये, अर्ह परमात्मने नमः । | |
| कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपंजरम् | 11; |
| एकभुक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । | |
| मनोऽभिलिषतं सर्वं फलं स लभते ध्रुवम् | 11811 |
| भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जित: । | |
| देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् | ાાલા |
| अर्हन्तं स्थापयेन्मुर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके । | |
| आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके | ॥६॥ |
| साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धि विधाय च । | |
| सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी: सर्वार्थसिद्धये | 11911 |

| दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः | 11811 |
|---|--------|
| पूर्वाशां च जिनो रक्षेदाग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परब्रह्म, नैऋतिं च त्रिकालवित् | ાણા |
| पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानीं च निरंजनः | ॥१०॥ |
| पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीप्रमुखादेव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् | ।।११॥ |
| ऋषभो मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचने । सम्भवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः | ॥१२॥ |
| ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद् दन्तान्यद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालुश्चन्द्रप्रभाभिधः | الفكاا |
| कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् | ાાકકાા |
| अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानिप । श्रीधर्मोप्युदरास्थिनि, श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् | ॥१५॥ |
| श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षेदरो लोमकटितटम् । मिल्लिकरुपृष्ठवंशां, जंघे च मुनिसुव्रतः | ॥१६॥ |

| पादांगुलिर्निम रक्षेच्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् । | |
|---|-------|
| श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्धमानश्चिदात्मकम् | ।।१७॥ |
| पृथिवी-जल-तेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत् । | |
| रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजन: | ॥१८॥ |
| राजद्वारे श्मशाने च, संग्रामे शत्रुसंकटे । | |
| व्याघ्र-चौराग्नि-सर्पादि, भूतः-प्रेत-भयाऽऽश्रिते | ॥१९॥ |
| अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्यापत्समाश्रिते । | |
| अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते | ॥२०॥ |
| डांकिनी-शांकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । | |
| नद्युतारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् | ॥२१॥ |
| प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरम् । | |
| तस्य किञ्चिद् भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः | ॥२२॥ |
| जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरम् । | |
| कमलप्रभराजेन्द्रश्रियं स लभते नरः | गरइग |
| प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । | |
| आसादयेत्स कमलप्रभाख्याम्, लक्ष्मी मनोवाञ्छितपूरणाय | ॥२४॥ |
| श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । | |
| वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुश्रीकमलप्रभाख्यः | ॥२५॥ |

॥ श्री उवसग्गहरं स्तोत्र ॥

| उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । | |
|--|--------|
| विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं | 11811 |
| विसहरफुर्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । | |
| तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं | 11511 |
| चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ । | |
| नरितरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खंदोगच्चं | 11\$11 |
| र्जे अमरतरुकामधेणु, चिंतामणि-काम-कुंभमाइया । | |
| सिरिपासनाह सेवा-गहाण सव्वेवि दासत्तं | ાાજાા |
| उं हीं श्रीं ऐं तुहदंसणेण सामिय, | |
| पणासेइ रोगसोगदु:क्खदोहग्गं । | |
| कप्पतरुमिव जायइ, | |
| उ तुह दंसणेण सव्वफलहेऊ स्वाहा | ।।५॥ |
| वुँ हीं निमउण विग्घनासाय, मायाबीएण धरणनागिदं । | |
| सिरिकामराजकलियं, पास जिणिंदं नमंसामि | ॥६॥ |
| र्जे हीं श्रीं सिरिपास विसहर, विज्जामंतेण झाणं झाएज्जा । | |
| धरण-पउमावई देवी, वुँ हीँ क्ष्म्ल्यूँ स्वाहा | 11911 |

| र्नं जयउ धर्राणंद-पउमावई य नागिणी विज्जा । विमलझाणसहिओ, र्वं हीं क्ष्म्ल्यूँ स्वाहा | 11 211 |
|--|---------|
| हुँ थुणामि पासनाहं, हुँ हुँ पणमामि परमभत्तिए । अट्ठक्खरधरणेंदो-पउमावई पयडिया कित्ती | 11911 |
| जस्स पयकमलमज्झे, सया वसेइ पउमावई य धर्राणदो । तस्स नामेण सयलं, विसहरविसं नासेइ | ॥१०॥ |
| तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्धेणं, जीवा अयरामरं ठाणं | ॥११॥ |
| उँ नहुहु-मयहाणे, पणहुकम्महु नहुसंसारे । परमहुनिद्विअहे, अहुगुणाधिसरं वन्दे हीँ स्वाहा | ાાકરાા |
| हुँ गरुडो वनितापुत्रो, नागलक्ष्मी महाबलः । तेण मुच्चंति मुसा, तेण मुच्चंति पन्नगाः | ॥६३॥ |
| स तुह नाम सुद्धमंतं, सम्मं जो जवेइ सुद्धभावेण । सो अयरामरं ठाणं, पावइ न य दोग्गइं दुक्खं वा | 118.811 |
| र्गुं पण्डु-भगंदर दाहं, कासं सासं च सूलमाइणि । पासपहुपभावेण, नासंति सयलरोगाइं हीं स्वाहा | ાાકુલા |
| र्वं विसहर-दावानलं-साइणि-वेयाल-मारि-आयंका । सिरिनीलकंठपासस्स, समरणमित्तेण नासंति | ॥१६॥ |

| पन्नासं गोपीडां कूरग्गह, तुह दंसणं भयं काये । आवि न हुँतिए तहवि, तिसंज्झं जं गुणिज्जासु | ાારુહાા |
|---|---------|
| पीडं जंतं भगंदरं खासं, सासं शूल तह निव्वाहं । सिरिसामलपासमहंत, नाम पऊरपऊलेण | ॥१८॥ |
| र्जं हीं श्रीं पासधरणसंजुत्तं, विसहरविज्जं जवेड् सुद्धमणेणं, पावड् | |
| इच्छियं सुहं हैं हीं श्रीं क्ष्म्ल्यूँ स्वाहा | ।११९॥ |
| र्जं रोग-जल-जलण विसहर, चोरारिमइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेणं, पसमंति सव्वाइं हीं स्वाहा | 117011 |
| र्जं जयउ धर्राणदनमंसिय, पउमावईपमुहनिसेवियपाया । र्जं क्लीं हीं महासिद्धि, करेड़ पास जगनाहो | ॥२१॥ |
| हैं हीं श्रीं तं नमह पासनाहं, हैं हीं श्रीं धर्राणदनमंसियं दुहविणासं, | |
| र्गै हीं श्री जस्स पभावेण सया, र्गै हीं श्री नासंति उवदवा बहवे | ॥२२॥ |
| उँ हीँ श्रीँ पइ समरंताण मणे, उँ हीँ श्रीँ न होइ वाही न तं महादुक्खं। | |
| व हीं श्रीं नामं पि हि मन्तसमं, | |
| र्जे हीं श्रीं पयडं नत्थीत्थ संदेहो ■ / ■ | ॥१३॥ |

वै हीं श्रीं जल जलण-भये, तह सण्य-सिंह,
वै हीं श्रीं चोर्गार संभवे खिण्यं।
वै हीं श्रीं जो समरेड़ पासपहुं,
वै श्रीं क्लीं पुहिव कायािव किं तस्स ॥२४॥
वै श्रीं क्लीं हीं इहलोगट्टी परलोगट्टी,
वै हीं श्रीं जो समरेड़ पासनाहं।
वै हाँ हीं हूँ हः ग्राँ ग्रीं ग्रूँ ग्रः तं तह सिज्झई खिण्यं ॥२५॥
इह नाह समरह भगवंत, वै हीं श्रीं क्लीं ग्राँ ग्रीं।
ग्रूँ ग्रः क्लीं क्लीं श्री किलकुण्डस्वामिने नमः ॥२६॥
इअ संथुओ महायस, भित्तक्भरनिक्भरेण हियएण,
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद

ભગવાન મહાવીર સ્વામી આહાર-પાણીની માત્રાને જાણવા છતાં. રસોમાં આસક્ત ન હતા. કોઈ ચોક્કસ દ્રવ્યની પ્રતિજ્ઞા પણ કરતા ન હતા. આંખમાં રજકણ પડે તો પણ તેનું પમાર્જન ન કરતા. તેમજ કાષ્ટ વગેરેથી શરીરની ખંજવાળ પણ દૂર કરતા ન હતા.

॥ श्री चिंतामणिपार्श्वनाथ स्तोत्र ॥

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं, किं चन्द्ररोचिर्मयम् । किं लावण्यमयं महामणिमयं, कारुण्यकेलिमयम् । विश्वानंदमयं महोदयमयं, शोभामयं चिन्मयम् । शुक्लध्यानमयं वपुजिनपते-भुंयाद्भवालम्बनम्

11811

पातालं कलयन् धरां धवलयन्, नाकाशमापूरयन्, दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणि च विस्मापयन् । ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधे:, फेणच्छलालोलयन् । श्रीचिंतामणिपार्श्वसंभवयशो, हंसश्चिरं राजते

11711

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः, कामेभकुम्भशृणिः, मोक्षेनिस्सरणिः सुरेन्द्रकरणी, ज्योतिः प्रभासारणिः । दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी, विश्वानंदसुधाघृणिर्भवभिदे, श्रीपार्श्वचिन्तामणिः

11311

श्रीचिंतामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनस्त्वं मया, दृष्टस्तात ! ततः श्रियः समभवन् नाशक्रमाचिक्रणम् मुक्तिः क्रीडित हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितम्, दुर्दैवं दुरितं च दुर्गतिभयं, कष्टं प्रणष्टं मम

11811

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः, प्रोद्दामधामा जग-ज्जंघालः कलिकालकेलिदलनो, मोहान्धविध्वंसकः । नित्योद्द्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते, स श्रीपार्श्वजिनो जने 'हितकृतो चिंतामणिः पातु मां

11411

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरिणर्बालोऽपि कल्पांकुशो, दारिद्र्याणि गजाविलं हरिशिशुः काष्टानि वहेः कणः । पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत् तथा ते विभो, मृतिः स्फृतिमती सती त्रिजगित कष्टानि हर्तुं क्षमः

॥६॥

श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं, ह्रींकारसारिश्रतम्, श्रीमर्हं निमऊणपासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम्, द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयः प्रभावाश्रयम्, सोल्लासं वसहांकितं जिनफुलिंगानंदनं देहिनाम्

11911

हीं श्रीं कारवरं नमोऽक्षरपरं, ध्यायन्ति ये योगिनो, हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमिधपं, चिंतामणीसंज्ञकम् । भाले वामभुजे च नाभिकरयो-भूयो भुजे दक्षिणे, पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैभवैर्यान्त्यहो (भान्त्यहो)

112.11

१. कृतहित, हितकर: इति ।

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचाराः, नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदिरते, दुष्टदारिद्रचता नो । नो शाकिन्यो ग्रहा नो हरिकरिगणा, व्यालवैतालजाला, जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः, प्राणिनां भक्तिभाजाम्

11911

गीर्वाणद्रुमधेनुकुंभमणयस्तस्यांऽगणे रंगिणो, देवा दानवमानवा सिवनयं, तस्मै हितध्यायिनः । लक्ष्मीस्तस्य वशावशैव गुणीनां, ब्रह्माण्डसंस्थायिनी, श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं, संस्तौति यो ध्यायते

118011

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः, प्रदिलतदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः । त्रिभुवनजनवाञ्छा दानचितामणीकः, शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु

118811

मायन्ने असण्णपाणस्स,
णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णो ।
अच्छि वि णो पमज्जिज्जा,
णो विय कंडूयए मुणी गायं ॥

॥ श्री मंत्राधिराज पार्श्वनाथ स्तोत्र ॥

श्री पार्श्वः पात् वो नित्यं, जिनः परमशद्भरः । नाथ: परमशक्तिश्च, शरण्य: सर्वकामद: 11811 मर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः । मर्वसत्त्वहितो योगी. श्रीकर: परमार्थद: 11511 देवदेव: स्वयंसिद्धश्चिदानन्दमय: शिव: । परमात्मा परब्रह्म. परमः परमेश्वरः 11311 जगनाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः । सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभाणवः 11811 सर्वज्ञः सर्वदेवेशः. सर्वदः सर्वगोत्तमः । सर्वात्मा सर्वदर्शी च. सर्वव्यापी जगदगरुः 11411 तत्त्वमृतिः परादित्यः परब्रह्मप्रकाशकः । परमेन्द्रः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः 11811 अजः सनातनः शम्भ्रीश्वरश्च सदाशिवः । विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः 11911 साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः । निर्ममो निर्विकारश्च. निर्विकल्पो निरामयः 11211

| अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनेकः शिवात्मकः । अलक्ष्यश्चाऽप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः | 11911 |
|---|---------|
| र्जं काराकृतिख्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः । | - |
| ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः । | ॥१०॥ |
| आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् | ॥११॥ |
| शुद्धस्फटिकसङ्काशः, स्वयम्भूः, परमाच्युतः । व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः | ॥१२॥ |
| ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः । मनः साध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः | ॥१३॥ |
| सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः । भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः | ાાશ્કાા |
| इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः । दिव्यमष्टोत्तरं नाम, शतमत्र प्रकीर्तितम् | ॥१५॥ |
| पिवत्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् । भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठतां मङ्गलप्रदम् | ॥१६॥ |
| श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेयसेऽस्तु वः । पार्श्वनाथजिनः श्रीमान् भगवान् परमः शिवः | ાાશ્કાા |
| | |

| धरणेन्द्रफणच्छत्रालङ्कृतो वः श्रियं प्रभुः । दद्यात् पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः | ॥१८॥ |
|--|---------|
| ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वजगदीश्वरम् । व हीं श्रीं अर्हं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥१९॥ | |
| पद्मावत्याऽन्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे । परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् | गरना |
| अष्टपत्रस्थितैः पञ्चनमस्कारैस्तथा त्रिभिः । ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् | ાારશા |
| सत्बोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् । चतुर्विशतिपत्रस्थं, जिनमातृसमावृतम् | ાારમા |
| मायावेष्ट्यत्रयाग्रस्थं, ऋौंकारसिहतं प्रभुम् । नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् | 118311 |
| चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यैश्चतुर्बीजान्वितैर्जिनैः । चतुग्रुदशद्वीति द्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् | ાાકકાા |
| दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाङ्कितेन च । चतुरस्त्रेण वज्राङ्कक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् | ાારુધાા |
| श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् । तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा | ॥२६॥ |

| जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा । ध्यातस्त्वं यैः क्षणं वापि सिद्धिस्तेषां महोदया | ॥२७॥ |
|---|--------|
| श्रीपार्श्वमन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् । शान्तिपृष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् | ॥२८॥ |
| ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् । मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः सर्वकल्याणपूर्णः स्याज्जरामृत्युविवर्जितः । | ॥२९॥ |
| अणिमादिमहासिद्धि, लक्षजापेन चाप्नुयात् प्राणायाममनोमन्त्रयोगादमृतमात्मनि । | ॥३०॥ |
| त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् ! सिध्यन्ति जन्तवः हर्षदः कामदश्चेति, रिपुष्टाः सर्वसौख्यदः । | 113811 |
| पातु वः परमानन्दलक्षणः संस्मृतो जिनः तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम् । | 113211 |
| त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् | 115311 |

भगवतो हि गृहस्थभावेऽपि रसेषु गृद्धिर्नासीत् किं पुनः प्रव्रजितस्य ? तथा रसेष्वेव ग्रहणं प्रति अप्रतिज्ञः ।

॥ श्री जीरावला पार्श्वनाथ स्तोत्र ॥

| र्वं नमो देवदेवाय, नित्यं भगवतेऽर्हते । श्रीमते पार्श्वनाथाय, सर्वकल्याणकारिणे | ॥१॥ |
|---|--------|
| हीं रूपाय धरणेन्द्र पद्मावर्त्याचितांघ्रये । शुद्धातिशयकोटिभिः, सहिताय महात्मने | 11711 |
| अट्टे मट्टे पुरोदृष्टे, विघट्टे वर्णपंक्तिवत् । दुष्टान् प्रेत-पिशाचादीन्, प्रणाशयति तेऽभिधा | II ÇII |
| स्तंभय स्तंभय स्वाहा, शतकोटि नमस्कृतः । अधमत् कर्मणां दुरादापतन्तीं विडम्बनां आपतन्तीर्विडम्बनाः | 11811 |
| नाभिदेशोद्भवन्नाले, ब्रह्मरन्थ्रप्रतिष्ठिते । ध्यातमष्ट्रदले पद्मे, तत्त्वमेतत् फलप्रदं | ાષા |
| तत्त्वमत्र चतुवर्णी, चतुर्वर्णविमिश्रिता । पंचवर्ण-ऋम-ध्याता, सर्वकार्यकरी भवेत् | ાદા |
| क्षि-प-र्जं स्वाहेतिवर्णैः, कृतपंचांगरक्षणः । योऽभिध्यायेदिदं तत्त्वं वश्यास्तस्याखिलश्रियः | 11/911 |
| पुरुषं बाधते बाढं, तावत्क्लेशपरंपरा । यावन्न मंत्रराजोऽयं, हृदि जागर्ति मूर्तिमान् | 11811 |

| व्याधि-बंध-वध-व्याला-ऽनलाऽम्भसम्भवः भयः । क्षयं प्रयाति श्रीपार्श्वनामस्मरणमात्रतः | ॥९॥ |
|--|-------|
| यथा नादमयो योगी, तथा चेत्तन्मयो भवेत् । तथा न दुष्करं किञ्चित्, कथ्यतेऽनुभवादीदम् | ।१०॥ |
| इति श्रीजीरिकापल्ली-स्वामि पार्श्वजिनः स्तुतः । श्रीमेरुतुंगसूरेस्तात् सर्वसिद्धिप्रदायकः | ॥११॥ |
| 'श्री' जीरावल्ली प्रभुपार्श्वं, पार्श्वयक्षेण सेवितम् । अर्चितं धरणेन्द्रेण, पद्मावत्या प्रपूजितं | ાારમા |
| सर्वमंत्रमयं सर्वकार्यसिद्धिकरं परम् । ध्यायामि हृदयांभोजे, भूतप्रेतप्रणाशकम् | ॥१३॥ |
| श्रीमेरुतुंगसूरीन्द्रः, श्रीमत्पार्श्वप्रभोः पुरः । ध्यानस्थितं हृदि ध्यायन्, सर्वसिद्धिं लभेत् धुवम् | ાકશા |

પ્રભુ મહાવીર! આપ એક તરફ અતુલ બલી છો તો બીજી તરફ શરીર પ્રત્યે સર્વથા અનાસક્ત છો. કેવું આશ્ચર્ય ?

महामंत्रगर्भित श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथस्तोत्र

श्रीमद् देवेन्द्रवृन्दाऽमलमुकुटमणिज्योतिषां चक्रवालै-व्यालीढं पादपीठं शठकमठकृतोपद्रवाऽबाधितस्य । लोकालोकावभासिस्फुरदुरुविमलज्ञानसद्दीप्रदीपः, प्रध्वस्तध्वान्तजालः स वितरत् सुखं पार्श्वनाथोऽत्र नित्यम् 11811 हाँ हीं हैं हौं विभास्वन्मरकतमणिभा कांतमुर्ते हि बं मो हँ सँ तँ बीजमन्त्रैः कृतसकलजगत्क्षेमरक्षोरुवक्षाः । क्षाँ क्षीँ क्षँ क्षौँ समस्तक्षितितलमहित ! ज्योतिरुद्योतिताशः, हीं कारे रेफय्क्तं ररररर र रांदेव! संसंसंयुक्तं हीं क्लीं ब्लूँ द्राँ समेतं वियदमलकलाऋौं ऋकोद्धासि हुँ हूँ 11211 धं धं ध्रमवर्णेरिखलिमहजगन्मे विधेयानुकृष्णं, वौषड्मन्त्रं पठन्तस्त्रिजगद्धिपते ! पार्श्व मां रक्ष नित्यम् 11311 आँ कौँ हीं सर्ववश्यं कुरु कुरु सरसं कार्मणं तिष्ठ तिष्ठ, क्षं क्षं हं रक्ष रक्ष प्रबल-बल-महाभैरवारातिभीते: । द्रां द्रीं द्रूँ द्रावयन्ति द्रव हन हन तं फट् वषट् बन्ध बन्ध, स्वाहा मंत्रं पठन्तस्त्रिजगद्धिपते ! पार्श्व मां रक्ष नित्यम् 11811 हँ हँ झाँ झाँ क्ष हंसः कुवलयकलितैरंचितांग ! प्रमत्ते झाँ झाँ हं यक्ष हंसं हर हर हर हूँ पक्षि व: सत्क्षिकोपं वं झं हं सः सहंसः वस सर सरसं सः सुधाबीजमंत्रै-स्त्रायस्व स्थावरादेः प्रबलविषम्खहारिभिः पार्श्वनाथ ! ।।५॥ क्ष्माँ क्ष्मीँ क्ष्मेँ क्ष्में क्ष्मरेतैरहपति-वितनुर्मंत्रबीजैश्च नित्यं हाहाकारोग्रनादैर्ज्जलदनलिशखाकल्पदीर्घोर्ध्वकेशः । पिंगाक्षेलीलिजहवैर्विषमविषधरालंकृतैस्तीक्ष्णदण्डै-भूतैः प्रेतैः पिशाचैर्धनदकृतमहोपद्रवाद् रक्ष रक्ष

॥६॥

झीं झों झः शाकिनीनां सपदहरसदं भिन्धि शुद्धेद्धबुद्धेग्लों क्ष्मं ठँ दिव्य-जिह्वा गित-मित-कुपितः स्तंभनं संविधेहि ।
फट्फट् सर्वाधिरोगग्रहमरणभयोच्चाटनं चैव पार्श्व ! ।
त्रायस्वाशेषदोषादमरनरवरैमींर्तिपादारिवन्दः

11911

इत्थं मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यं विद्वेषोच्चाटनं स्तंभन(वन१) जयवशं पापरोगापनोदैः । प्रोत्सर्पज्जंगमादिस्थविरविषमुखध्वसनं स्थायु दीर्घ-मारोग्यैश्वर्ययुक्ता भवति पठति यः स्तौति तस्येष्टसिद्धिः

11211

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तुति ॥

कल्याणकेलिकमला कमलायमानम् प्रोद्दामधाममहिमा महिमानिधानम् । जात्यश्मगर्भमणिमेचककान्तिदेहं श्रीस्तंभनाधिपति पार्श्वजिनं स्तुवेऽहम् ॥



॥ श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिविरचित शक्रस्तव ॥

उँ नमोऽर्हते भगवते परमात्मने परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने, परमवेधसे, परमयोगिने परमेश्वराय तमसः परस्तात् सदोदिता-दित्यवर्णाय, समूलोन्मूलितानादिसकलक्लेशाय ॥१॥

मं नमोऽर्हते भूर्भुर्वः स्वस्त्रयीनाथमौलिमन्दारमालाचितक्रमाय, सकलपुरुषार्थयोनिनिरवद्यविद्याप्रवर्त्तनैकवीराय, नमः स्वस्तिस्वधा-स्वाहावषडर्थेकान्तशान्तमूर्त्तये, भवद्भाविभूतभावावभासिने, काल-पाशनाशिने, सत्त्वरजस्तमोगुणातीताय, अनन्तगुणाय, वाङ्मनो-ऽगोचरचित्राय, पवित्राय, करणकारणाय तरणतारणाय, सात्त्वक-देवताय, तात्त्वकजीविताय, निर्ग्रन्थपरमब्रह्महृदयाय योगीन्द्रप्राण-नाथाय, त्रिभुवनभव्यकुलनित्योत्सवाय, विज्ञानानन्दपरब्रह्मैकात्म्य-सात्म्यसमाधये, हिरह्रिरण्यगर्भादिदेवतापरिकलितसम्यग्स्वरूपाय, सम्यक्श्रद्धेयाय, सम्यग्ध्येयाय, सम्यग्शरण्याय, सुसमाहित सम्यक्-स्मृहणीयाय ॥२॥

उँ नमोऽर्हते भगवते आदिकराय, तीर्थकराय स्वयंसम्बुद्धाय, पुरुषोत्तमाय, पुरुषसिंहाय, पुरुषवरपुण्डरीकाय, पुरुषवरगन्धहस्तिने, लोकोत्तमाय, लोकनाथाय, लोकहिताय, लोकप्रदीपाय, लोक-प्रद्योतकारिणे, अभयदाय दृष्टिदाय, मुक्तिदाय, मार्गदाय, बोधिदाय, जीवदाय, शरणदाय, धर्मदाय, धर्मदेशकाय, धर्मनायकाय, धर्म-सारथये, धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिने, व्यावृत्तच्छदाने, अप्रतिहत-

सम्यग्ज्ञानदर्शनसदाने ॥३॥

उँ नमोऽर्हते जिनाय जापकाय, तीर्णाय तारकाय, बुद्धाय बोधकाय, मुक्ताय मोचकाय, त्रिकालिवदे, पारङ्गताय, कर्माष्टक-निषूदनाय, अधीश्वराय, सम्भवे, जगत्प्रभवे, स्वयम्भुवे जिनेश्वराय, स्याद्वादवादिने, सार्वाय, सर्वज्ञाय, सर्वदर्शिने, सर्वतीर्थोपनिषदे, सर्वपाखण्डमोचिने, सर्वयज्ञफलात्मने, सर्वज्ञकलात्मने, सर्वयोग-रहस्याय, केवलिने, देवाधिदेवाय, वीतरागाय ॥४॥

उँ नमोऽर्हते परमात्मने, परमाप्ताय, परमकारुणिकाय, सुगताय, तथागताय, महाहंसाय, हंसराजाय, महासत्त्वाय, महाशिवाय, महाबोधाय, महामैत्राय, सुनिश्चिताय, विगतद्वन्द्वाय, गुणाब्धये, लोकनाथाय, जितमारबलाय ॥५॥

वं नमोऽर्हते सनातनाय, उत्तमश्लोकाय, मुकुन्दाय, गोविन्दाय, विष्णावे, जिष्णावे, अनन्ताय, अच्युताय, श्रीपतये, विश्वरूपाय, हृषीकेशाय, जगन्नाथाय, भूर्भूव:स्व:समुत्ताराय, मानंजराय, कालंजराय, ध्रुवाय, अजाय, अजेयाय, अजराय, अचलाय, अव्ययाय, विभवे, अचिन्त्याय, असंख्येयाय, आदिसंख्याय, आदिकेशवाय, आदिशिवाय महाब्रह्मणे परमशिवाय, एकानेकानन्तस्वरूपिणे, भावाभावविवर्जिताय, अस्तिनास्तिद्वयातीताय, पुण्यपापविरिहताय, सुखदु:ख विविक्ताय, व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय, अनादि-मध्यनिधानाय, नमोस्तु मृक्तीश्वराय मृक्तिस्वरूपाय ॥६॥

उँ नमोऽर्हते निरातङ्काय, निःसङ्गाय, निःशङ्काय, निर्मलाय, निर्भयाय, निर्द्वन्द्वाय, निस्तरङ्गाय, निर्रूपये, निरामयाय, निष्कलङ्काय, परमदैवताय, सदाशिवाय, महादेवाय, शङ्कराय, महेश्वराय, महाव्रतिने, महायोगिने, महात्मने, पञ्चमुखाय, मृत्युञ्जयाय, अष्टमूर्तये, भूतनाथाय, जगदानन्दाय, जगत्पितामहाय, जगदेवाधिदेवाय, जगदीश्वराय, जगदादिकन्दाय, जगद्भास्वते, जगत्कर्मसाक्षिणे, जगच्चक्षुषे, त्रयीतनवे, अमृतकराय, शीतकराय, ज्योतिश्चक्रचिक्रणे, महा-ज्योतिर्द्योतिताय, महातमः (पः) पारे सुप्रतिष्ठिताय, स्वयंकर्त्रे, स्वयंद्वर्त्रे, स्वयंपालकाय, आत्मेश्वराय, नमो विश्वात्मने ॥७॥

उँ नमोऽर्हते, सर्वदेवमयाय, सर्वध्यानमयाय सर्वज्ञानमयाय, सर्वतेजोमयाय, सर्वमंत्रमयाय सर्वरहस्यमयाय, सर्वभावाभाव-जीवाजीवेश्वराय, अरहस्यरहस्याय, अस्पृहस्पृहणीयाय, अचिन्त्यचिन्त-नीयाय, अकामकामधेनवे, असङ्कल्पितकल्पद्रुमाय, अचिन्त्यचिन्ता-मणये, चतुर्दशरज्ज्वात्मकजीवलोकचूडामणये, चतुरशीतिलक्ष-जीवयोनिप्राणिनाथाय, पुरुषार्थनाथाय, परमार्थनाथाय, अनाथनाथाय, जीवनाथाय, देवदानवमानवसिद्धसेनाधिनाथाय ॥८॥

उँ नमोऽर्हते निरञ्जनाय, अनन्तकल्याणनिकेतनकीर्तनाय, सुगृहीतनामधेयाय (महिमामयाय) धीरोदात्तधीरोद्धत धीरशान्तधीर-लिलतपुरुषोत्तमपुण्यश्लोकशतसहस्रलक्षकोटिवन्दित, पादारविन्दाय सर्वगताय ॥९॥

👸 नमोऽर्हते सर्वसमर्थाय, सर्वप्रदाय, सर्वहिताय, सर्वाधि-

नाथाय, कस्मैश्चन क्षेत्राय, पात्राय, तीर्थाय, पावनाय, पवित्राय, अनुत्तराय, उत्तराय, योगाचार्याय, संप्रक्षालनाय, प्रवराय, आग्रेयाय, वाचस्पतये, माङ्गल्याय, सर्वात्मनीनाय, सर्वार्थाय, अमृताय, सदो-दितायं, ब्रह्मचारिणे, तायिने, दक्षिणीयाय, निर्विकाराय, वजर्षभ-नाराचमूर्त्तये, तत्त्वदर्शिने, पारदर्शिने, परमदर्शिने, निरुपमज्ञान-बलवीर्यतेजःशक्त्यैश्वर्यमयाय, आदिपुरुषाय, आदिपरमेष्ठिने, आदि-महेशाय, महाज्योति:-स(स्त)त्त्वाय महाचिदानेश्वराय महामोहसंहारिणे, महासत्त्वाय, महाज्ञामहेन्द्राय, महालयाय, महाशान्ताय, महायोगीन्द्राय, अयोगिने, महामहीयसे, महाहंसाय, हंसराजाय, महासिद्धाय, शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्ति महानन्दं, महोदयं, सर्वदुःखक्षयं कैवल्यं, अमृतं निर्वाणमक्षरं, परमब्रह्मनिश्रेयसमपुनर्भवं, सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तवते, चराचरमवते, नमोऽस्तु श्रीमहा-वीराय, त्रिजगत् स्वामिने श्रीवर्धमानाय ॥१०॥

उँ नमोऽर्हते, केवलिने, परमयोगिने भक्तिमार्गयोगिने, विशाल-शासनाय, सर्वलब्धिसम्पन्नाय, निर्विकल्पाय, कल्पनातीताय, कलाकलाप-कलिताय, विस्फुरदुरुशुक्लध्यानागिनिर्दिग्धकर्मबीजाय, प्राप्तानन्तचतुष्ट्रयाय, सौम्याय, शान्ताय, मङ्गलवरदाय, अष्टादश-दोषरिहताय, संसृतविश्वसमीहिताय स्वाहा ॥११॥

र्जं हीं श्रीं अर्हं नमः नो १०८ वार जाप करवो लोकोत्तमो निष्प्रतिमस्त्वमेव, त्वं शाश्वतं मङ्गलमप्यधीश । त्वामेकमर्हन् ! शरणं प्रपद्ये, सिद्धर्षिसद्धर्ममयस्त्वमेव ॥१॥ त्वं मे माता पिता नेता, देवो धर्मो गुरु: पर: ।
प्राणो: स्वर्गोऽपवर्गश्च, सत्त्वं तत्त्वं गतिर्मितः ॥२॥
जिनो दाता जिनो भोक्ता, जिनः सर्वमिदं जगत् ।
जिनो जयित सर्वत्र, यो जिनः सोऽहमेव च ॥३॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव ! सदा सुकृतदुष्कृतम् ।
तन्मे निजपदस्थस्य हुं, क्षः क्षपय त्वं जिन ! ॥४॥
गुद्यातिगुद्यगोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिः श्रयित मां येन, त्वत्प्रसादात्त्विय स्थितम् ॥५॥
इति श्री वर्धमानजिननाममंत्रस्तोत्रं
प्रतिष्ठायां शान्तिकविधौ पठितं महासुखाय स्थात् ॥

- १. इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवं एकादशमंत्रराजोपनिषद्गर्भं अष्ट-महासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं, सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं, सर्वगुणाकरं, महाप्रभावं, अनेकसम्यग्दृष्टिभद्रकदेवताशत-सहस्रशुश्रूषितं, भवांतरकृतासंख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां, पठतां, श्रुण्वतां, गुणयतां, समनुप्रेक्षमाणानां भव्य जीवानां चराचरेऽपि विश्वे सद्वस्तु तन्नास्ति यत् करतल प्रणयि न भवतीति । किञ्च....
- इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवमेकादश मन्त्रराजोपनिषद्गर्भं... इत्यादि यावत् सम्यग्समनुप्रेक्षमाणानां भव्यजीवानां भवनपतिव्यंतर-ज्योतिष्कवैमानिकवासिनो देवा सदा प्रसीदन्ति । व्याथयो विलीयन्ते ।
- ३. इतीमं० भव्यजीवानां पृथिव्यप्तेजोवायुगगनानि भवन्यनुकूलानि ।

- ४. इतीमं० भव्यजीवानां सर्वसंपदां मूलं जायते जिनानुरागः।
- ५. इतीमं० भव्यजीवानां साधवः सौमनस्येनानुग्रहपरा जायन्ते।
- ६. इतीमं० भव्यजीवानां खलाः क्षीयन्ते ।
- ७. इतीमं० भव्यजीवानां जलस्थलगगनचराः क्रूरजन्तवोपि मैत्रीमया जायन्ते ।
- ८. इतीमं० भव्यजीवानां अधमवस्तुन्यप्युत्तमवस्तुभावं प्रतिपद्यन्ते ।
- ९. इतीमं० भव्यजीवानां धर्मार्थकामगुणा अभिरामा जायन्ते ।
- १०. इतीमं० भव्यजीवानां ऐहिक्यः सर्वा अपि शुद्धगोत्रकलत्र-पुत्रमित्रधनधान्यजीवितयौवनरुपारोग्ययशःपुरःसराः सर्वजनानां संपदः परभागजीवितशालिन्यः सदुदर्काः सुसंमुखीभवन्ति ॥ किं बहुना ?
- ११. इतीमं० भव्यजीवानां आमुष्मिक्यः सर्वमहिमास्वर्गापवर्गश्रियोऽपि ऋमेण यथेच्छं(ष्टं) स्वयं स्वयंवरणोत्सवसमृत्सुका भवन्तीति

सिद्धः (द्धिः) श्रेयः समुदयः (समुदायः) यथेन्द्रेण प्रसन्नेन समादिष्टोऽर्हतां स्तवः

तथायं सिद्धसेनेन लिलिखे (प्रपेदे) संपदां पदम् ॥

પ્રમાદ શું છે ?

- ightarrow આત્માનું વિસ્મરણ ightarrow જિનાજ્ઞા ભંગ
- \rightarrow વિષય-કષાયાધીનતા \rightarrow અસંયમ
- → દોષો પ્રતિ પક્ષપાત.

चिरंतनाचार्यकृतश्रीपञ्चसूत्रे

॥ प्रथमं पावपडिग्घाय गुणबीजाहाणसूत्तं ॥

णमो वीयरागाणं, सळणणूणं देविंदपूइआणं जहिंदुअवत्थुवाईणं, तेलुक्कगुरूणं, अरुहंताणं भगवंताणं, जे एवमाइक्खंति - इह खलु अणाई जीवे, अणाई जीवस्स भवे, अणाईकम्मसंजोगनिळ्तिए, दुक्खरुवे, दुक्खफले, दुक्खाणुबंधे एअस्स णं वोच्छित्ती सुद्ध-धम्माओ, सुद्धधम्मसंपत्ती पावकम्मविगमाओ, पावकम्मविगमो तहाभळ्वताइभावाओ ।

तस्स पुण विवागसाहणाणि चउसरणगमणं दुक्कडगरिहा सुकडासेवणं अओ कायव्वमिणं होउकामेणं सया सुप्पणिहाणं भुज्जो भुज्जो संकिलेसे तिकालमसंकिलेसे । जावज्जीवं मे भगवंतो परमितलोगनाहा अणुत्तरपुन्नसंभारा खीणरागदोसमोहा अचिंतचिंता-मणी भवजलिहणोया एगंतसरण्णा अरहंता सरणं ।

तहा पहीणजरामरणा अवेअकम्मकलंका पणद्ववाबाहा केवल-नाणदंसणा सिद्धिपुरनिवासी निरुवमसुहसंगया सव्वहा कयकिच्चा सिद्धा सरणं ।

तहा पसंतगंभीरासया सावज्जजोगविरया पंचविहायारजाणगा, परोवयारिनरया पउमाइनिदंसणा, झाणज्झयणसंगया, विसुज्झमाण-भावा साहू सरणं।

तहा सुरासुरमणुअपूड्ओ मोहितिमिरंसुमाली रागद्दोसिवसपरममंतो, हेऊ सयलकल्लाणाणं, कम्मवणिवहावस् साहगो सिद्धभावस्स, केवलिपन्नत्तो धम्मो जावज्जीवं मे भगवं सरणं ।

सरणम्वगओ य एएसिं गरिहामि दुक्कडं, जं णं अरहंतेसु वा, सिद्धेस् वा, आयरिएस् वा, उवज्झाएस् वा, साहुस् वा, साहुणीसु वा, अनेस् वा धम्मद्राणेस् माणणिज्जेस् प्अणिज्जेस्, तहा माईस् वा, पिईस् वा, बंधुस् वा, मित्तेस् वा उवयारिस् वा, ओहेण वा जीवेस्, मग्गद्विएसु वा अमग्गद्विएसु वा, मग्गसाहणेसु वा, अमग्गसाहणेसु वा, जंकिचि वितहमायरियं, अणायरिअव्वं अणिच्छिअव्वं, पावं पावाणुबंधि, सुहुमं वा, बायरं वा, मणेण वा, वायेण वा, कायेण वा, कयं वा, कारियं वा, अणुमोइयं वा, रागेण वा दोसेण वा, मोहेण वा, एत्थ वा जम्मे जम्मंतरेस् वा, गरहिअमेअं दुक्कडमेअं उज्झियव्वमेअं विआणिअं मए कल्लाणमित्तगुरुभगवंतवयणाओ, एवमेअं ति रोईअं सद्धाए, अरिहंतसिद्धसमक्खं गरिहामि अहमिणं 'दुक्कडमेअं उज्झि-यव्यमेअं' एत्थ मिच्छा मि दुक्कडं, मिच्छा मि दुक्कडं, मिच्छा मि दुक्कडं।

होउ मे एसा सम्मं गरहा, होउ मे अकरणनियमो बहुमयं ममेअं ति। इच्छामो अणुसर्द्वि अरहंताणं भगवताणं गुरुणं कल्लाणमित्ताणं ति ।

होउ मे एएहिं संजोगो, होउ मे एसा सुपत्थणा, होउ मे इत्थ बहुमाणो होउ मे इओ मोक्खबीअं । पत्तेसु एएसु अहं सेवारिहे सिआ, आणारिहे सिया पडिवत्तिजुत्ते सिआ, निर्स्आरपारगे सिआ।

संविग्गो जहासत्तीए सेवेमि सुकडं, अणुमोएमि सब्वेसि अरहंताणं अणुद्राणं, सव्वेसिं सिद्धाणं सिद्धभावं, सव्वेसिं आयरियाणं आयारं, सव्वेसिं उवज्झायाणं सूत्तप्ययाणं, सव्वेसिं साहणं साहिकिरियं, सव्वेसि सावगाणं मोक्खसाहणजोगे एवं सव्वेसि देवाणं, सव्वेसि जीवाणं होउकामाणं, कल्लाणाऽऽसयाणं, मग्गसाहणजोगे ।

होउ मे एसा अणुमोयणा सम्मं विहिपुव्विआ सम्मं सुद्धासया, सम्मं पडिवित्तारूवा, सम्मं निख्यारा, परमगुणजुत्तअरहंतादिसामत्थओ अचितसत्तिजुत्ता हि ते भगवंतो वीअरागा सव्वण्णु परमकल्लाणा, परमकल्लाणहेऊ सत्ताणं।

मूढे अम्हि पावे अणाइमोहवासिए, अणिभने भावओ हिआहि-आणं अभिने सिआ, अहिअनिवित्ते सिआ, हिअपवित्ते सिआ। आगहगे सिआ, उचिअपडिवत्तिए सव्वसत्ताणं सहिअं ति इच्छामि सुककं, इच्छामि सुककं, इच्छामि सुककं।

एवमेअं सम्मं पढमाणस्स सुणमाणस्स, अणुप्येहमाणस्स, सिढीली-भवंति परिहायंति, खिज्जंति असुहकम्माणुबंधा निरणुबंधे वा असुहकम्मे भग्गसामत्थे, सुहपरिणामेणं कडगबद्धे विअ विसे अप्पफले सिआ, सुहावणिज्जे सिआ, अपुणभावे सिआ।

तहा आसगिलजंति, परिपोसिज्जंति, निम्मविज्जंति सुह-कम्माणुबंधा, साणुबंधं च सुहकम्मं पिगिट्ठं पिगट्ठभाविज्जयं नियमफलयं। सुपउत्ते विअ महागए सुहफले सिया सुहपवत्तगे सिआ परमसुहसाहगे सिआ। अओ अपडिबंधमेअं असुहभाविनरोहेणं सुहभावबीअं ति, सुप्पणिहाणं सम्मं पिट्ठअव्वं सम्मं सोअव्वं सम्मं अणुप्पेहिअव्वं ति। नमो नियनिमआणं परमगुरुवीअरागाणं, नमो सेसनमुक्कागरिहाणं जयउ सव्वण्णुसासणं परमसंबोहिए सुहिणो भवंतु जीवा, सुहिणो भवंतु जीवा।

मुनिनाम् अप्रमादयन्त्रम्-[उपमिति]

यावज्जीवमेते नाचरन्ति तनीयसीमपि परपीडां, न भाषन्ते स्क्ष्ममप्यलीकवचनं, न गृह्णन्ति दन्तशोधनमात्रमप्यदत्तं, धारयन्ति नवगुप्तिसनाथं ब्रह्मचर्यं, वर्जयन्ति निःशोषतया परिग्रहं, न विद्धते धर्मो पकरणशरीरयोरिप ममत्वबृद्धि, नासेवन्ते रजन्यां चतुर्भेद-मप्याहारजातं, आददते प्रवचनोपवर्णितं समस्तोपधिविशृद्धं संयम-यात्रामात्रसिद्धये निरवद्यमाहारादिकं, वर्तन्ते समितिगुप्ति-परिप्रितेनाचरणेन, पराक्रमन्ते विविधाभिगृहकरणेन, परिहरन्ति अकल्याणमित्रयोगं, दर्शयन्ति सतामात्मभावं, न लङ्गयन्ति निजाम्चितस्थितिं, नापेक्षन्ते लोकमार्गं, मानयन्ति गुरुसंहतिं, चेष्टन्ते तत्तन्त्रतया, आकर्णयन्ति भगवदागमं भावयति महायलेन, अवलम्बते द्रव्यापदादिषु धैर्यं, पर्यालो चन्त्यागामिनमपायं, यतन्ते प्रति-क्षणमसपत्नयोगेषु, लक्षयन्ति चित्तविश्रोतसिकां, प्रतिविद्धते चानागतमेव तस्याः प्रतिविधानं, निर्मलयन्ति सततमसङ्गताभ्यासस्ततया मानसं, अभ्यस्यन्ति योगमार्गं, स्थापयन्ति चेतसि परमात्मानं, निबधनित तत्र धारणां, परित्यजन्ति बहिर्विक्षेपं, कुर्वन्ति तत्प्रत्यैक-तानमन्त:करणं, यतन्ते योगसिद्धौ आपूरयन्ति शुक्लध्यानं, पश्यन्ति देहेन्द्रियादि-विविक्तमात्मानं, लभन्ते परमसमाधि, शरीरिणोऽपि सन्तो मुक्ति-सुखभाजनम् इति ।

॥ श्री शत्रुञ्जय लघुकल्प ॥

| अइमुत्तय केवलिणा कहिअं सेत्तुंजतित्थमाहप्पं । | |
|--|--------|
| नारयरिसिस्स पुरओ, तं निसुणह भावओ भविआ | ।।१॥ |
| सेतुंजे पुंडरीओ सिद्धो, मुणिकोडिपंचसंजुत्तो । | |
| चित्तस्स पुण्णिमाए, सो भण्णइ तेण पुंडरीओ | 11711 |
| निम-विनमिरायाणो, सिद्धा कोडिहिं दोहिं साहूणं । | |
| तह दविडवारिखिल्ला, निव्वुआ दस य कोडीओ | 11\$11 |
| पज्जुन्न-संबपमुहा, अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ । | |
| तह पंडवा वि पंच य, सिद्धि गया नारयिसी य | 11811 |
| थावच्चासुय सेलगा य, मुणिणो वि तह राममुणी । | |
| भरहो दसरहपुत्तो, सिद्धा वंदामि सेत्तुंजे | ાષા |
| अने वि खवियमोहा, उसभाइ-विसाल-वंससंभूआ । | |
| जे सिद्धा सेत्तुंजे, तं नमह मुणी असंखिज्जा | ।।६॥ |
| पनासजोयणाइं, आसी सेत्तुंज-वित्थरो मूले । | |
| दस जोयण सिहस्तले, उच्चत्तं जोयणा अट्ट | 11911 |
| जं लहइ अन्न तित्थे, उग्गेण तवेण बंभचेरेण । | |
| तं लहुई पयत्तेणं, सेत्तुंजगिरिम्मि निवसंतो | 11311 |

| जं कोडिए पुण्णं, कामिय-आहारभोइया जे उ । तं लहइ तत्थ पुण्णं, एगोववासेण सेनुंजे | 11911 |
|--|---------|
| जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। | · |
| तं सळ्यमेव दिट्ठं, पुंडिंग्ए वंदिए संते पिंडलाभंते संघं, दिट्ठमिंदिंड्रे य साह सेत्तुंजे । | ॥१०॥ |
| कोडिगुणं च अदिट्ठे, दिट्ठे अ अणंतयं होइ | ॥११॥ |
| केवलनाणुप्पत्ती, निळ्वाणं आसी जत्थ साहूणं । पुंडिंग वंदित्ता, सळ्वे ते वंदिया तत्थ | ॥१२॥ |
| अट्ठावय सम्मेए, पावा चंपाइ उज्जंत नगे य । वंदित्ता पुण्णफलं, सयगुणं तं पि पुंडरीए | 118311 |
| पुआकरणे पुण्णं, एगगुणं सयगुणं च पडिमाए । जिणभवणेण सहस्संऽणंतगुणं पालणे होइ | 118.811 |
| पडिमं चेइहरं वा, सित्तुंजगिरिस्स मत्थए कुणइ । भुत्तूण भरहवासं, वसइ सग्गे निरुवसग्गे | ॥१५॥ |
| नवकार-पोरिसीए, पुरिमङ्के-गासणं च आयामं । पुंडरीयं च सरंतो, फलकंखी कुणइ अभत्तद्वं | ा१६॥ |
| छट्ठ-ट्टम-दसम-दुवालसाणं मास-ऽद्धमासखमणाणं । तिगरण सुद्धो लहइ, सित्तुंजं संभरतो अ | ાાશ્કા |

| छट्ठेणं भत्तेणं अपाणेणं तु सत्त जत्ताइं । जो कुणइ सेत्तुंजे, तइय भवे लहइ सो मुक्खं | ॥१८॥ |
|---|----------|
| अज्जिव दीसइ लोए, भत्तं चइऊण पुंडरीय नगे । सग्गे सुहेण वच्चइ, सीलविहूणो वि होउणं | ॥१९॥ |
| छत्तं झयं पडागं, चामर-भिगार-थालदाणेणं । विज्जाहरो अ हवइ, तह चक्की होइ रहदाणा | ॥२०॥ |
| दस वीस तीस चत्ता, लक्ख पन्नास पुष्फदामदाणेण । लहड् चउत्थ छट्ठऽट्टम-दसम दुवालस फलाइं | ॥२१॥ |
| धुवे पक्खुववासो, मासक्खमणं कपूरधुवम्मि । कित्तिय मासक्खमणं, साहू पडिलाभिए लहइ | ॥२२॥ |
| न वि तं सुवन्नभूमि-भूसणदाणेण अन्न तित्थेसु । जं पावइ पुण्णफलं, पूआ न्हवणेण सित्तुंजे | االإلااا |
| कंतार-चोर-सावय-समुद्द-दारिद्द-रोग-रिउ-रुद्दा । मुच्चंति अविग्घेणं, जे सेत्तुंजं धरन्ति मणे | ાારકાા |
| सारावली-पयन्नग-गाहाओ, सुअहरेण भणिआओ । जो पढइ गुणइ निसुणइ, सो लहइ सित्तुंजजत्तफलं | ાારુવા |



॥ वर्धमान विद्या स्तव ॥

| विलसंतजोईबीए, परिमट्ठिणं सरेमि पंचण्हं । सुह-तुट्टि-पुट्टि-संतिग,-आरुग्ग एए पए पयउ | ાણા |
|---|--------|
| केवलसिरितिलयाणं, अट्टमहापाडिहेरकलियाणं । तिहुयण-पणयाणं, नमो अरिहंताणं सयाकालं | 11711 |
| सिद्धिगईमुवगयाणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं । सासयरूवाणं नमो सिद्धाणमणंतसोक्खाणं | 11711 |
| जिणपहपयद्वियाणं पंचिवहायार-सार-चिरयाणं । पवयण-वसहाण णमो आयरियाणं सुहनिहीणं | 11811 |
| सययं नमो उवज्झायाणं, अणवरय-सुय-पयाणेणं । अणुग्गहिय-मुणिगणाणं, अहीण-वरनाण-जलहीणं | ાષા |
| निच्चं पि नमो लोए सव्वसाहूणमणहवित्तीणं । मुत्तिवहुसंगमुस्सुयमणसाण वि निरभिसंगाणं | 115 11 |
| तह ओहि-परमोहि-सव्वोहि-अणंतओहिजिणाणं च । सज्जोइ पयाण नमो जिणाण सव्वेसिमेएसिं | 11911 |
| तस्स य नमो भगवओ, महड़ महा सिद्धिणो कुणइ विज्जा । वीरे य सेणवीरे जयंति, अपराजिए सळे | 11211 |

जाणेसो पंचनमुक्कारो, निवसइ मणे महामंतो ।
ताण न पिसाय-साइणि-भूयाइ-भयाइं पहवंति ॥१॥
सुमिरय मित्तो वि इमो, तिलोयरक्खाविवक्खमणमहणो ।
रण-रायग-पासाइसु, विजयपडायं पयच्छेइ ॥१०॥
गुणिओ य सळ्वपावप्णासणो, तहय मंगलाणं च ।
सळ्वेसि पढमं हवइ मंगलं सुमइसूरिहं ॥११॥
इय वद्धमाणविज्जा चक्केसरपहुपसायसंपत्ता ।
पंच परिमट्ठणो मह लहु हवंतु सुलहा पइभवंमि ॥१२॥
(पंचपरिमट्ठिणो महसु सुलहा हवंतु पइभवंमि)

श्री धर्मचऋ विद्या

र्जं नमो भगवओ महई महावीखद्धमाण-सामिस्स जस्स वरधम्मचक्कं जलंतं गच्छेई आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जुए वा, रणे वा, रायगणे वा, वारणे बंधणे मोहणे थंभणे सव्वसत्ताणं अपराजिओ भवामि स्वाहा।

परमेष्ठी मंत्र

र्जं नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं हाँ हीँ हूँ हैँ हीँ हः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

वर्धमान विद्या (१)

महावीरे, जयवीरे सेणवीरे, वद्धमाणवीरे, जए विजए जयन्ते अपराजिते, सव्वट्ठसिद्धे निव्वुए महाणसे, महाबले स्वाहा ।

(?)

में हीं नमो अरिहंताणं, में हीं नमो सिद्धाणं में हीं नमो आयरियाणं, में हीं नमो उवज्झायाणं, में हीं नमो लोए सव्वसाहूणं में हीं नमो भगवओ अरिहंतस्स (अरहओ भगवओ) महई महावीरवद्धमाणसा-मिस्स सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविज्जा । मैं वीरे वीरे महावीरे, जयवीरे, सेणवीरे, वद्धमाणवीरे जए विजए जयंते अपराजिए अणिहए मैं हीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

महावीरस्तव

जइज्जा समणे भयवं महावीरे जिणुत्तमे ।
लोगणाहे सयंबुद्धे लोगंतिअविबोहिए ॥१॥
वच्छां दिण्णदाणोह-सपूरिअजणासए ।
नाणत्त्रयसमाउत्ते, पुत्ते सिद्धत्थरायणो ॥२॥

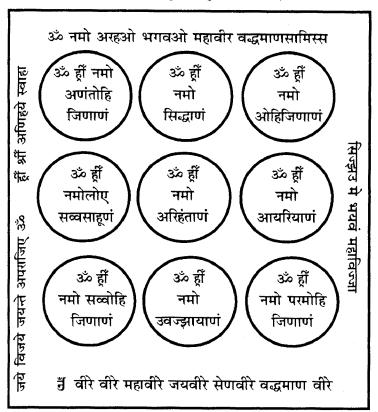
चिच्चा रज्जं च रहुं च पुरं अंतेउरं तहा । णिक्खिमत्ता अगाराओ पव्वइए अणगारियं

11311

| परिसहाणं णो भीए भेरवाणं खमाखमे । | |
|---|--------|
| पंचहा समिए गुत्ते बंभयारी अकिंचणे | 11811 |
| निम्ममे निरहंकारे अकोहे मायवज्जिए। | |
| अमाए लोभविमुक्के पसंते छिन्नबंधणे | ાષા |
| पुक्खरं व अलेवे य संखो इव निरंजणे । | |
| जीवे व्व अपडिग्घाए गयणं व निरासए | ાાફ ાા |
| वाउ इव अपडिबद्धे कुम्मे व गुत्तइंदिए । | |
| विष्पमुक्के विहंग व्व खिंगिसिंग व्व एगए | 11911 |
| भारंडे व्व अप्पमत्ते अ वसहे व्व जायथामए । | |
| कुंजरो व्व सोंडीरे सीहो व्व दुद्धरिस्सए | 11311 |
| सागरो इव गंभीरे चंदो व्व सोमलेस्सए । | |
| सूर व्व दित्ततेइल्ले हेमु व्व जायरूवए | 11811 |
| सव्वंसहे धरित्ति व्व सायरंबु व्व सच्छए । | |
| सुद्रुहुअहुआस व्व जलमाणे य तेजसा | ॥१०॥ |
| वासीचंदणकप्पे य समाणे लिट्टु-कंचणे । | |
| समे पूयावमाणेसु समे मुक्खे भवे तहा | ।।११॥ |
| नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेणमणुत्तरे । | |
| आलएणं विहारेणं मद्दवेणज्जवेण य | ॥१२॥ |
| लाघवेणं च खंतीए गुत्तो मुत्ती अणुत्तरे । | |
| संवरेणं तवेणं च संजमेणं अणुत्तरे | 118311 |

| अणेगगुणसमाइण्णे धम्मसुक्काण झायए । | |
|---|-------|
| घाइक्खएणं संजाए अणंतवरकेवली | ાાકશા |
| वीयरागे निग्गंथे सळाणा सळादंसणे । | |
| देविंददाणविंदेहिं निवत्तिअमहामहे | ॥१५॥ |
| सळ्यभासाणुगयाए भासाए सळ्यसंसए । | |
| जुगवं सळ्जीवाणं छिन्नियं भिन्नगोचरे | ॥१६॥ |
| हिए सुहे य निस्सेयकारए सव्वपाणिणं । | |
| महळ्याणि पंचेव पन्नवित्ता सभायणे | ॥१७॥ |
| संसारसायरंबुड्डजन्तु-संताण-तारए । | |
| जाणु व्व देसियं तित्थं संपत्ते पंचमं गयं | ॥१८॥ |
| से सिवे अयले निच्चे अरुवे अजरामरे । | |
| कम्मपवंचविमुक्के जए वीरे जए जिणे | ॥१९॥ |
| से जिणे वद्धमाणे य महावीरे महायसे । | |
| असंखदुक्खखिनाणं अम्हाणं देउ निव्वुइं | ॥२०॥ |
| इय परमपमोया संथुओ वीरणाहो, | |
| परमपसमदाणा देउ तुल्लत्तणं मे । | |
| असमदुह-सुहेसु सग्ग-सिद्धिभवेसु, | |
| कणयकचवरेसु सत्तुमित्तेसु वा वि | ॥२१॥ |
| पयडियवसइपहाणं सीसेणं जिणेसराणं सुगुरुणं । | |
| वीरजिणत्थयमेयं पढह कयं अभयसूरीहिं | ॥२२॥ |

गणि-पंन्यास पद धारक मुनिवरेषु प्रवर्तमान वर्धमान विद्या



बृहद्वीर [वर्धमान] विद्या

हुँ नमो अरिहंताणं । हुँ नमो सिद्धाणं । हुँ नमो आयरियाणं । हुँ नमो उवज्झायाणं । हैं नमो लोए सव्वसाहुणं । हैं हीँ नमो जिणाणं । हैं हीँ नमो ओहिजिणाणं हुँ हीँ नमो परमोहि जिणाणं । हुँ हीँ नमो सब्बोहि जिणाणं । मुँ हीं नमो अणंतोहि जिणाणं । मुँ नमो कुट्रबुद्धीणं । मुँ नमो बीयबुद्धीणं । मुँ नमो पयाणुसारीणं । मुँ नमो संभिन्नसोइणं । मुँ नमो उज्जुमईणं । मुँ नमो विउलमईणं । मुँ नमो चउदसपुव्वीणं । मुँ नमो दसपुळीणं । हैं नमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं । हैं नमो विउव्विणइढ्विपत्ताणं । मुँ नमो विज्जाहरसमणाणं । मुँ नमो पन्नासमणाणं । इ. नमो चारणसमणाणं । इ. नमो आगासगामीणं । ई. नमो भगवओ अरिहंतस्स महड महावीखद्धमाणसामिस्स सिज्झउ मे भगवर्ड महाविज्जा । 👸 वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए सळ्वद्रसिद्धे अणिहए महाणसे महाबले महाबले २ सर्वज्ञानं 👸 हीँ यः सः क्षः स्वाहा । 👸 हाँ हीँ हूँ ही हः जाँ जों प्रौं स्वाहा । मुँ हीं श्रीं श्री ही धृति कीर्ति बुद्धिलक्ष्मी स्वाहा ।

. . .

मुक्तिसौख्य प्रदां ध्यायेत् विद्यां पञ्चदशाक्षरी ।
 सर्वज्ञानं स्मरेन्मन्त्रं सर्वज्ञान प्रकाशनं ॥१॥
 विद्या यथा
 चै नमो अरिहंतसिद्ध सयोगिकेवलि स्वाहा ।

• • •

सर्वज्ञमन्त्रो यथा \rightarrow 💆 श्रीँ हीँ अर्हं नमः वक्तुं न कश्चिदस्य प्रभावं सर्वतः क्षमः । समं भगवतां साम्यं सर्वज्ञानं बिभित्तं य ॥२॥ पञ्चवर्णं स्मरेन्मन्त्रं ध्यायेत् सर्वाभयप्रदं ॥ 💆 नमो सिद्धाणं इति मालोचितं यथा \rightarrow 🍎 नमो अर्हत परमेष्ठिने परमयोगिने विस्फुरदृरुशुक्लध्यानाग्निना निर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्ट्याय सौख्याय वरदाय मङ्गलाय स्वाहा । जापः १०००८, अष्टादश दोषरिहताय स्वाहा ॥ जाप १००८ प्रथममक्षतैर्जापः पश्चात्पुष्पैर्जापः ॥ विद्या

हैं हूँ अर्हनमो अरहंताणं। हैं हूँ नमो सिद्धाणं हैं हूँ नमो आयरियाणं। हैं हूँ नमो हैं उवज्झायाणं हैं हू: नमो लोए सव्बसाहूणं। हैं नमो भगवओ अरिहंतस्स महइ महावीर वद्धमाणसामिस्स सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविज्जा। हैं वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे महानंदणे सिसारवणण घोससारे सिद्धे सिद्धबीए अणिहए नायघोषे परमे परमसुहगे परमयपत्ते जये विजये जयन्ते अपराजिए सव्युत्तमे स्वाहा।

त्रिभुवन स्वामिनी विद्या ।

र्वं जोग्गे मग्गे तच्चे भूए सब्बे भविस्से अन्ते पक्खे जिन पक्खे स्वाहा । कामधेनुमिवाचिन्त्यफलसंपादन क्षमां । अनवद्या जपेत् विद्यां गणभृत् वदनोद्गतां ॥ मंत्रा प्रणवपूर्वोऽयं फलिमिहिषामिच्छूभिः । प्रणव हीनस्तु निर्वाणपदकांक्षिभिः गणभृद्धिः ॥

ॐकार विद्या स्तवन

| प्रणवस्त्वं ! परब्रह्मन् ! लोकनाथ ! जिनेश्वर ! । | |
|--|--------|
| कामदस्त्वं मोक्षदस्त्वं, 🗗 काराय नमो नमः | ॥१॥ |
| पीतवर्णः श्वेतवर्णो, रक्तवर्णो हिस्द्वरः । | |
| कृष्णवर्णो मतो देवः, मुँकाराय नमो नमः | ॥२॥ |
| नमस्त्रिभुवनेशाय, रजोऽपोहाय भावतः । | |
| पञ्चदेवाय शुद्धाय, वैकाराय नमो नमः | 11311 |
| मायादये नमोऽन्ताय, प्रणवान्तमयाय च । | |
| बीजराजाय हे देव ! व्व काराय नमो नमः | 11811 |
| घनान्धकारनाशाय, चरते गगनेऽपि च । | |
| तालुरन्ध्रसमायाते, सप्रान्ताय नमोनमः | 11411 |
| गर्जन्तं मुखरन्थ्रेण, ललाटान्तरसंस्थितम् । | |
| पिधानं कर्णस्थ्रेण, प्रणवं तं वयं नमः | ॥६॥ |
| श्वेते शान्तिकपुष्ट्याख्याऽनवद्यादिकराय च । | |
| पीते लक्ष्मीकरायापि, व्वकाराय नमो नमः | 11011 |
| रक्ते वश्यकरायापि, कृष्णे शत्रुक्षयकृते । | |
| धूम्रवर्णे स्तम्भनाय, व्वॅं काराय नमो नमः | 11/211 |

ब्रह्मा विष्णु शिवो देवो, गणेशो वासवस्तथा । सुर्यश्चन्द्रस्त्वमेवातः, ज्ञैकाराय नमो नमः 11911 न जपो न तपो दानं. न व्रतं संयमो न च। सर्वेषां मूलहेतुस्त्वं, वैकाराय नमो नमः 110011 इति स्तोत्रं जपन् वाऽपि, पठन् विद्यामिमां परा । स्वर्गं मोक्षं पदं धत्ते. विद्येयं फलदायिनी 118811 करोति मानवं विज्ञमज्ञं, मानविवर्जितम् । समानं स्यात् पंचसुगुरोर्विद्येका सुखदा परा 118511

उच्चालइय निहणंस् अद्वा आसणाउ खलइंस् । वोसङ्कायपणयाऽऽसी दुक्खसहेभगवं अपडिन्ने ॥ =પ્રભુને ઊંચે ઉપાડીને નીચે ફેંક્યા કે આસનોથી પાડી દીધા. તો પણ પ્રભુ તો કાયાને વોસિરાવીને પરિષહો સહન કરતા હતા. દુઃખ દૂર કરવાની ઇચ્છા રહિત પ્રભુ દુઃખ સહન કરતા હતા.

हींकार विद्या स्तवन

| सवर्ण-पार्श्व-लय-मध्यसिद्धमधीश्वरं भास्वररूपभासम् । | |
|--|-------|
| खण्डेन्दु-बिन्दु-स्फुटनाद-शोभं, त्वां शक्तिबीजं प्रमनाः प्रणौमि | ॥१॥ |
| हींकारमेकाक्षरमादिरूपं, मायाक्षरं कामदमादिमन्त्रम् । | |
| त्रैलोक्यवर्णं परमेष्ठिबीजं, विज्ञाः स्तुवन्तीशभवन्तमित्थम् | 11711 |
| शिष्यः सुशिक्षां सुगुरोरवाप्य, शुर्चीवशी धीरमनाश्च मौनी । तदात्मबीजस्य तनोतु जापमुपांशु, नित्यं विधिना विधिन्नः | 11311 |
| 3 3 3 | |
| त्वां चिन्तयन् श्वेतकरानुकारं, ज्योत्स्त्रामयीं पश्यति यस्त्रिलोर्की | l |
| श्रयन्ति तं तत्क्षणतोऽनवद्यविद्या कलाशान्तिकपौष्टिकानि | માજાા |
| त्वामेव बालारुणमण्डलाभं, स्मृत्वा जगत् त्वत्करजालदीप्रम् । | |
| विलोकते यः किल तस्य विश्वं, विश्वं भवेत् वश्यमवश्यमेव | ાણા |
| यस्तप्तचामीकरचारुदीप्रं, पिङ्गः प्रभं त्वां कलयेत् समन्तात् । | |
| सदा मुदा तस्य गृहे सहेलिं, करोति केलिं कमला चलाऽपि | ॥६॥ |
| यः श्यामलं कज्जलमेचकाभं, त्वां वीक्षते वा तुषधूमधूम्रम् । | |
| त्रिपक्षः पक्षखलुतस्य वाताहताऽभ्रवद् यात्यचिरेण नाशम् | ાાગા |
| आधारकन्दोद्गततन्तुसूक्ष्म-लक्ष्योद्भवं ब्रह्मसरोजवासम् । | |
| यो ध्यायति त्वां स्रवदिन्दुबिम्बामृतं स च स्यात् कविसार्वभौमः | 11311 |

षड्दर्शनी स्वस्वमतापलेपै:, स्वे दैवते तन्मयबीजमेव । ध्यात्वा तदाराधनवैभवेन भवेदजेयः परवादिवन्दैः 11811 किं मन्त्रतन्त्रैर्विविधागमोक्तैः दःसाध्य-संशीतिफलात्मलाभैः । सुसेव्यः सद्यः फलचिन्तितार्थाधिकप्रदश्चेदिस चेत्त्वमेकः 110911 चौरारि-मारि-ग्रह-रोग-लूता-भूतादि-दोषानल-बन्धनोत्थाः। भियः प्रभावात् तव दुरमेव, नश्यन्ति पारीन्द्ररवादिवेभाः ॥११॥ प्राप्नोत्यपुत्रः सुतमर्थहीनः, श्रीदायते पत्तिरपीशतीह । दु:खी सुखी चाथ भवेन्न किं किं, तद्रुपचिंतामणिचिन्तनेन 118 511 पुष्पादि-जापामृत-होम-पुजा, क्रियाधिकारः सकलोऽस्तु दुरे । यः केवलं ध्यायति बीजमेव सौभाग्यलक्ष्मीर्वृण्ते, स्वयं तम् ॥१३॥ तत्त्वोऽपि लोकाः सुकृतार्थकाम, मोक्षान् पुमर्थाश्चतुरां लभन्ते । यास्यन्ति याता अथ यान्ति ये ते. श्रेय:पदं त्वन्महिमालव: स:॥१४॥ विधाय यः प्राक्प्रणवं नमोऽन्ते, मध्येकबीजं नन् जज्जपीति । तस्यैकवर्णां वितनोत्यवध्या कामार्जनी कामितमेव विद्या 118411 मालिममां स्तुतिमयी, सुगुणां त्रिलोकी, बीजस्य यः स्वहृदये निधयेत् ऋमात् सः !

निलानना स्कुलनया, सुनुजा प्रशासना, बीजस्य यः स्वहृदये निधयेत् ऋमात् सः । अङ्केऽष्टिसिद्धि रभसा लुठतीह तस्य, नित्यं महोत्सवपदं लभते ऋमात् सः

।।१६॥

॥ नमस्कारमंत्राधिराजस्तोत्रम् ॥

यः सर्वदुःखदलने किल कल्पवृक्षश्चितामणी शुभमनोखपूरणे सः । कन्दर्पदर्पदलनैकविधौ दवाग्निलोंकत्रये विजयते परमेष्टिमंत्रः सर्वागमश्रुतसमुद्रसुधेन्द्रसारः चारित्रचंदनवनं सदनं सुखानां । कल्याणकुन्दनखनिर्दमनं दराणं, लोकत्रये विजयते परमेष्टिमंत्रः संसारसागरनिमज्जदपूर्वनौका सिद्धौषधिर्विविधरोगविनाशने च। निःशेषलब्धिबलबोधतरोश्च बीजं लोकत्रये विजयते परमेष्ठिमंत्रः ॥३॥ सूर्यसहस्रकिरणैर्हरित तमांसि सिंहो यथा गजगणांश्च नखैर्निहन्ति, संसारवर्तिदुरितानि तथैव मंत्रो लोकत्रये विजयते परमेष्टिमंत्रः पद्माकरे रुचिररश्मिभरौषधीशं शीघ्रं प्रबोधयति निद्रितकैरवाणि । अन्तः सुषुप्तगुणपद्मदलानि चैवं लोकत्रये विजयते परमेष्ठिमंत्रः भूमंडलेष् शुभवस्तु न विद्यते तत् ध्यानेन यस्य नन् यन्नहि साधनीयम् । दु:खं न तद् भवति यस्य विनाशनं नो लोकत्रये विजयते परमेष्ठिमंत्र:॥६॥ श्रीपालदेवधरणेन्द्रसुदर्शनाद्या पल्लिपतिश्च शिवकंबलशंबलाद्याः । ध्यात्वा हि यं पद्मगुः परमं पवित्रं लोकत्रये विजयते परमेष्टिमंत्रः।।७।। भक्त्या दधाति हृदि यो ननु मंत्रराजं दिव्यां गतिं व्रजति नृतनमुक्तिमोदं चूर्णीकरोति भवसञ्चितकर्मशैलं लोकत्रये विजयते परमेष्ठिमंत्रः

।। श्री लब्धिपदगर्भितमहर्षिस्तोत्र ।।

| जिनास्तथा सावधयश्चतुर्धा, सत्केवलज्ञानधनास्त्रिधा च । | |
|---|--------|
| द्विधा मन:पर्यवशुद्धबोधा, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11811 |
| सुकोष्ठसद्बीजपदानुसारि-धियो द्विधा पूर्वधराधिपाश्च । | |
| एकादशाङ्गाष्ट्रनिमित्तविज्ञा, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11511 |
| संस्पर्शनं संश्रवणं समन्ता-दास्वादन-घ्राण-विलोकनानि । | |
| संभिन्नसंस्रोततया विदन्ते, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11711 |
| आमर्शविप्रण्मलखेलजल्ल-सर्वीषधिदृष्टिवचोविषाश्च । | |
| आशीविषा घोरपराऋमाश्च, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11811 |
| प्रश्नप्रधानाः श्रमणा मनोवाग्वपुर्बला वैक्रियलब्धिमन्तः । | |
| श्रीचारणव्योमविहारिणश्च, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | ।।५॥ |
| घृतामृतक्षीरमधूनि धर्मोपदेशवाणीभिरभिस्त्रवन्तः । | |
| अक्षीणसंवासमहानसाश्च, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | ।।६॥ |
| सुशीततेजोमयतप्तलेश्या, दीप्रं तथोग्रं च तपश्चरन्तः । | |
| विद्याप्रसिद्धा अणिमादिसिद्धा, महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11911 |
| अन्येपि ये केचन लब्धिमन्तस्ते सिद्धचक्रे गुरुमण्डलस्थाः । | |
| 👸 ह्रीं तथा ऽहँ नम इत्युपेता , महर्षयः सन्तु सतां शिवाय | 11 211 |
| इत्यादिलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने स्वाहा । | |
| गणसंपत्समृद्धाय श्रीसुधर्मस्वामिने स्वाहा । | |

लब्धिपदफलप्रकाशक कल्प

र्जं नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रौँ ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। 👸 ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा हौं हौं स्वाहा। एतत् सर्वं प्रयोजनीयम्, विसुचिकाशान्तिर्भवन्ति १ । '👸 नमो अरहंताणं नमो जिणाणं हाँ पुष्प १०८ जपेत्, ज्वरनाशनम् २। 'णमो परमोहिजिणाणं हाँ' शिरोरोगनाशनम् ३ । 'णमो सव्वोहिजिणाणं हाँ' अक्षिरोगनाशनम् ४। 'णमो अणंतोहिजिणाणं' कर्णरोगं नाशयति ५ । 'णमो कुट्टबुद्धीणं' शूल-गुल्म-उदरगेगं नाशयति ६ । 'णमो बीजबुद्धीणं' श्वास-हिक्कादि नाशयति ७ । 'णमो पदाणुसारीणं' परैः सह विरोधं कलहं नाशयति ८। 'णमो संभिन्नसोयाणं' कासं नाशयति ९। 'णमो पत्तेयबुद्धाणं' प्रतिवादिविद्याच्छेदनम् १०। 'णमो सयंबद्धाणं' कवित्वं पाण्डित्यं भवति ११। 'णमो बोहिबद्धाणं' अन्यतरगृहीते श्रते एकसंघो भवति ५२ दिनं यावज्जपेत् १२। 'णमो उज्जुमईणं' शान्तिकं भवति, दिन २४ यावज्जपेत् १३।

• 84 •

'णमो विउलमईणं' बहुश्रुतत्वम्, लवणाम्लवर्जं भोजनम् १४।

'णमो दसपुव्वीणं' सर्वाङ्गवेदी भवति १५ । 'णमो चउदसपुव्वीणं' जाप: १०८ स्वसमय-परसमयवेदी भवति १६। 'णमो अट्टंगनिमित्तकुसलाणं' जीवित-मरणादिकं जानाति १७ । 'णमो विउळ्वणरिद्धिपत्ताणं' काम्यवस्तुनि प्राप्नोति, दिन २८ जापः १८। 'णमो विज्जाहराणं' उद्देशप्रदेशमात्रं खे गच्छति १९। 'णमो चारणाणं' चिन्तामृष्टिपदार्थस्वरूपं जानाति २० । 'णमो पण्हसमणाणं' आयुखसानं जानाति २१। 'णमो आगासगामीणं' अन्तरिक्षे योजनमात्रं गमयति २२ । 'णमो आसीविषा(सा)णं' विद्वषणं पार्श्विष्टकमन्त्रक्रमेण २३। 'णमो दिद्रीविसाणं' स्थावर जङ्गम-कुत्रिमविषं नाशयति २४। 'णमो उग्गतवाणं' वाचास्तम्भनम् २५। 'णमो दित्ततवाणं' रविवाराद् दिनत्रयं मध्याह्ने जापः, सेनास्तम्भ २६। 'णमो तत्ततवाणं' जलं परिजप्य पिबेत्, अग्निस्तम्भः २७। 'णमो महातवाणं' जलस्तम्भनम् २८ ।

'णमो घोरगुणाणं' लूतागर्भपिटकादि नाशयति ३०। 'णमो घोरगुणपरक्कमाणं' दुष्टमृगादीनां भयं नाशयति ३१।

'णमो घोरतवाणं' विष-सर्प्य-मुखरोगादिनाशः २९।

- 'णमो घोरगुणबंभचारीणं' ब्रह्मराक्षसादि नाशयति ३२।
- 'णमो आमोसहिपत्ताणं' जन्मान्तरवैरेण पराभवं न करोति ३३।
- 'णमो खेलोसहिपत्ताणं' सर्वानपमृत्यूनपहरति ।३४।
- 'णमो खेलोसहिपत्ताणं' अपस्मारमवलेपं चित्तविप्लवं नाचयति ३५।
- 'णमो विप्पोसहिपत्ताणं' गजमारी शाम्यति ३६।
- 'णमो सव्वोसहिपत्ताणं' मनुष्यमरकं नाशयति ३७।
- 'णमो मणबलीणं' अश्वमारी शाम्यति ३८।
- 'णमो वचोबलीणं' अजमारी शाम्यति ३९।
- 'णमो कायबलीणं' गोमारी शाम्यति ४०।
- 'णमो अमयसवीणं' समस्तमुपसर्गं शमयति ४१।
- 'णमो सप्पिसवीणं' एकाहिक-द्वयाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक-पाक्षिक-मासिक-सांवत्सरिक-वातादिसमस्तज्वरं नाशयति ४२।
- 'णमो खीरसवीणं' गोक्षीरं परिजप्य पिबेत्,

दिन २४, क्षयं कासं गण्डमालादिकं च नाशयति ४३।

- 'णमो अक्खीणमहाणसाणं' आकर्षणं ४४।
- 'णमो लोए सव्वसिद्धायदाणं' राजपुरुषादिवश्यं ४५।
- 'र्जं णमो भगवदो महदि महावीरवहुमाणबुद्धिरिसीणं' चेतः-समाधिमवस्थायां प्राप्नोति ४६ ।

॥ इति लब्धिपदफलप्रकाशकः कल्पः ॥

॥ सिद्धचक्रस्तोत्र ॥

ऊर्ध्वाधोरयुतं सिबन्दुसकलं ब्रह्मस्वरावेष्टितं, वर्गापूरितमष्टपत्रममलं सत्सन्धितत्त्वार्पितम् ॥ अन्तः पत्रतटेष्वनाहतपदं हीँकारसंवेष्टितं, देवं ध्यायति यः पुमान् स भवति वैरीभकण्ठीखः

॥१॥

यद्वर्गाष्टकपूरितं वरदलं सानाहतं नीरजं यहीँकारकलापिबन्दुकिलतं मध्ये त्रिरेखाञ्चितम् ॥ यत्सर्वार्थकरं परं गुणवतां कालत्रये वर्तिनां तत्क्लेशौघविनाशनं भवतु नः श्रीसिद्धचक्रेश्वरम्

11511

शब्दब्रह्मैकलीनं प्रबलबलयुतं सर्वतत्त्वप्रभावं, सानन्दं सर्वभद्रं गणधरवलयं दुःखपाशप्रणाशनम् ॥ यन्नैमित्तं वरिष्ठविपदि हृदि धृतं सज्जनानां च नित्यं तद् दत्तं यस्य बाहौ रिपुकुलमथनं सिद्धचक्रं नमामि

11311

यच्छुद्धं व्योमबीजं ह्यध-उपिर रा(या)न्त-सिद्धाक्षरेण, यत्सन्धौ तत्त्वयुक्तं स्वपरमपदैर्वेष्टितं मध्यबीजम् । यत्सीमन्तं निरतं विगतकिलमलं मायया वेष्टिताङ्गं जीयात् तत् सिद्धचक्रं विमलवरगुणं देवनागेन्द्रवन्द्यम्

11811

यद् वश्यादिककारकं बहुविधं कामार्थिनां कामदम् यह्यक्षाधिकजापसिद्धविमलं सत्संपदां दायकम् ।

• **५१** •

यत् कुष्ठादिकदुष्टदोषदलनं दुःखाभिभूतात्मनाम् यत् तत्त्वैकफलप्रदं विजयतां श्रीसिद्धचक्रं भुवि

11411

ऊर्ध्वाधोरेफयुक्तं गगनमुपहतं बिन्दुनाऽनाहतेन ह्रींकारेण प्रकृष्टं स्वरसुगुरुपदैर्वेष्टितं बाह्यदेशे । पद्मं वर्गाष्टकाङ्कं दलमुखविवरेऽनाहताढ्यं तदित्थं ? ह्रींकारेण त्रिवेष्टं कलशवलयितं सिद्धिदं सिद्धचक्रम्

॥ आ

व्योमोर्ध्वाधोरयुक्तं शिरिस च विलसन् नादिबन्द्वर्धचन्द्रम् स्वाहान्तौंकारपूर्वेर्गुरुभिरिभवृत-सस्वरं चाष्ट्रवर्गम् । अन्तस्थानाहतश्रीगणधरवलयालङ्कृतं ध्यानसाध्यं वन्दे श्रीसिद्धचक्रं सुरगणमिहतं मायया त्रिःपरीतम् यत् सर्वाङ्गिहतं मनुष्यमिहतं सौख्यालयं धर्मिणाम् यद् दोषैः परिवर्जितम् सुगदितं ध्यानाधिरूढाङ्कितम् । यत् कर्मक्षयकारकं सुधवलं मन्त्राधिपाधिष्ठितम् तनः पात् वरं भवाब्धिशमनं श्रीसिद्धचक्रं सदा

11011

11211

अलोल्ए नाम उक्कोसेस् आहारादिस् अलुद्धो भवइ अहवा जो अप्पणो वि देहे अपडिबद्धो सो अलोलुओ (अलोलुय) भण्णइ । दश चृणि

॥ श्री गौतमाष्ट्रकम् ॥

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवासुरमानवेन्द्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥१॥

श्रीवर्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशाऽपि,स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥२॥

श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतम्, मन्त्रं महानन्दसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः,स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥३॥

यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥४॥

अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः,स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥

।।५॥

त्रिपञ्चसङ्ख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे

11811

सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं सङ्घ-सपर्ययेति । कैवल्यवस्त्रं प्रदर्ौ मुनीनां, स गौतमो यच्छत् वाञ्छितं मे

11911

शिवं गते भर्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्विमहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रै:, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे

11211

त्रैलोक्यबीजं परमेष्ठिबीजं, सद्ज्ञानबीजं जिनराजबीजं । यन्नाम चोक्तं विदधाति सिद्धिं, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥९॥

श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा ये । पठन्ति ते सूरिपदं सदैवानन्दं लभन्ते सुतरां ऋमेण

119011

પ્રભુ ! આપનું સંયમ જીવન પામ્યા પછી કોઈ ફળ મને મળવાનું હોય તો મને...આપના જેવી અપ્રમત્ત દશા આપજો. આપના જેવી જાગૃતિ, નિષ્કષાયભાવ આપજો. આપના જેવી વિશુદ્ધિ અને નિર્મળતા આપજો આપના જેવું સંકલ્પબળ, સમાધિ અને સમતા આપજો આપના જેવો સર્વજીવ પ્રત્યેનો આદર + કરૂણાભાવ આપજો.

॥ सिरि गोयम थवो ॥

| जय सिरिविलासभवणं, वीरिजिणिदस्स पढम सीसवरं। | |
|---|--------|
| सयलगुणलद्धिजलहिं, सिरि गोयमगणहरं वंदे | 11811 |
| हैं सह नमो भगवओ, जगगुरुणो गोयमस्स सिद्धस्स । | |
| बुद्धस्स, पारगस्स य, अक्खीणमहाणसस्स सया | 11511 |
| अवतर अवतर भगवन्, मम हृदये भास्करीश्रियं बिभृहि । | |
| 👸 ह्रीं श्रीं ज्ञानादि, वितस्तु तुभ्यं नमः स्वाहा | แรแ |
| वसइ तुह नाममंतो, जस्स मणे सयलचिंतियं दिंतो । | |
| चिंतामणि-सुरपायव-कामघडाइहिं पि किं तस्स | 11811 |
| सिरि गोयम गणनायग, तिहुअणजणसरण, दुरियदुहहरण । | |
| भवतारण रिउवारण, होसु अणाहस्स मह नाहो | ॥५॥ |
| मेरुसिरे सिंहासण, कणयमहाकमलसहस्सपत्तद्वियं । | |
| सूरिगणभगणविसयं, सिसप्पहं गोयमं वंदे | ॥६॥ |
| सळ्सुहलद्धिदाया, सुमस्अिमत्तो वि गोयमं भयवं । | |
| पइद्वियगणहरमंतो, दिज्ज मह वंछियं सयलं | 11911 |
| इअ सिरि-गोयम-संथुअ-मुणिसुंदरसूरि थुइपयं मएवि तुम्हं । | |
| देहि मह सिद्धि सिवफलयं, भुवणकप्पतरुवस्स | 11/211 |



श्री गोतमस्वामी छन्द

पेलो गणधर वीरनो रे, शासननो शणगार, गौतम गोत्र तणो धणी रे, गुणगणी खणभंडार, जयंकर जीवो गौतम स्वाम. ए तो नवनिधि होय जस नाम, ए तो पुरे वाञ्छित ठाम, ए तो गुणमणि केरो धाम जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥१॥

ज्येष्ठा नक्षत्रे जनिमया रे, गोबर गाम मोझार, वसुभूतिसुत पृथ्वी तणो रे, मानव मोहनगार. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥२॥

समवसरण इन्द्रे रच्युं रे, बेठां श्री वर्धमान, बेठी ते बारे परषदा रे, सुणे रे श्री जिनवाण. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥३॥

वीर कन्हे संजम लह्युं रे, पंचसयां परिवार, छठ छठ तपने पारणे रे, करतां उग्र विहार. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥४॥

अष्टापद लब्धिए चड्या रे, वांद्या जिन चोवीश,

जग चिंतामणी तिहां कर्युं रे, स्तविया श्री जगदीश. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥५॥ पनरसें तापस पारणे रे, खीर खांडघृत भरपुर, अमिय जास अंगुठडे रे, उग्यो ते केवलसुर. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥६॥

दिवाळी दिने उपन्युं रे, प्रभाते केवल नाण, अक्षय लब्धि तणा धणी रे. नामे ते सफळ विहाण. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥७॥

पचास वरस घरवासमां रे, छद्मस्थाए त्रीश, बार वरस लगे केवळी रे, बाणुं रे आयु जगीश. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥८॥

गौतम गणधर वंदिया रे, श्री विजयसेनसूरीश, ए गुरुचरण पसाउल रे, धीर नामे निशदिश. जयंकर जीवो गौतम स्वाम ॥९॥



अनुभूतसिद्धसारस्वतस्तोत्र

| कलमरालविहंगमवाहना, सितदुकूलविभूषणलेपना । | |
|--|-------|
| प्रणतभूमिरुहामृतसारिणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी | 11811 |
| अमृतपूर्णकमण्डलुहारिणी, त्रिदशदानवमानवसेविता । | |
| भगवती परमैव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम् | 11711 |
| जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराऽऽननमण्डपनर्तको । | |
| गुरुमुखाम्बुजखेलनहंसिका, विजयते जगित श्रुतदेवता | 11311 |
| अमृतदीधितिबिम्बसमाननां, त्रिजगतीजननिर्मितमाननाम् | |
| नवरसामृतवीचिसरस्वतीम्, प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम् | 11811 |
| विततकेतकपत्रविलोचने ! विहितसंसृतिदुष्कृतमोचने ! । | |
| धवलपक्षविहङ्गमलाञ्छिते, जय सरस्वति ! पूरितवाञ्छिते | 11411 |
| भवदनुग्रहलेशतरङ्गितास्तदुचितं प्रवदंति विपश्चितः । | |
| नृपसभासु यतः कमलाबला, कुचकलाललनानि वितन्वते | ।।६।। |
| गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्मय: । | |
| चिकतबालकुरङ्गविलोचना, जनमनांसि हरन्तितरां नराः | 11911 |
| करसरोरुहखेलनचञ्चला, तव विभाति वरा जपमालिका । | |
| श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो-ज्ज्वलतरङ्गकलाग्रहसाग्रहा | 11311 |
| द्विरद-केसरिमारि-भुजङ्गमाऽसहनतस्करराजरुजां भयम् । | |
| तव गुणावलिगानतरङ्गिणां, न भविनां भवति श्रुतदेवते | 11811 |

हैं हीं क्लीं ब्लीं ततः श्रीं तदन्, ह स् क ल हीं अथ ऐं नमोऽन्ते । लक्षं साक्षाज्जपेद्यः करसमविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी निर्यान्तीं चन्द्रबिम्बात् कलयति मनसा त्वां जगच्चिन्द्रकाभां सोऽत्यर्थं वहिक्णडे विहितघृतहतिः स्याद् दशांशेन विद्वान् 110011 रे रे लक्षणकाव्यनाटक-कथा चम्पुसमालोकने क्वायासं वितनोषि बालिश ! मुधा कि नम्रवक्त्राम्बुजः । भक्त्याऽऽराधय मन्त्रराजमहसाऽनेनानिशं भारती येन त्वं कवितावितानसविताऽद्वैतप्रबुद्धायसे 118811 चञ्चवच्चन्द्रमखी प्रसिद्धमहिमा स्वाच्छंद्यराज्यप्रदा, नायासेन स्रासुरेश्वरगणैरभ्यर्चिता भक्तितः । देवी संस्तृतवैभवा मलयजा लेपाङ्गरङ्गद्युति सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रैलोक्यसंजीवनी 118511 स्तवनमेतदनेकग्णान्वितं, पठित यो भविकः प्रमनाःप्रगे । स सहसा मधरैर्वचनामृतैर्नृपगणानिप रंजयति स्फूटम् 118311



मंत्रं संसारसारं त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमंत्रं, संसारोच्छेदमंत्रं विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमंत्रं । मंत्रं सिद्धिप्रदानं शिवसुखजननं केवलज्ञानमंत्रं, मंत्रं श्रीजैनमंत्रं जप जप जिपतं जन्म निर्वाणमंत्रं ॥

श्री सरस्वती नाम स्तोत्र

चन्द्रार्क-कोटि घटितोज्वल-दिव्य-मुर्ते ! श्री चन्द्रिका-कलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे ! कामार्थ-दायि-कलहंस-समाधि-रूढे! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 118 11 देवा-स्रेन्द्र-नत मौलि मणि-प्ररोचि. श्री मंजरी-निविद्य-रंजित-पाटपदो । नीलालके ! प्रमदहस्ति - समानयाने ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि . 11511 केयूर हार - मणि कुण्डल - मुद्रिकाद्यै:, सर्वोङ भूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र-वंद्ये ! नानास्रत्न - वर - निर्मल - मौलियुक्ते ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 11311 मंजीर कोत्कनक कंकण किंकणीनां. कांच्याश्च झंकृत - खेण विराजमाने ! सद्धर्म - वारिनिधि-संतति-वर्द्धमाने ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 11811

कंकेलि पल्लव - विनिंदित पाणियुग्मे ! पद्मासने दिवस - पद्मसमान - वक्त्रे ! जैनेन्द्र-वक्त्र-भवदिव्य-समस्त-भाषे ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 11411 अर्द्धेन्द्-मण्डित जटा-ललित-स्वरूप ! शास्त्र-प्रकाशिनि-समस्त-कलाधिनाथे ! चिन्मद्रिका-जपसराभय-पुस्तकांके ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि गहम डिंडीरपिंड-हिमशंखसिताभ्रहारे ! पूर्णेन्द्र - बिम्बरुचि-शोभित-दिव्यगात्रे ! चांचल्यमान - मुगशाव ललाट-नेत्रे ! वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 11/911 पुज्ये पवित्र करणोन्नत - कामरूपे ! नित्यं फणीन्द्र - गरुडाधिप-किन्नरेन्द्रै:, विद्याधरेन्द्र-सूखक्ष-समस्त-वृन्दैः ! वागीश्ररि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि 11211 सरस्वत्या प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः तस्मान्निश्चल- भावेन, पूजनीया सरस्वती 11811

श्रीसर्वज्ञ-मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या-बह्विकासिनी 110911 सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना । हंसस्कंध-समारूढ़ा, वीणा-पुस्तक-धारिणी 118811 प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती । तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हंसगामिनी 118311 पंचमं विद्षां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा। कमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टं ब्रह्मचारिणी 118311 नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिनी तथा। एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत 118811 वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतर्दशं । पंचदशं श्रुतदेवी, षोडशं गौर्निगद्यते 118411 एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत् । तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत् 118811 सरस्वती ! नमस्तुभ्यं, वरदे ! कामरूपिणि ! विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ॥

श्री सूरिमन्त्रस्तोत्र

| जयश्रियं श्रीजिनशासनस्य कलिद्विषोत्थापितविघ्नहर्ता । | |
|--|--------|
| परां यएवातनुतेऽधुनापि श्री सूरिमन्त्रं प्रयतः स्तुवे तम् | 11811 |
| त्वं तीर्थकृत् त्वं परमं च तीर्थं त्वं गौतमस्त्वं गणभृत् सुधर्मा । | |
| त्वं विश्वनेता त्वमसीहितानां निधिः सुखानामिह मन्त्रराज ! | 11511 |
| किं कामधेनुः सुरपादपो वा किं कामकुम्भः सुमनोमणिर्वा । | |
| यदि प्रसन्नः सकलेष्टदायी श्रीसूरिमन्त्रोऽपि जगत्पतिस्त्वम् | 11\$11 |
| त्विय स्थिते चेतिस के नु विघ्नाः के दुर्जनाः के प्रतिपक्षभूपाः | 1 |
| के वैरिणः के दुरुपद्रवाश्च स्वामिन् ! समग्रं हि सुखाकृदेव | 11811 |
| न लब्ब्यः काश्चन ते प्रभावात् त्विय प्रभौ भक्तिभृतां दुरापाः । | |
| सदा सुखानन्दितचेतसो यत् खेलन्ति ते श्रीमहिमप्रभाभिः | 11411 |
| प्रवर्तते तीर्थमिदं जिनस्य जयद् यदा दुःप्रसहं कुदृष्टेः । | |
| यदागमो यद्विजयी च धर्मस्तदत्र हेतुर्भगवँस्त्वमेव | ॥६॥ |
| श्री वर्धमानस्य निदेशतस्त्वं प्रतिष्ठितो गौतमगच्छनेत्रा । | |
| सिद्धीः समग्राः शिवसम्पदश्च सर्वोग्रपुण्यौघफलानि दत्से | 11911 |
| इति महामुनिसुन्दरसंस्तवास्पद गणेश्वरमन्त्रपते मया । | |
| महिमवारिनिधे स्तुत भक्तितो वितर मेऽर्थितसर्वसुखश्रियः | 11311 |
| ॥ इति श्री सूरिमन्त्रस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ | |



सरस्वती - अष्टक

| आराद्धा श्रद्धया सम्यग्ज्ञानादिविजयश्रियम् । | |
|---|--------|
| ददती जगतां मातर्जय भारति देवते | ॥१॥ |
| चतुर्वरदवीणाक्षसूत्रपुस्तकभृद्भुजे । | |
| मरालवाहने शऋऋियमाणा श्रमस्तवे | 11511 |
| आद्ये श्रीसूरिमन्त्रस्य विद्यापीठे पदे स्थिते । | |
| श्रीमद्गौतमपादाब्जपरिचर्यामरालिके | แรแ |
| श्रीजिनेन्द्रमुखाम्भोजविलासवसते सदा। | |
| जिनागमसुधाम्भोधिमध्यासिनि विधुद्युते | 11811 |
| कविहत्कमलाक्रीडप्रबोधतरिणप्रभे । | |
| प्रसीद भगवत्याशु देहि भारति मेऽर्थितम् | 11411 |
| ऐं नमः प्रमुखैर्मन्त्रैराराध्ये विश्वदेवते । | |
| मरुन्मणिलताजैत्रप्रभावसुभगे जय | ાદ્યા |
| आराध्या दर्शनै: सर्वै:, सकलाभीष्टदायिनी । | |
| रातु बोधिं विशुद्धं, मे, वाग्देवि जिनभक्तिभृत् | 11911 |
| स्तूयमाने महानेकमुनिसुंद्रसंस्तवैः । | |
| स्तुते मयापि मे देहि प्रार्थितं श्रीसरस्वित | 11/211 |
| | |

इति श्रीसूरिमन्त्रप्रथमपीठाधिष्ठायिका श्रीभारतीस्तोत्र । • ६४ ●

श्री त्रिभुवनस्वामिनी देवी स्तोत्र

| जय श्रीगणभृन्मन्त्रविद्यास्थानप्रतिष्ठिते । | |
|--|-------|
| देवि त्रिभुवनस्वामिन्यनन्तमहिमद्युते | ।।१॥ |
| जिनराजपदाम्भोजविलासवरलानिभे । | |
| भौतमस्वामिपद्भक्ते सक्ते भक्तालिपालने | ાાશા |
| महापराऋमोल्लासि सहस्रभुजराजिते । | |
| मानुषोत्तरशैलेन्द्रनिवासिनि जयोत्तमे | ॥३॥ |
| महादेवि सूरिवृन्दवन्द्यमानऋमाम्बुजे । | |
| सुरासुरनराधीशप्रशस्यगुणवैभवे | ાાજાા |
| शाकिनी-डाकिनी-भूत-प्रेतादिग्रहनाशिनि । | |
| सर्वद्वेषिगणोच्चाटन्यमेयबलशालिनि | ।।५॥ |
| नृतिर्यक्देवताद्युत्थक्षुद्रोपद्रववारिणि । | |
| संस्मृतेरिप सर्वेष्टसुखकल्याणकारिणि | ાફા |
| सर्वसूरिगुणस्तुत्ये द्विध(धा)वैरिजयश्रियम् । | |
| देहि मे शुद्धबोधि च समाधानं च सर्वतः | 11911 |
| स्तूयमाने महानेकमुनिसुन्दरसंस्तवैः । | |
| स्तृते मयापि मेऽभीष्टं देहि त्रिभ्वनेश्वरि | 11311 |

इति श्री सूरिमन्त्रस्य विद्याभिधानद्वितीयपीठाधिष्ठात्र्याः श्रीत्रिभुवनस्वामिनीदेवी स्तुतिः ॥

श्री श्रीदेवी स्तोत्र

| सुरराजैः चतुःषष्ठ्या, स्तूयमानगुणप्रभे । | |
|---|--------|
| जय श्रीदेवि विश्वेकमातराश्रितवत्सले | ॥१॥ |
| हिमवच्छिखरे पद्महृदपद्मनिवासिनि । | |
| गौतमऋमसेवैकरसिके विश्वमोहिनि | 11711 |
| सूरिमन्त्रतृतीयोपविद्यापदिनवेशिते । | |
| सूरिराजहृदम्भोजविलासिनि चतुर्भुजे | ॥इ॥ |
| श्रीचन्द्रप्रभभक्त्याऽतिपूते पद्माननेक्षणे । | |
| पद्महस्ते महारत्ननिधिराजिविराजिते | ાાજાા |
| गजयानेऽप्सरः श्रेणिगीतनाट्यादिरञ्जिते । | |
| सदाशिरोधृतछत्रचलच्चामरभासिते | ોધા |
| श्रीजैनशासनानन्तमहिमाम्बुधिचन्द्रिके । | |
| नानामन्त्रैः समाराध्ये सुरासुरनर्राषिभिः | ॥६॥ |
| विजया-जया-जयन्ती-नन्दा-भद्राद्युपासिते । | |
| स्मृतिस्तवनपूजाभिः सर्वविघ्नभयापहे | 11911 |
| विश्वकल्पलते लक्ष्मि सर्वालङ्कृत्यलङ्कृते । | |
| शुद्धबोधिसमाधानसर्वसिद्धीः प्रयच्छ मे | 11/211 |
| स्तूयमाने महानेकमुनिसुन्दरसंस्तवैः । | |
| स्तुते मयापि सर्वेष्टिसिद्धि श्रीदेवि देहि मे | ॥१॥ |

इति श्रीसूरिमन्त्रतृतीयपीठाधिष्ठात्र्याःश्रीलक्ष्मीमहादेव्याः स्तुतिः॥

श्री यक्षराजगणिपिटक स्तोत्र

| श्रीमन्त्रपीठनाम्नि प्रतिष्ठितं सूरिमन्त्रतुर्यपदे । | |
|--|-------|
| गणिपिटकयक्षराजं सर्वारिजयश्रिये नौमि | 11811 |
| अनुपञ्चप्रज्ञप्तिश्रीमद्यक्षाधिपोऽतिजिनभक्तः । | |
| श्रीगौतमपदसेवानिस्तस्तद्धक्तविघ्नहरः | 11711 |
| शर-चाप-खड्ग-खेटकामुख्यास्त्रै: विश्वरक्षणप्रभुभि:। | |
| वरदाभयेश्च हस्तैर्विशत्या भ्राजमानाङ्गः | 11511 |
| षोडशयक्षसहस्त्रप्रभुर्जगज्जैत्रविक्रमो रिपुहा । | |
| सर्वाश्रितेष्टदानं(ने)प्रगल्भमहिमाम्बुधिर्जयातात् | 11811 |
| (त्रिभिर्विशेषकम्) | |
| जिनशासनविद्वेषित्रातकृताशेषविघ्नतिमिरस्वि: । | |
| सुविहितगुरुगुणसङ्घाऽनवस्तरक्षाभियुक्ततमः | ાષા |
| गणधरमन्त्राराधकसूरिवरप्रार्थितार्थकल्पद्युः । | |
| सर्वक्षुद्रोपद्रवहरणोद्युक्तः सकलसङ्घे | ॥६॥ |
| स्मृतिपूजास्तवनाद्यैः संनिहितोऽस्यवहितश्च यक्षेश । | |
| श्रीगणिपिटक ! सुरोत्तम ! विघ्नहृतेर्देहि मे तुर्ष्टि | 11911 |
| स्तूयमानमहानेकमुनिसुन्दरसंस्तवै: । | |
| इति मे स्तुवतो भूयात् यक्षेश सकलेष्टकृत् | 11311 |
| इति श्रीसरिमञ्ज्ञचतर्थपीठाधिष्ठायकशीर्गाणपिटकयथाधिगजस्त्रितः | n |

श्री पञ्चमपीठाधिष्ठायक स्तोत्र

| पञ्चमे गणभृद्विद्यापीठे श्रीमन्त्रनायके । | |
|---|-------|
| प्रतिष्ठितान् सुरेन्द्रादीन् स्तुवे द्वेषिजयश्रिये | ॥१॥ |
| सौधर्मेन्द्रादयः कल्पाधिपा मे द्वादशवाञ्छितम् । | |
| ददतां चमरेन्द्राद्या भवनेशाश्च विंशतिः | 11711 |
| दद्युः कालमहाकालप्रमुखा व्यन्तरेश्वराः । | |
| श्रेयः संनिहिताद्याश्च मम षोडश षोडश | 11311 |
| ज्योतिश्चऋाधिपाश्चंद्रसूर्याः सर्वग्रहान्विताः । | |
| रोहिण्याद्यास्तथा विद्यादेव्यः षोडश पान्तु माम् | 11811 |
| गोमुखप्रमुखा यक्षाः पान्तु शासनरक्षकाः । | |
| चक्रेश्वर्यादिदेव्यश्च मां चतुर्विशतिः सदा | 11411 |
| सुगः संनिहिताः सर्वे सुर्यश्चेद्धप्रभावभाः । | |
| रेवतीरोहिणीनागार्जुनार्यखपुटादयः | ॥६॥ |
| यशोभद्रादयश्चापि सूरयो महिमार्णवाः । | |
| सिद्धश्रीसूरिमन्त्रा मे रान्तु विघ्नहृतोऽर्थितं | 11911 |
| इति स्तुतगुणाः श्रीमन्मन्त्रराजप्रतिष्ठिताः । | |
| देवता ददतामिष्टं मुनिसुन्दरसूरये | 11811 |
| ।। इति श्रीगणधरमन्त्रपञ्चमपीठश्रीमन्त्रराजाधिष्ठायकस्तु | ते: ॥ |

€८ •

श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र

| जय श्रीमद्युगादीशपदपद्ममधुव्रते । | |
|---|--------|
| सुरेन्द्रादिसुरश्रेणिश्लाघ्यसद्गुणविऋमे | ॥१॥ |
| जय श्रीदेवदेवेन्द्रप्रशस्यगुणविक्रमे । | |
| श्रीयुगादिजगन्नाथक्रमाम्भोजमधुव्रते | 11511 |
| चक्रवित्रासिताशेषरिपुचक्रपराक्रमे । | |
| चक्रेश्वरी सूरिवृन्दवन्द्यमानक्रमाम्बुजे | 11\$11 |
| तीर्थप्रवृत्तिहेतुश्रीसूरिमन्त्रस्य पञ्चमे । | |
| मन्त्रराजाभिधे स्थाने सुप्रतिष्ठे महाबले | 11811 |
| वरदेष्वरिपाशांकितापसव्यचतुर्भुजे । | |
| सत्त्वाह्लादिनी हे चक्रांकुशसव्यचतुःशये | ॥५॥ |
| सुपर्णवाहने श्रीमद्गौतमोपास्तिलालसे । | |
| स्वर्णवर्णे सदोद्धासिसारालङ्कारराजिते | ॥६॥ |
| सूरिभिः सततं ध्येये तेषामिष्टप्रसाधिके । | |
| सर्वविघ्नावलीघातनिघ्ने रक्षापरे सदा | 11911 |
| चतुर्विधस्य संघस्य सर्वोपद्रवनाशिनि । | |
| समाधानं सुबोधिं च सदा देहीष्टदे मम | 11311 |
| स्तूयमानमहानेकमुनिसुन्द्रसंस्तवैः । | |
| स्तुते मयाप्यभीष्टार्पित चक्रेश्वरी विधेहि मे | 11811 |
| | |

॥ इति चक्रेश्वरी देवी स्तोत्रम् ॥

श्री चक्रेश्वरी स्तोत्र

श्री चक्रे चक्र भीमे ललित वर भूजे लीलया लालयन्ती, चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलित शत शिश्वे खे खगेन्द्राधिरूढ़े। तत्त्वैरुद्भृत भासा सकल गुण निधे मन्त्र रूप स्वकानो कोट्यादित्य प्रकाशे त्रिभुवन विदिते त्राहि मां देवि चक्रे ॥१॥ क्लीं क्लीन्नें क्लिं प्रक्रीले किलि-किलित खे दंद्भिध्वाननादे, आँ हँ क्षँ ह्रीं स चक्रे क्रमिस जगदिदं चक्र विक्रान्त कीर्तिः। क्षाँ आँ ऊँ भासयंति त्रिभुवन मखिलं सप्त तेजः प्रकाशे क्षाँ क्षीँ क्षुँ विस्फुरन्ति प्रबल बल युते त्राहि मां देवि चक्रे ॥२॥ श्रँ झौँ द्रँ प्रँ प्रसिद्धे सूजन जन पदानां सदा कामधेनुः, गूँ क्ष्मीं श्रीं कीर्ति बुद्धि प्रथयित वरदे त्वं महा मन्त्र मुर्ते । त्रैलोक्यं क्षोभयंति कुरु कुरु हरहं नीर नाद प्रघोषे क्लीं क्लिं ह्रीं द्रावयन्ती द्रुत कनक निभे त्राहि मां देवि चक्रे ॥३॥ 🕉 क्षुँ द्राँ ह्रीँ सुबीजै: प्रवर गुण धरै मोहिनी शोषणी त्वं, शैले-शैले नटन्ती विजय जयकरी रौद्र मूर्ते त्रि नेत्रे । वज्र ऋोधे सुभीमे रहिंस करतले भ्रामयन्ति सुचऋं क्तँ क्तँ राँ हः कराले भगवति वरदे त्राहि मां देवि चक्रे ॥४॥ ॐ ह्रीं हुँ हुँ सहर्षे ह ह ह ह हिम कुन्देन्दु संकाश बीजै:, हूँ हूँ हूँ क्ष: सुवर्णे: कुवलय नयने द्विद्रुमां द्रावयन्ती ।

हँ हाँ हः क्ष स्त्रिलोकी ममृत जलधरा वारुणैः प्लावयन्ती झाँ झाँ हूँ सः सुबीजै: प्रबल बल भया त्राहि मां देवि चक्रे ॥५॥ आँ क्रों हीं क्षुयुताँगे प्रलय दिन करास्तस्य कोटि प्रकाशे, अष्टौ चक्राणि धृत्वा विमलः निज भुजैः पद्ममेकं फलं च । द्वाभ्यां चक्र करालं निशित चल शिखं तार्क्ष्य रूढ़ा प्रचण्डा हाँ हीँ होँ क्षोभकारी र र र र रमणे त्राहि मां देवि चक्रे ॥६॥ र्स्नू क्षुँ हुँ क्षुँ विचित्रे त्रिनयन नयने नाद बिन्दुग्र नेत्रे, **चँ चँ चँ वज्र धारा ल ल ल ल लितो नील केशालि केशे**। वँ वँ वँ चक्र धारा चल चल चलिते नुप्रै लेलि लीले । श्रीं र्स्नु हुाँ हुीं सुकीर्तिः सुखर निमते त्राहि मां देवि चक्रे ॥७॥ 30 हीं फट्कार मन्त्रे हृदय मुपगते रुंधि वश्याधिकारे, हाँ हीं क्लीं क्लिं सुघोषे प्रलय घन घटा टोप शब्द प्रनादे । वाँ फाँ ऋोध मुर्ते धगधगित शिखे ज्वालिनि ज्वाल माले रौद्रे हुँ कार रूपे प्रकटित दर्शने त्राहि मां देवि चक्रे ॥८॥

. . .

श्री पद्मावती स्तोत्र

| ** - 1 2 | |
|--|--------|
| इ नमोऽनेकांतदुर्वारमतसद्वंशमानवे । | |
| जिनाय सकलाभिष्टदायिने, कामधेनवे | ॥१॥ |
| स्वस्ति श्री जिनराजमार्गकमले प्रद्योतसूर्यप्रभे । | |
| स्वस्ति श्री फणिनायिके !, सुरनराराध्ये जगन्मंगले । | |
| स्वस्ति श्री कनकाद्रिसन्निभमहासिंहासनालंकृते । | |
| विद्यानामधिदेवते !, प्रतिदिनं मां रक्ष पद्माम्बिके | 11711 |
| जय जय जगदम्बे ! मत्तकुंभे ! नितम्बे ! | |
| हर हर दुस्तिं मे स्वस्ति मानाभिरामे । | |
| नय नय जिनमार्गे, दुष्ट्योरोपसर्गे, | |
| भव भव शरणं मे, रक्ष मां देवि पद्मे | 11\$11 |
| वुँ हीँ बीजं प्रणवोपेतं, नमः स्वाहांतसंयुतम् । | |
| देदीप्यमानं हृत्पद्मे, ध्यायेऽभीष्टफलप्रदम् | ાાજાા |
| तद् बीजं देवताकारं, पंचानां कवचान्वितम् । | |
| गुरूपदेशतो ध्यायेत् पापदास्द्रिभंजनम् | 11411 |
| उँ नमस्तेऽस्तु महादेवी कल्याणी भुवनेश्वरी । | |
| चण्डी कात्यायनी गौरी, जिनधर्मपरायणी | ॥६॥ |
| पञ्चब्रह्मपदाराध्या, पञ्चमन्त्रोपदेशिनी । | |
| पञ्चव्रतगुणोपेता, पञ्चकल्याणदर्शनी | 11911 |

| नम श्री स्तोतला नित्या, त्रिपुरा काम्यसाधिनी । | |
|---|-----------|
| मदोन्मालिनी विद्या महालक्ष्मी सरस्वती | 11311 |
| सारस्वतगणाधीशा सर्वशास्त्रोपदेशिनी । | |
| सर्वेश्वरी महादुर्गा त्रिनेत्री फणिशेखरी | 11911 |
| जटाबार्लेंदुमुगुटा कुर्कटोरगवाहिनी । | - |
| चतुर्मुखी महायशा, धनदेवी गुह्येश्वरी | ॥१०॥ |
| नागराजमहापत्नी, नागिनी नागदेवता । | |
| नमः सिद्धान्तसम्पना द्वादशांगपरायणी | ।।११॥ |
| चतुर्दश महाविद्या, अवधिज्ञानलोचना । | |
| वासंती वनदेवी च वनमाला महेश्वरी | ॥१२॥ |
| महाघोरा महारौद्रा, वीतभीताऽभयंकरी । | |
| कंकाली कालगत्री च, गंगा गांधर्वनायिकी | ग्रह्मा |
| सम्यग्दर्शनसम्पन्ना, सम्यग्ज्ञानपरायणी । | |
| सम्यग्चारित्रसम्पन्ना, नराणां उपकारिणी | ાાકુષ્ટાા |
| अगण्यपुण्यसम्पन्ना गणवी गणनायिकी । | |
| पातालवासिनी पद्मा, पद्मास्या पद्मलोचना | ।।१५॥ |
| प्रज्ञप्ति रोहिणी जम्भा, स्तम्भिनी मोहिनी जया । | |
| योगिनी योगविज्ञानी, मृत्युदारिद्र्यभंजिनी | ॥१६॥ |
| क्षमासम्पन्नधरणी, सर्वपापनिवारणी । | |
| ज्वालामुखी महाज्वालामालिनी वज्रशृंखला | ।१७॥ |

| नागपाशघरा धौर्या श्रेणीताम्रफलान्विता । | |
|--|--------|
| हस्ता प्रशस्ता विद्याऽऽर्या, हस्तिनी हस्तवाष्ट्रगी | ॥२८॥ |
| वसंतलक्ष्मी गीर्वाणी, शर्वाणी पद्मविष्ट्रग । | |
| बालार्कवर्णशंकाशा, श्रृंगाररसनायिकी | ।।१९।। |
| अनेकांतात्मतत्त्वज्ञा, चिन्तितार्थफलप्रदा । | |
| चिन्तामणिः कृपापूर्णा, पापारम्भविमोचिनी | 112011 |
| कल्पवल्लीसमाकारा, कामधेनु शुम्भकरी । | |
| सधर्मवत्सला सर्वा, सद्धर्मोत्सववर्धिनी | ॥२१॥ |
| सर्वपापोपशमनी, सर्वरोगनिवारिणी । | |
| गम्भीरा मोहिनी सिद्धा, शेफालितरुवासिनी | ॥२२॥ |
| अष्टोत्तरशतं स्तोत्ररत्ननामांकमालिकां । | |
| त्रिसंध्यं पठयेत् नित्यं, पापदारिद्यनाशनम् | 115311 |
| दिनाष्ट्रकं त्रिसन्ध्यं यो ध्यानपूजाजपान्वितम् । | |
| नामांकमालिकास्तोत्रं, पठते स वाञ्छितं लभेत् | ાારકાા |
| दिव्यं स्तोत्रमिदं महासुखकरं चारोग्यसंपत्करं । | |
| भूत-प्रेत-पिशाच-दुष्टहरणं पापौघसंहारकम् । | |
| अन्येनार्पितवाञ्छितस्य निलयं सर्वापमृत्युंजयं । | |
| देव्या प्रीतिकरं कवित्वजनकं स्तोत्रं जगन्मङ्गलम् | ।।२५॥ |



श्री पद्मावती स्तोत्र

ॐ जयन्तीभमातङ्गी सर्वदृष्टक्षयंकरी । पद्मासने पद्मदेवी च महापद्मे नमोनमः ॥१॥ देवी त्वं ध्यायिता इन्द्रे पूजिता शिवसंकरे । कृष्णेन संस्तृता देवी-महापद्मे नमोनमः ॥२॥ सावित्रि पतिमाराध्य वासुकै सेविता भृशम् । तेषां संतुक्षते देवी महापद्मे नमोनमः ॥३॥ पद्माम्बरधरा देवी पद्मद्रहनिवासिनी ! पद्मायुधधरा नित्यं महापद्मे नमोनमः ॥४॥ यस्यां प्रसन्नतां पद्मे तस्यां दारिद्रयनाशने । जय त्वं सुखदाता च महापद्मे नमोनमः ॥५॥ देवि ! दारिद्र्यदग्धाहं तन्मेसं संकरीभव । चिंतिता वरदाता च महापद्मे नमोनम: ॥६॥ पद्मावती यस्या गृहे पुजिता जगदीश्वरी । हृदये यस्य वर्तन्ते तस्य सौख्यं निरंतरम् ॥७॥ इदं स्तोत्रं पवित्रं च श्रीधराचार्यभाषितं । एकाग्रमनसा साध्यं तस्य सौख्यं निरन्तरम् ॥८॥ रणे राजकुले चैव दुर्गमे शत्रुसंकटे। महावने महाभीमे विघ्नो यांति दिसो दिसा ॥९॥ अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनं । विद्यार्थी लभते विद्यां सुखार्थी लभते सुखं ॥१०॥ 94

श्री चन्द्रप्रभ विद्यास्तवः

ॐ चन्द्रप्रभ । प्रभाधीश । चन्द्रशेखरचन्द्रभु: । (१) चन्द्रलक्ष्माङ्क । चन्द्राङ्ग । चन्द्रबीज । नमोस्तते ॐ हीं श्री अर्ह श्री चन्द्रप्रभ ! हीं श्री कुरु कुरु स्वाहा । इष्यसिद्धि-महासिद्धितृष्टिपृष्टिकरो भव 11511 द्वादशसहस्रजमो वांछितार्थ फलप्रदः । महित्वा त्रिसंध्यं जापो. सर्वाधिव्याधिनाशनः 11511 स्रास्रेन्द्रमहितः, श्री पांडवनुपस्ततः । श्री चन्द्रप्रभतीर्थेश:, श्रियं चन्द्रोज्जवलां कुरु 11811 श्री चन्द्रप्रभविद्येयं, स्मृता सद्यं फला मृता । सर्वाधिव्याधिविध्वंसकारिणी मे वरपदा 114 11 श्री चन्द्रप्रभ विद्या-ॐ हीँ श्रीँ अर्ह चन्द्रप्रभ हीं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा । (सर्वकार्यमां साधक ज्वाला मालिनी मन्त्र)

ॐ ज्वालामालिनी क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षां क्षः हाः दुष्ट क्ष्मल्यूँ ग्रहान् स्तंभय स्तंभय ठं ठं हां आं ऋौं क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयित हुँ फट् घे घे ।

श्री ज्वालामालिनी देवी माला मन्त्रः

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभ जिनेंद्राय शशाङ्क शंख, गोक्षीर, हार निहार, विमल, धवल गात्राय घाति कर्म निर्मूलनोच्छेदन कराय जाति जरा मरण शोक विनाशन कराय, संसार कांतारोन्मूलन कराय अचिंत्य बल पराऋमाय, अप्रतिहत शासनाय, अप्रतिहत चऋाय, त्रैलोक्य वशं कराय, सर्व सत्व हितंकराय, भव्य लोक वशं कराय, सुरासुरोरगेंद्र मणि गण खचित मुकुट कोठी घटित पाद पीठाय, त्रैलोक्य महिताय, अष्टादश दोष रहिताय, धर्म चक्राधीश्वराय, सर्व विद्या परमेश्वराय कुविद्या अञाय, चतुःस्त्रिशदतिशय सहिताय, द्वादश गण परिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय, अनंत ज्ञानाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सर्वज्ञाय सिद्धाय, बुद्धाय, शिवाय, सत्यज्ञानाय, सत्य बह्मणे, स्वयंभुवे, परमात्मने अच्युताय, दिव्यमूर्तये, प्रभामंडल-मंडिताय, कण्ठ ताल्वोष्ठ पुटव्यापार रहित तत्तदिभष्टं वस्तु कथकं नि:शेष भाषा प्रतिपालकाय, देवेन्द्र धरणेन्द्र, चऋवर्त्यादि शतेन्द्र वंदित पादारविंदाय, पंचकल्याण अष्टमहाप्रातिहार्यादि विभवालंकृताय, वजर्षभनाराचसंहनन चरम दिव्य देहाय, देवाधि देवाय, परमेश्वराय, तत्पाद पंकजाश्रयाय, निवेशिनि देवी शासन देवते त्रिभ्वन जन संक्षोभिणी, त्रैलोक्यसंहार कारिणी, स्थावर-जंगम-कृत्रिम विषय विषसंहार कारिणि, सर्वाभिचार कर्मापहारिणि, पर विद्या छेदिनी, पर मंत्र प्रणाशिनी, अष्टमहानाग कुल उच्चाटिनी, काल दंष्ट्रमृद्कोत्था-

पिनि, सर्व रोगापनोदिनी, ब्रह्माविष्णु-रुद्र-इंद्र चंद्र-आदित्यादि ग्रहनक्षत्र तारा लोकोत्पाद भय पीडा प्रमर्दिनी, त्रैलोक्य महिते, भव्य लोकहितंकरी, विश्वलोक वंशकरि, महाभैरवी, भैवरूपधारिणी, भीमे भीमरूप धारिणी, रौद्रे महारौद्र रूप धारिणी, सिद्धे सिद्धरूपधारिणी, प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर, यक्ष, राक्षस, गरुड़, गंधर्व, किन्नर, किंपुरुष दैत्योरगेंद्र अमर पूजिते ज्वालामाला कराले तत्त दिगन्तराले, महामहिषवाहिनि, त्रिशूल चऋ, झष, पाश शर, शरासन, फलवरद प्रदान विराजमान, षोडषार्द्ध भुजे खेटक कृपाणहस्ते, त्रैलोक्या-कृत्रिमचैत्यालय निवासिनि, सर्व सत्वानुकिप्पिनि, खत्रय महानिधि, सौख्य, सौगत, चार्वाक, मीमांसक दिगंबरादि पूजिते विजयवर प्रदायिनि, भव्यजन संरक्षिणि, दुष्टजन प्रमर्दिनि, कमल श्री गृहित गर्वावलिप्त ब्रह्म राक्षस ग्रह अपहारिणि, शिवकोटी महाराज प्रतिष्ठित भीम लिंगोत्पाटन पटु प्रतापिनि, समस्तग्राहकर्षिणि, ग्रहानुच्छोदिनि, ग्रह कलामुखि नगर निवासिनि, पर्वतवासिनि, स्वयंभूरमणवासिनि, वज्र वेदिकाधिष्ठित व्यंतरावासवासिनि, मणिमय सूक्ष्म घंटनाद किंचिद्रणित नूप्रयुक्त पादारविंदे, वज्र, वैड्यं, मुक्ताफल हरिन्मणि मयुख मालमण्डिल हेम किंकिणी झणत्कार विराजित कणकऋजुसुत्र भूषित नितम्बिनि, वारद नीरद निर्मलायमान सूक्ष्म दुकुल परीत दिव्य तन्मध्ये संध्यापरागारूण मेघ समान कौसुम्भ वस्त्र धारिणि वालार्करुक सन्निभायमान तपनीय वस्त्राच्छादिते, इन्द्रचंद्रकादि मौक्तिकहार विराजित स्तन मण्डले, तारा समृह परितोत्तमांगे, यमराज

लुलायमान महिषासुर मर्दन, दक्षभूत, महामहिष वाहिनि, ताराधर तारे नीहार पटीत पय: पुर कर्पुर शुभ्रायमान विवल धवल गात्रे, भय काल रुद्र रौद्रावलोकित, भालेनेत्रानल विस्फुलिंग समूह सन्निभ ज्वालावेष्टित दिव्य देहिनि, कुलशैल निर्भेदिनी, कृत सहस्र धारायुक्त महाप्रभा मण्डल मण्डित, कुपाणि भ्राज दोर्दण्डे देवि, ज्वालामालिनि अत्र एहि २, पिण्ड रूपे एहि २, नव तत्त्व देहिनि, महामहित मेखला कलित प्रतापे ऐहि २, संसार प्रमर्दिनि ऐहि २, महामहिषवाहने एहि २, कटक कटिसूत्र कुण्डलाभरण भृषिते एहि २, घनस्तिनं किंकिणि नुपूरनादे एहि २, महामहित मेखला सूत्रे एहि २, गरुड गंधर्व देवासुर समिति पृजित पादपंकजे एहि २ भव्यजन संरक्षिणि एहि २, महादृष्ट पुमर्दिनि एहि २, मम ग्रहाकर्षिणी एहि २, ग्रहानुबंधिनी एहि २, ग्रहानुच्छेदिनि एहि २, ग्रहकाल मुखि एहि २, ग्रहोच्चाटनि एहि २, ग्रहमारिणि एहि २, मोहिनि एहि २, स्तंभिनि एहि २, समुद्रधारिणी एहि २, धनु २ कम्प २, कम्पावय २, मंडल मध्ये प्रवेशय २, स्तम्भय २, ॐ -हाँ -हीँ -हूँ -हाँ -हः आह्वानन, जलं गृहाण २, गंधं गृहाण २, अक्षतं गृहाण २, पुष्पं गृहाण २, चरुं गृहाण २, ध्र्पं गृहाण २, दीपं गृहाण २, फलं गृहाण २, अर्घ्यं गृहाण २, ॐ हम्ल्व्युँ महादेवि ज्वालामालिनि -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ द्रीँ-हाँ-हीँ-हूँ-हों -हः देव ग्रहान् आकर्षय २, ब्रह्मा विष्णु रुद्रेन्द्रादित्य ग्रहान् आकर्षय २, नाग ग्रहान् आकर्षय २, यक्ष ग्रहान् आकर्षय २, गंधर्व ग्रहान् आकर्षय २, ब्रह्मसक्षस ग्रहान् आकर्षय २, भूत् ग्रहान् आकर्षय २, व्यंतर ग्रहान् आकर्षय २, सर्व दुष्ट ग्रहान् आकर्षय २, शतकोटी देवतान् आकर्षय २ सहस्रकोटी पिशाच देवतान् आकर्षय २, कालराक्षस ग्रहान् आकर्षय २, प्रेतासिनि ग्रहान् आकर्षय २, वैतालो ग्रहान् आकर्षय २, क्षेत्रवासी ग्रहान् आकर्षय २, हन्तुकाम ग्रहान् आकर्षय २, अपस्मार ग्रहान् आकर्षय २, क्षेत्रपाल ग्रहान् आकर्षय २, भैरव ग्रहान् आकर्षय २, ग्रामादि देवतान् आकर्षय २, गृहादि देवतान् आकर्षय २, कुलादि देवतान् आकर्षय २, चंडिकादि देवतान् आकर्षय २, शाकिनि ग्रहान् आकर्षय २, डाकिनि ग्रहान् आकर्षय २, सर्वयोगिनी ग्रहान् आकर्षय २, रणभूत ग्रहान् आकर्षय २, रज्जूनि ग्रहान् आकर्षय २, जल ग्रहान् आकर्षय २, अग्नि ग्रहान् आकर्षय २, मुक ग्रहान् आकर्षय २, मूर्ख ग्रहान् आकर्षय २, छल ग्रहान् आकर्षय २, चोर्राचिता ग्रहान् आकर्षय २, भूत ग्रहान् आकर्षय २, शक्ति ग्रहान् आकर्षय २, मातंग ग्रहान् आकर्षय २, चांडाली ग्रहान् आकर्षय २, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भव, भवान्तर, स्नेह वैर, बंध सर्व दृष्ट ग्रहान् आकर्षय २, कम्प २, मृत्योरक्षय २, ज्वरं भक्षय २, अनलविषं हर २, कुमारी रक्ष २, योगिनि भक्षय २, शाकिनि मर्दय २, डाकिनी मर्दय २, पुतनी कम्पय २, राक्षसी छेदय २, कोलिका मुद्रा दर्शय २, सर्व कार्यकारिणी, सर्व ज्वर मर्दिनी, सर्वशिक्षा जनप्रतिपादिनी एहि २, भगवती ज्वालामालिनी एकाह्निकं, द्वयाह्निकं, त्र्याह्निकं, चात्र्थिकं, वात्तिकं श्लेष्मिकं पैत्तिकं २, सन्निपातिकं (वेला), ज्वरादिकं पात्रे प्रवेशय २, ज्वलिज्वलि ज्वालय २, मुंच २, मुंचावय २, शिरं मुच २, मुखं मुंच २, ललाटं मुंच २, कंठं मुंच २, बाहुं मुंच २, हृदयं मुंच २, किंट मुंच २, जानुं मुंच २, पादं मुंच २, आच्छेदय २, ऋों भेदय २, -हीं मर्दय २, क्षीं बोधय बोधय हम्र्ल्व्यूं घूर्मय २, र र र र र रां रां सं घं पातय २, पर मंत्रान् स्फोटय २, ॐ -हाँ -हीँ -हूँ-हौँ -हः घे घे फट् स्वाहा, अस्मिन् दलमध्ये प्रवेशय २, पात्रं गृहाण २, आवेशय २, ग्रासय २, पुरव २, खण्ड २, कंप २, कंपावय २, ग्राह्य २, शीर्षं चालय २, भालं चालय २, नेत्रं चालय २, वदनं चालय २, कण्ठं चालय २, बाहुं चालय २, हस्तं चालय २, हृदयं चालय २, ग्रात्रं चालय २, सर्वांगं चालय २, लोलय २, कंप २, कम्पावय २, शीघ्रं अवतर २, गृहाण २, चालय २, आवेशय २, ॐ क्षम्ल्य्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्ली, ब्लूं, द्राँ, द्रीं, क्षाँ क्षीं, क्ष्रूँ क्षाँ क्षः ह्नः सर्व दुष्ट ग्रहान् स्तंभय २, पूर्वं बंधय २, दक्षिणं बंधय २, पश्चिमं बंधय २, उत्तरं बंधय २, ठः ठः ह्रँ फट् २, घे घे रम्ल्व्यूँ ज्वालामालिनी -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ दीँ ज्वल २ र ७, रां २, प्रज्वल २, घग २, धूँ २, धूमांधकारिणी ज्वल २, ज्वलित शिखे, प्रलय धग धगित वदन, देव ग्रहान् दह २, नाग ग्रहान् दह २, यक्ष ग्रहान् दह २, गंधर्व ग्रहान् दह २, ब्रह्म राक्षस ग्रहान् दह २, सर्व भूत ग्रहान् दह २, व्यंतर ग्रहान् दह २, सर्व दुष्ट ग्रहान् दह २, शतकोटी देवतान् दह २, सहस्र कोटी ग्रहान् दह २, सहस्रकोटी पिशाच राजान् दह २, घे घे स्फोटय २, मारय २, दहनाक्षि पलय धग २, धग धिगतमुखि, ॐ ज्वालामालिनी -हाँ -हीँ -हूँ -हीँ -हः सर्व दुष्ट ग्रह हृदयं हं दह दह, पच २, छिन्धि २, भिन्धि २, हः २, हे हे, हं फट् २, घे २, 🕉 भम्ल्व्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्लीं ब्लूँ द्राँ दीं भ्राँ भ्रौं भूँ भ्रौँ भ्र: हा:

सर्व दुष्ट ग्रहान् ताडय २, हूँ फट् २, घे २, ॐ मम्ल्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्लीं ब्लूँ द्राँ द्रीँ म्राँ म्रीँ मूँ म्रौँ म्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् वज्रमय सूच्या अक्षिणी स्फोटय २, अदर्शय २ हूँ फट् २ घे २, ॐ यम्ल्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्लीं ब्लूं द्राँ द्रीं हाँ आँ ऋों क्षीं ग्राँ ग्रीं ग्रूँ ग्रीँ ग्र: हा: सर्वदुष्ट ग्रहान् प्रेषय २, घे २, हूँ जः जः जः, ॐ घम्ल्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्लीं ब्लूं द्राँ दीं घाँ घीं घूँ घों घ: हा: घँ घँ खँ खँ खड़ै रावण सिंद्रद्या घातय २, सच्चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय २, भेदय २, जठरं भेदय २, झं झे खं २, हं हं, हूं फट् २, घे २, झम्ल्यूँ ज्वालामालिनी -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ द्रीँ झाँ झीँ झूँ झु: हा: सर्व दुष्ट ग्रहान् वज पाशेन बंधय २ मृष्टि बंधेन बंधय २, हूँ फट् २, घे घे, खम्ल्यूँ ज्वालामालिनी -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ द्रीं ख़ाँ ख़ीं ख़ूँ ख़ों ख़: हा: सर्व दुष्ट ग्रहान् अंगभंग कुरु कुरु, ग्रीवां भंजय २, हूँ फट् २, घे घे, ॐ छम्ल्ब्यूँ ज्वालामालिनी -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ द्रीँ छुँ छुँ छुँ छुँ छु: हा: सर्व दुष्ट ग्रहान् शस्त्राणि छेदय २, हूं फट् घे घे ॐ ठम्ल्यूँ ज्वालामालिनी हीं क्लीं ब्लूँ हाँ ही ठ्राँ ठ्रीँ ठूँ ठ्राँ ठ्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् विद्युत् पाषाण अस्त्रेण ताडय २, भूम्यां पातय २, फट् २, घे २, ॐ बम्ल्य्यूँ ज्वालामालिनी -हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ दीँ बाँ बीँ बूँ ब्रौं ब्रः हाः सर्व ग्रहान् समुद्रे मज्जय २, हूँ फट् २, घे २, ॐ डम्ल्ब्यूँ ज्वालामालिनी -हीं क्लीं ब्लूँ द्राँ द्रीं ड्राँ ड्रीं ड्रूँ ड्रौं ड्र: हाः सर्वडािकनी मर्दय २, हूं फट् २, घे घे, झौँ झः सर्व शाकिनी मर्दय २ हूँ फट् घे घे सर्व योगिनी तर्जय २ कुरु २ सर्व शत्रून् ग्रासय ग्रासय, खं ६, खादय २, सं तं वं मं हां झं सर्व ग्रहान् उत्थापय २, नट २, नृत्य २, स्वाहा, य य सर्व दैत्यान् ग्रस २, विध्वंसय २, दह २, पच २, पाचय २, धर २, धम २, घुरु २, पुरु २, फुरु २, सर्वोपद्रव महाभयं स्तंभय २, झं २, हं ह, दर २, पर २, खर २, खड्ग शस्त्रेण सिद्धिया घातय घातय, पातय २, चंद्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय, भेदय २, झं २, हं २, खं २, घं २, फट् २, घे २, हां २, आं ऋौं क्ष्वीं क्षौं -हीं क्लीं ब्लूँ द्राँ द्रौं ऋौं क्षीं ४ ज्वालामालिन्या ज्ञापयित स्वाहा ।

ज्वालामालिनीमन्त्र स्तोत्र

ॐ नमो भगवते श्रीचन्द्रप्रभिजनेन्द्राय शशाङ्कशङ्खुगोक्षीरहार-धवलगात्राय घातिकर्मनिर्मूलोच्छेदनकराय जातिजरामरणविनाशनाय त्रैलोक्यवशङ्कराय सर्वासत्विहतङ्कराय सुरासुरेन्द्रमुकुटकोटिघृष्टपादपीठाय संसारकान्तारोन्मूलनाय अचिन्त्यबलपराक्रमाय अप्रतिहतचक्राय त्रैलोक्यनाथाय देवाधिदेवाय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्यापरमेश्वराय कुविद्यानिधनाय,

तत्पादपङ्कजाश्रमनिषेविणि ! देवि ! शासनदेवते ! त्रिभुवन-सन्क्षोमिणि ! त्रैलोक्याशिवापहारकारिणि ! स्थावरजङ्गमविषमविष-संहारकारिणि ! सर्वाभिचारकर्माभ्यवहारिणि ! परिवद्याच्छेदिनि ! परमन्त्रप्रणाशिनि ! अष्टमहानागकुलोच्चाटिन ! कालदुष्टमृतकोत्था-पिनि ! सर्वविष्ठविनाशिनि ! सर्वरोगप्रमोचिन ! ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्र-चन्द्रादित्यग्रहनक्षत्रोत्पातमरणभयपीडासंमर्दिनि ! त्रैलोक्यमहिते ! भव्यलोकहितङ्करि ! विश्वलोकवशङ्करि ! अत्र महाभैखरूपधारिणि ! महाभीमे ! भीमरूपधारिणि ! महारौद्रि ! रौद्ररूपधारिणि ! प्रसिद्ध-सिद्धविद्याधस्यक्षराक्षसगरुडगन्धर्वकिन्नर्राकेपुरुषदैत्योरगरुन्द्रेपुजिते ! ज्वालामालाकरालितदिगन्तराले ! महामहिषवाहने ! खेटककृपाण-त्रिशूलहस्ते ! शक्तिचऋपाशशसमिविशिखपविराजमाने ! षोडशा-र्द्धभूजे ! एहि एहि हाल्व्यं ज्वालामालिनि ! हीं क्लीं ब्लूं फट् द्राँ दीं हाँ हीं हुँ हुँ हुः ह्री देवान् आकर्षय आकर्षय, सर्वदृष्टग्रहान् आकर्षय आकर्षय, नागग्रहान् आकर्षय आकर्षय, यक्षग्रहान् आकर्षय आकर्षय, राक्षसग्रहान् आकर्षय आकर्षय, गान्धर्वग्रहान् आकर्षय आकर्षय, गान्धार्यग्रहान् आकर्षय आकर्षय, ब्रह्मग्रहान् आकर्षय आकर्षय, भूतग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वदुष्टान् आकर्षय आकर्षय, चोरचिन्ताग्रहान् आकर्षय आकर्षय, कटकट कम्पावय कम्पावय, शीर्षं चालय चालय, बाहुं चालय चालय, गात्रं चालय चालय, पाट्टं चालाय चालय, सर्वांडं चालय चालय, लोलय लोलय, धूनय धूनय, कम्पय कम्पय, शीघ्रमवतारं गृण्ह गृण्ह, प्राह्य ग्राह्य, अचेलय अचेलय आवेशय आवेशय हम्ल्यूं ज्वालामालिनि ! हीँ क्लीँ ब्लूँ द्राँ द्री ज्वल ज्वल र र र र र रां प्रज्वल, प्रज्वल प्रज्वल प्रज्वल, धगधगधूप्रान्ध-कारिणि ! ज्वल ज्वल, ज्वलितिशिखे ! देवग्रहान् दह दह, गन्धर्वग्रहान् दह दह, यक्षग्रहान् दह दह, भूतग्रहान् दह दह, ब्रह्मराक्षसग्रहान् दह दह, व्यन्तरग्रहान् दह दह, नागग्रहान् दह दह, सर्वदुष्टग्रहान् दह दह, शतकोटिदैवतान् दह दह, सहस्रकोटिपिशाचराजान् दह दह, घे घे

स्फोटय स्फोटय, मारय मारय, दहनाक्षि ! प्रलय प्रलय, धगधगित-मुखे ! ज्वालामालिनि ! हाँ हीँ हुं हीँ हु: सर्वग्रहहृदयं दह दह, पच पच छिन्द छिन्द, भिन्धि भिन्धि हु: हु: हु: हु: हु: हु: हु: हु: कु फट् फट् घे घे क्ष्म्ल्यूँ क्षाँ क्षीं क्षुँ क्ष्तौं क्षुः स्तम्भय स्तम्भय, हा पूर्वं बन्धय बन्धय, दक्षिणं बन्धय बन्धय, पश्चिमं बन्धय बन्धय, उत्तरं बन्धय बन्धय, भ्म्ल्व्यूँ भ्राँ भ्रीं भ्रुं भ्रों भ्र: ताडय ताडय, म्म्ल्व्युं म्रां म्रीं मुं म्रौं म्र: नेत्रे य: स्फोटय स्फोटय, दर्शय दर्शय, हम्ल्ब्यूँ प्राँ प्रौँ प्रः प्रेषय प्रेषय, धन्ल्यूँ घाँ घीँ घूँ घूँ घाँ घः जठरं भेदय भेदय, हम्ल्य्यूँ झां झीं झूँ झों झः मुष्टिबन्धेन बन्धय बन्धय, खल्व्यूं खाँ खीं खुँ खाँ ख: ग्रीवां भञ्जय भञ्जय, छ्प्ल्च्यूं छ्राँ छ्रीं छूँ छ्रौं छ्: अन्तराणि छेदय छेदय, ठ्प्ल्च्यूं ठ्रां ठ्रीं ठूँ ठ्रौं ठुः महाविद्यापाषाणास्त्रैः हन हन, व्यल्व्यूँ वाँ वीं वूँ वाँ वः समुद्रे ! जुम्भय जुम्भय झौँ झः घौँ डौँ घः सर्वडािकनीः मर्दय मरेय, सर्वयोगिनीः तर्जय तर्जय, सर्वशत्रुन् ग्रस ग्रस, खं खं खं खं खं खं खादय खादय, सर्वदैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय सर्वमृत्युन् नाशय, नाशय, सर्वोपद्रवं महाभयं स्तम्भय स्तम्भय, दह २ पच २ मथ २ ययः २ धम २ धरू २ खरू २ खडुरावणस्विद्या घातय २ पातय २ सच्चन्द्रहासशस्त्रेण छेदय २ भेदय २ झरू २ छरू २ हरू २ फट् २ घे: हाँ हाँ आँ ऋोँ क्ष्वी ही क्ली ब्लूँ द्रां द्री ऋोँ क्षीँ क्षीँ क्षीँ क्षीं ज्वालामालिनी आज्ञापयति स्वाहा ॥

.

सर्वकार्यसिद्धिदायक श्री शान्तिधारा पाठः

॥ मैं हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं वं वं मंमं हंहं संसं तंतं पंप डंडं म्वीं म्वीं क्ष्वीं क्ष्वाँ द्राँ द्रौं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मैं हीं ऋौं मम पापं खण्डय खंडय हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय सिद्धि कुरु कुरु ॥

👸 नमोऽर्ह डॅं म्वीं क्ष्वीं हं सं डं वं व्हः पः हः क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षेँ क्षोँ क्षं क्षः ॥१॥

॥ व नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथाय, तीर्थंकराय रत्नत्रयरूपाय अनंतचतुष्ट्रयसहिताय धरणेन्द्रफणमौलि-मण्डिताय समवसरणलक्ष्मीशोभिताय, इन्द्रधरणेन्द्रचऋवर्त्यादिपूजि- तपादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय जिनराजमहादेवाष्टादशदोष-रिहताय षट्चत्वारिंशद्गुणनंयुक्ताय परमगुरुपरमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यपरमेश्वराय देवाय सर्वसत्त्विहतकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्यापरमेश्वराय त्रैलोक्यमोहनाय धरणोन्द्रपद्मावतीसहिताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय अनेकदैत्यदानवकोटिमुकुटधृष्टपादपीठाय ब्रह्माविष्णु-रुद्र-नारद-खेचरपूजिताय सर्वभव्यजनानन्दकराय सर्व-जीवविघ्ननिवारणसमर्थाय श्रीपार्श्वनाथदेवाधिदेवाय नमोऽस्तु ते श्रीजिनराजपूजनप्रसादाद् मम सेवकस्य सर्वदोषरोगशोकभयपीडा-विनाशनं कुरु कुरु सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ।

॥ व नमो श्रीशान्तिदेवाय सर्वारिष्टशान्तिकराय हाँ हीं हूँ हैं हः असिआउसा मम सर्वविध्नशान्ति कुरु कुरु श्रीसंघस्य (अमुकस्य) मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ।

॥ श्रीपार्श्वनाथपूजनप्रसादाद् मम अशुभान् पापान् छिन्धि छिन्धि, मम अशुभकर्मोपार्जितदुःखान् छिन्धि छिन्धि, मम परदुष्टजनकृतमंत्र-तंत्र-दृष्टि-पृष्टि-छलच्छिद्रादिदोषान् छिन्धि छिन्धि, मम अग्नि-चोर-जल- पर्पव्याधि छिन्धि छिन्धि, मारीकृतोपद्रवान् छिन्धि छिन्धि, डाकिनी-शाकिनी-भूत-भैरवादिकृतोपद्रवान् छिन्धि छिन्धि, सर्वभैरव-देव-दानव-वीरनरनार-सिंह्योगिनीकृतविष्ठान् छिन्धि छिन्धि, भुवनवासि-व्यन्तरज्योतिषीदेवदेवीकृतदोषान् छिन्धि छिन्धि, अग्निकुमारकृत-विष्ठान् छिन्धि छिन्धि, उद्धिकुमारसनत्कुमारकृतविष्ठान् छिन्धि छिन्धि, दीपकुमारभयान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, वातकृमार-

मे घकु मारकृ तिविघ्नान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, इन्द्रादिदशदिक्पालदेवकृतिवघ्नान् छिन्धि छिन्धि, जय-विजय-अपराजित-माणिभद्र-पूर्णभद्रादिक्षेत्रपालकृतिवघ्नान् छिन्धि छिन्धि राक्षस-वैताल-दैत्य-दानवयक्षादिकृतदोषान् छिन्धि छिन्धि, नवग्रहकृतग्रामनगरपीडां छिन्धि छिन्धि, सर्व-अष्टकुलनागजित-विषभयान् सर्वग्रामनगरदेशरोगान् छिन्धि छिन्धि सर्वस्थावर-जंगम-वृश्चिक-दृष्टिविषजातिस-प्पादिकृतिवषदोषान् छिन्धि छिन्धि पर-शत्रुकृतमारणोच्चाटनविद्वेषणमोहनवशीकरणादिदोषान् छिन्धि ॥२॥

सर्वगो-वृषभादि-तिर्यग्मारी छिन्धि छिन्धि,

सर्व-वृक्ष-फल-पुष्प-लता-मारी छिन्धि छिन्धि ॥

उँ नमो भगवित । चक्रेश्विर ज्वालामालिनी पद्मावतीदेवी अस्मिन् जिनेन्द्रभुवने आगच्छ आगच्छ, एहि एहि तिष्ठ तिष्ठ बर्लि गृहाण गृहाण मम धनधान्यसमृद्धि कुरु कुरु, सर्वभव्यजीवानन्दं कुरु कुरु, सर्वदेश-ग्राम-पुर-मध्य-क्षुद्रोपद्रव-सर्व-दोष-मृत्यु-पीडा विनाशनं कुरु कुरु सर्वपरचक्रभयनिवारणं कुरु कुरु सर्वदेशग्रामपुरमध्यक्षुद्रोपद्रव-सर्वदोषमृत्युपीडाविनाशनं कुरु कुरु, सर्वदेशग्रामपुरमध्यसुभिक्षं कुरु कुरु, सर्व विष्णशांतिं कुरु २ स्वाहा ॥

।। व आँ क्रौं हीं श्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विशति-तीर्थंकरमहादेवाः प्रीयन्तां प्रीयन्तां मम पापानि शाम्यन्तु, घोरोपसर्गाः सर्वविघ्नाः शाम्यन्तु । व आँ क्रौं हीं श्रीं रोहिण्यादिमहादेव्यः अत्र आगच्छन्तु आगच्छन्तु सर्वदेवताः प्रीयन्तां प्रीयन्तां ।

(उँ) आँ क्रौं हीं श्रीं वर्धमानस्वामी-गौतमस्वामी-धर्मचक्र-तीर्थाधिष्ठायिकाः देवदेव्यः, श्रीपार्श्वपुरंतीर्थाधिष्ठायिका दिव्यपद्मावतीदेवी वर्धमानविद्याधिष्ठायीन्यः जयाविजयाजयंताऽपराजितादेव्यः सूरिमंत्राधि-ष्ठायिकाः भगवती सरस्वतीदेवी-त्रिभुवनुस्वामिनीदेवी-श्रीदेवी-यक्षराजगणीपिटक-चतुषष्ठिसुरेन्द्रा-षोडशविद्यादेव्य-चतुर्विशतियक्षाः चतुर्विशतियक्षिण्यः प्रियन्तां प्रियन्तां, मम अज्ञान निवारण-सारस्वत-रोगापहारिणीविषापहा रिणीबंधमोक्षणी श्रीलक्ष्मीसंपादनी परमंत्रविद्याछेदिनी दोषनाशिनी अशिवोपशमनी विद्यासिद्धि कुर्वन्तु, मम बाहु-बलीविद्या-सौभाग्या-विद्या-जयविजयादिस्वप्नविद्यासिद्धि कुरुत कुरुत विजया-जया-जयंती-नंदा-भद्रादेव्यः सान्निध्यं कुर्वन्तु कुर्वन्तु स्वाहा.)

हैं आँ क्रौं हीं श्रीं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती महादेवी प्रीयन्तां प्रीयन्तां ।

उँ आँ ऋौं हीं श्रीं माणिभद्रादियक्षकुमारदेवाः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् । सर्विजिनशासनरक्षकदेवाः प्रीयन्तां प्रीयन्तां । श्रीआदित्य-सोम-मङ्गल-बुध-बृहस्पति शुक्र-शनि-राहु-केतवः सर्वे नवग्रहाः प्रीयन्तां प्रसीदंतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवान् जिनेन्द्रः ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधिव्यसनवर्जितम् । अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु च मे सदा ॥१॥ यदर्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतिनित्यमुत्तमम् । शान्तिकं पौष्टिकं चैव, सर्वकार्येषु सिद्धिदम् ॥२॥

॥ शान्तिघोषणा ॥

| रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय जितारये। | |
|--|--------|
| नमः श्रीशांतये तस्मै, विहितानन्तशान्तये | ग्रहा। |
| श्रीशान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसम्पदम् । | |
| श्रीशान्तिदेवता देयाद्, अशान्तिमपनीयताम् | . ।।२॥ |
| अम्बा निहितडिम्भा मे, सिद्धबुद्धसमन्विता । | |
| सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् | แรแ |
| धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । | |
| क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत् फणावली | 11811 |
| चंचच्चऋधरा चारु, प्रवालदलदीधितिः । | |
| चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् | ાષ્ |
| खड्गखेटककोदण्ड-बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः। | |
| तुङ्गगमनाऽच्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे | 11511 |
| मथुरायां सपार्श्व-श्रीसुपार्श्वस्तूपरक्षिका । | |
| श्रीकुबेरा नरारुढा, सुतांकाऽवतु वो भयात् | 11/911 |
| ब्रह्मशान्तिः स मां पायाद्, अपायाद् वीरसेवकः । | |
| श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा | 11.211 |
| श्रीशऋप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । | |
| देवा देव्यस्तदन्येऽपि, संघं रक्षन्त्वपायतः | ।।९॥ |
| श्रीमद्विमानमारुढा, यक्षमातंगसंगता । | |
| सा मां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषु धारिणी | ॥१०॥ |
| _ | |

९०

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

| आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य, मक्षरं व्याप्यं यत् स्थितम् । | |
|---|--------|
| अग्निज्वालासमं नाद-बिन्दु-रेखा समन्वितम् | ।।१॥ |
| अग्निज्वालासमाऋान्तं, मनोमलविशोधकम् । | |
| देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत् पदं नौमि निर्मलम् | 11511 |
| अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः । | |
| सिद्धचऋस्य सद् बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे | 11311 |
| १ व नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, २ व सिद्धेभ्यो नमो नमः । | |
| ३ व्रॅ नमः सर्वसूरिभ्यः, ४ उपाध्यायेभ्यः व्रॅ नमः | 11811 |
| ५ व्रॅ नमः सर्वसाधुभ्यः, ६ व्रॅज्ञानेभ्यो नमो नमः । | |
| ७ हॅं नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यः ८ चारित्रेभ्यस्तु हॅं नमः | ॥५॥ |
| श्रेयसेऽस्तु, श्रियेस्त्वेतत्, अर्हदाद्यष्टकं शुभम् । | |
| स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितम् | ।।६॥ |
| आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत् तु मस्तकम् । | |
| तृतीयं रक्षेत् नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेत्तु नासिकाम् | ॥७॥ |
| पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेत्तु घण्टिकाम् । | |
| सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं, पादान्तमष्टमं पुनः | 11/211 |

| पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वयब्धिपंचषान् । | |
|---|---------|
| सप्ताष्ट्रदशसूर्यांकान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् | 11811 |
| पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचैते ज्ञान-दर्शने । | |
| चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, हीँ सान्तः समलंकृतः | ॥१०॥ |
| ヺ हाँ हीँ हुँ हुँ हैं हाँ हाँ हा | |
| इ असिआउसा सम्यग्- | |
| ज्ञान-दर्शन-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः । | |
| जंबूवृक्षधरो द्वीपः क्षीरोदधिसमावृतः | |
| अर्हदाद्यष्टकेरष्टकाष्ट्राधिष्ठेरलंकृत: | ॥११॥ |
| तन्मध्ये संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः । | |
| उच्चैरुच्चैस्तरस्तारः, तारामण्डलमण्डितः | ॥१२॥ |
| तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम् । | |
| नमामि बिंबमाईन्त्यं, ललाटस्थं निरंजनम् | ॥१३॥ |
| अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितम् । | |
| निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनम् | ॥१४॥ |
| अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् । | |
| तामसं चिरसंबद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् | ग्रद्धा |
| साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । | |
| परापरं परातीतं, परंपरपरापरम् | ।।१६॥ |
| • ९२ • | |

| सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृत्तं भ्रान्तिवर्जितम् । | |
|--|---------|
| निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् | ।।१७॥ |
| ईश्वरं ब्रह्म संबुद्धं, सिद्धं बुद्धं मतं गुरुम्। | |
| ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् | ॥२८॥ |
| अर्हदाख्यस्तुवर्णातः सरेफो बिन्दुमण्डितः । | |
| तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः | ।।१९।। |
| एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । | |
| पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम् | 112011 |
| अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । | |
| वर्णेर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः | ॥२१॥ |
| नादश्चंद्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः । | |
| कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः | 115511 |
| शिरः संलीनईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । | |
| वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः | ॥२३॥ |
| चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ । | |
| 'बिन्दु' मध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ | ાારુકાા |
| पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, 'कला' पदमधिष्ठीतौ । | |
| शिर-'ई' स्थितिसंलीनौ, पार्श्व-मल्लीजिनोत्तमौ | ાારુધાા |

| ऋषभं चाजितं वन्दे, संभवं चाभिनन्दनम् । सुमतिं सुपार्श्वं च, वन्दे श्रीशीतलं जिनम् | ॥२६॥ |
|---|--------|
| श्रेयांसं विमलं वंदे, चानंतं धर्मनाथकम् । शांतिं कुंथुमराईन्तं, निमं वीरं नमाम्यहम् | ાારુગા |
| एतांश्च षोडश जिनान् गाङ्गेयद्युतिसन्निभान् । त्रिकालं नौमि सद्भक्त्या, हराक्षरमधिष्ठितान् | ॥२८॥ |
| शेषाः तीर्थकृतः सर्वे, 'ह-र' स्थाने नियोजिताः । माया बीजाक्षरं प्राप्ताः, चतुर्विशतिरर्हताम् | ॥२९॥ |
| गतराग-द्वेष-मोहाः, सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः | ΙΙοξΙΙ |
| देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित सर्वांगं, मा मां हिंसन्तु पन्नगाः | ॥३१॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु पक्षिणः | ॥३२॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु शूकराः | 115311 |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः | แระแ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु शृङ्गिणः | ॥३५॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु गोनसाः | ॥३६॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु दंष्ट्रिण: | ॥७६॥ |
| | |

| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु वृश्चिकाः | 112811 |
|--------------------------------------|-----------|
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु चित्रका | 115611 |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः | 118011 |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु रेपलाः | ાાકશા |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु दानवाः | ાાકશા |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु खेचगः | ॥६४॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु देवताः | 118811 |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु गक्षसाः | ાાઇવાા |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु मुद्गलाः | ॥४६॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु कुग्रहाः | ॥४७॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु व्यंतराः | 118811 |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु तस्कराः | ॥४९॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु ग्रामिणः | ।।५०॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु भूमिपाः | ાા५૧ા |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः | ાષ્ટ્રા |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु पाप्मनः | ॥५३॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु व्याधयः | ાાષ્ઠ્રમા |
| | |

| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु हिंसकाः | ।।५५॥ |
|--------------------------------------|--------|
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु शत्रवः | ।।५६॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु वह्नयः | ।।५७॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु जृम्भिकाः | ।।५८॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिंसन्तु तोयदाः | ।।५९॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु डाकिनी | ।।६०॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु याकिनी | ।।६१॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु राकिनी | ।।६२।। |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु लाकिनी | ।।६३॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु काकिनी | ાાકશા |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु शाकिनी | ।।६५॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु हाकिनी | ।।६६॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु जािकनी | ।।६७॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु नागिणी | ॥५८॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु जृंभिणी | ।।६९॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु व्यंतरी | 110011 |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु मानवी | ।।७१॥ |
| | |

| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु किन्नरी | ११७२॥ |
|--|--------|
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु दैवं हि | 119311 |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु योगिनी | ।।७४॥ |
| देवदेवस्य० मा मां हिनस्तु भाकिनी | 119411 |
| देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । | |
| तयाच्छादित सर्वांगं, सा मां पातु सदैव हि | ॥ ३थ॥ |
| श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः । | |
| ताभिरभ्यधिकं ज्योतिर्रहन् सर्व निधीश्वरः | 119911 |
| पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासीनः । | |
| स्वर्वासिनोपि ये देवा, सर्वे रक्षन्तु मामितः | 119611 |
| येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः । | |
| ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षन्तु सर्वदाः | ॥७९॥ |
| भवनेन्द्र-व्यंतरेन्द्र-ज्योतिषकेन्द्र-कल्पेन्द्रेभ्यो नमो नमः। | |
| श्रुतावधि-देशावधि-सर्वावधि-परमावधि-बुद्धिऋद्धि- | |
| प्राप्त-सर्वोषधद्धिप्राप्त-अनंतबलद्धि - | |
| प्राप्ततत्वर्द्धिप्राप्त-रसर्द्धिप्राप्त-वैक्रियर्द्धिप्राप्त- | |
| क्षेत्रर्द्धिप्राप्त-अक्षीणमहानसर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः | 110011 |

| दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मृद्गलास्तथा । | |
|--|---------|
| ते सर्वेऽप्युशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः | ॥११॥ |
| र्जं ही: श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी:, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया क्लिन्ना, ऽजिता नित्या मदद्रवा | ॥८२॥ |
| कामांगा कामबाणा च, सानंदा नन्दमालिनी । माया मयाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया | الإكاا |
| एताः सर्वाः महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कान्ति कीर्ति धृति मित | اللاكاا |
| दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्य, श्रीऋषिमण्डलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः | ાઢવા |
| रणे राजकुले वहनौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं | ॥८६॥ |
| राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदं । लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः | ११८७॥ |
| भार्यार्थी लभते भार्यां, सुतार्थी लभते सुतं । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः | 112211 |
| स्वर्णे रौप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्ट्रमहासिद्धिगृहे वसति शाश्वती | ાાજગા |

| भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्धिन वा भूजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकम् | ॥९०॥ |
|---|--------|
| भूतैः प्रेतैग्रहिर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वात-पित्त-कफोद्रेकै-र्मुच्यते नात्र संशयः | ॥९१॥ |
| ॐ भूर्भुर्वः स्वः त्रयीपीठ-वर्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वदितै द्रिष्टै-र्यत् फलं तत् फलं स्मृतौ | ાા૬૨ાા |
| एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे | ॥६३॥ |
| आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलिम् । अष्टसाहस्त्रिको जापः कार्यस्तत् सिद्धिहेतवे | ાાજશા |
| शतमष्टोत्तरं प्रातः, ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति च संपदः | ॥९५॥ |
| अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः उत्थाय यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति | ॥९६॥ |
| दृष्टे सत्यार्हतो बिम्बे भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः | ાાલગા |
| विश्ववंद्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च साऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते | ॥८८॥ |
| | |

| इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं पदम् । | |
|--|--------|
| पठनात् स्मरणात् जापात्, लभते पदमव्ययम् | ।।९९॥ |
| ऋषिमण्डलनामैतत्, पुण्यपापप्रणाशकम् । | |
| दिव्यतेजो महास्तोत्रं, स्मरणात्पठनाच्छुभम् | ।।१००॥ |
| विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, आपदो नैव कर्हिचित् । | |
| ऋद्धयः समृद्ध्यः सर्वाः स्तोत्रस्यास्य प्रभावतः | ।।१०१॥ |
| श्रीवर्द्धमानशिष्येण, गणभृद्गौतमर्षिणा । | |
| ऋषिमण्डलनामैतद् भाषितं स्तोत्रमुत्तमम् | ।।१०२॥ |

गुरुस्तृति

धन्यं दृष्टियुगं दिनं च सफलं प्रागादियं दुषमा चित्ते पोल्लसितः प्रबोधदिवसः ध्वस्तं तमोमण्डलम् । प्राप्तः कल्पतरुगृहे सुरगवी चिंतामणि स्वे करे यद् दृष्टं गुरुराजवक्त्रकमलं संपूर्णचंद्रोपमम् ॥

श्री गुरुपादुका स्तोत्र

अनन्तसंसारसमुद्रतारः नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् । वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादकाभ्याम् 11811 कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावाम्बुदमालिकाभ्याम् । दूरीकृता नम्र विपतितभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् 11511 नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः । मुकाश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥ नालीक-नीकाश-पदाहृताभ्यां नानाविमोहादि-निवारिकाभ्याम् नमज्जनार्भीष्टतित-प्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् 11811 नुपालिमौलिव्रजस्तकांति सरिद्विराजज्झषकन्यकाभ्याम् । नृपत्वदाभ्यां नतलोकपङ्कतेः नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् 11411 पापान्थकारार्कपरम्पराभ्यां तापत्रयाहीन्द्रखगेश्वराभ्याम् जाड्याब्धि संशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥६॥ शमादिषट्कप्रदवैभवाभ्यां समाधिदानव्रतदीक्षिताभ्याम् रमाधवाङ्ग्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् स्वार्चापराणामखिलेष्टदाभ्यां स्वाहा सहायाक्ष धुरन्धराभ्यां स्वान्ताच्छ भावप्रद पूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥८॥ कामादि सर्प व्रज गारुडाभ्यां विवेक वैराग्य निधि प्रदाभ्याम् । बोध प्रदाम्यां द्रतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्

भैख क्षेत्रपाल स्तोत्र

यँ यँ यक्षराजं दश दिशि धगितं भूमि कंपायमानं, सँ सँ सँ संहारम्ति शिरम्कृट जटा शेखरं चंद्रबिम्बं । दँ दँ दर्घिकायं विकृत नखमुखं मूर्ध रोमं करालं पँ पँ पापनाशं प्रणमत् सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥१॥ रँ रँ रं रक्तवर्णे करकृतजिटलं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालं, घँ घँ घौष घोषं घव घव घटितं घुर्घरा राजघोषं । कँ कँ कालरूपं दिगिदिगि दिगितं ज्वालितं उग्रतेजं तँ तँ तँ दिव्यदेहं प्रणमत् सततं भैखं क्षेत्रपालं ॥२॥ लँ लँ लँ लंब लंबं ल ल ल ल लितं दीर्घजिह्वाकरालं, धुँ धुँ धुम्रवर्णे स्फुट विकृतमुखं भासूरं भीमरूपे। क्तँ क्तँ कं कंडमालं रुदित मय मयं ताम्र नेत्रं विशालं नँ नँ नग्नरूपं प्रणमत् सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥३॥ वँ वँ वायवेगं प्रलय परिवृतं ब्रह्मरूपं स्वरूपे, खँ खँ खँ खड्गहस्तं त्रिभ्वननिलयं कालरूपं प्रशस्तं । चँ चँ चँ चंचलत्वं चलचल चलितं चालितं भूतवृन्दं मँ मँ मायरूपं प्रणमतु सततं भैखं क्षेत्रपालं ॥४॥ शँ शँ शँ शंखहस्तं शशिकर धवलं यक्षसंपूर्ण तेजं, मँ मँ मायमायं कलवकुल कुलं मंत्रमुर्ति सुतत्त्वं ।

घे घे भूतनाथ किलि किलितवचो गृहण गृहणालुलंतं अँ अँ अँ अंतरिक्षं प्रणमत् सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥५॥ खँ खँ खँ खड्गभेदं विषममृतकरं कालकालांधकारं, क्षीं क्षीं क्षिप्रवेगं दह दह दहनं नेत्र संदीप्यमानं । हूँ हूँ हूं हंकारनादं हरिहर हिसतं एहि एहि प्रचण्डं मँ मँ मँ सिद्धनाथं प्रणमतु सततं भैखं क्षेत्रपालं ॥६॥ सँ सँ सँ सिद्धयोगं सकलग्णमयं देवदेवं प्रसन्नं, यँ यँ यज्ञनाथं हरिहरवदनं चन्द्रसूर्याग्नि नेत्रं । जँ जँ यक्षनाथं वसुवरुण सुरासिद्ध गंधर्वनागं रूँ रूँ रूँ रुद्ररूपं प्रणमत् सततं भैखं क्षेत्रपालं ॥७॥ हँ हँ हँ हंसघाषं हसित कुहकुहाराव रौद्राट्टहासं, यँ यँ यक्षसतं शिरकनक महाबद्ध खड्गांगपाशं । रँ रँ रँ रंगरंगं प्रहसितवदनं पिंगकस्म स्मशानं सँ सँ सँ सिद्धनाथं प्रणमतु सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥८॥ इत्येवं भावय्क्तः पठित च नियतं भैरवस्याष्टकं यो, निर्विघ्नं दु:खनाशं त्वसुरभयहरं शाकिनी डाकिनीनां । त्रासोनो व्याघ्रसर्पधृति वहति सदा राजशत्रोस्तथाऽज्ञात् सर्वे नश्यन्ति द्रा ग्रहगण विषमाश्चितिताऽभीष्ट्रसिद्धिः ॥९॥

803

श्री क्षेत्रपाल अर्चना

क्षेत्रपालाय यज्ञेऽस्मिन्, अत्र क्षेत्राधिरक्षणे । बर्लि ददामि यस्याग्रे, वेद्यां विघ्न विनाशिने ॥१॥ ॐ आँ ऋोँ हीँ अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैख, अपराजित पंच क्षेत्रपालाः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं । सद्येनाति स्गंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च। स्त्रपनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं ॥२॥ 🅉 आँ क्रों हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैख, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः तैलम् समर्पयामि स्वाहा ॥ सिंदुरैरारुणाकारै:, पीत वर्णी सुसंभवै: । चर्चनं क्षेत्रपालस्य, सिंदुरैः प्रकरोम्यहं ॥३॥ 🕉 आँ क्रों हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैख, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः सिंदुरं समर्पयामि स्वाहा ॥ सद्यपुतैः महास्त्रिग्धैः, सुमांगल्यैः सपिंडकैः । क्षेत्रपाल मुखे दद्यात्, गुड़ं विघ्न विनाशकै: ॥४॥ ॐ आँ ऋोँ हीँ अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो गुड़ं समर्पयामि स्वाहा ॥

तिल पिंडस्तु पिंडेन, माषस्य बकुलादिभिः । ददामि क्षेत्रपालाय, विश्वविघ्नविनाशिने ॥५॥ 🕉 आँ ऋाँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः तिलं समर्पयामि स्वाहा ॥ भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकभाल ! दंष्टांकराल ! जिनशासन रक्षपाल ! तैलादि जन्मगुड चन्दन पृष्प धुपै: । भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले ॥६॥ 🕉 आँ ऋाँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ॥

अथाप्रक

क्षीर हरि गौर नरिपुर वारि धारया, मंद बुँद चन्दनादि सौरभेन सारया । भत प्रेत राक्षसादि दृष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥१॥ 🕉 आँ ऋाँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः जलं समर्पयामि स्वाहा ॥

अर्क तर्क वर्जनैरनर्घ चन्द्रनन्दनै:. कंकमादि मिश्रितैः रणद मिष्ट पदाश्रितैः । भृत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥२॥ 🕉 आँ क्रोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः चन्दनं समर्पयामि स्वाहा ॥ औषधीश सिंधुफेन हारभास मुज्ज्वलै:, अक्षतैः सुलक्षणैः जाति खंड वर्जितैः । भत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥३॥ 🕉 आँ क्रोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः अक्षतं समर्पयामि स्वाहा ॥ पारिजात वारिजात कुन्द हेम केतकी, मालती स्चंपकादि सार पुष्प मालया ॥ भृत प्रेत राक्षसादि दृष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥४॥ ॐ आँ क्रोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यः पुष्पं समर्पयामि स्वाहा ॥ व्यंजनेन पायसादिभिः समं लसद्रसैः, मोदकोदनादि स्वर्ण भाजनं सुसंस्थितैः । भत प्रेत राक्षसादि दृष्ट कष्ट नाशनं,

शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपालं चर्चनं ॥५॥ 🕉 आँ क्रोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा ॥ रत्न धेनु सर्पिषादि दीपकैः शिखोज्ज्वलैः, वटि धार तोय कोप कंपरूप वर्जितै: । भत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपालं चर्चनं ॥६॥ 🕉 आँ क्रोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव. अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो दीपं समर्पयामि स्वाहा ॥ शिल्पिता सिता गुरु प्रधुप केल मिश्रितै:, वाद्यमान वर्धमान माननी मनोहरै: । भृत प्रेत राक्षसादि दृष्ट कष्ट नाशनं. शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपालं चर्चनं ॥७॥ ॐ आँ ऋोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो धूपं समर्पयामि स्वाहा ॥ श्री फलैश्च कर्करी सुदाडिमादिभि: फलै:, स्वादिमष्ट सौरभादि जंजरादि मोदनै: । भूत प्रेत राक्षसादि दृष्ट कष्ट नाशनं, शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥८॥ ॐ आँ ऋोँ हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो फलं समर्पयामि स्वाहा ॥

जीवनासिताऽगुरू द्रवाक्षतैः प्रसूनकैः,
चारु चरु प्रदीपकैः धूपकैः फलोत्करैः ।
भूत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं,
शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥
ॐ आँ कोँ ह्रीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव,
अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ॥
लक्ष्मी धान्यकरं जगत् सुखकरं सुदीर्घ कायावरं ।
रात्रौजागरवाहनं सुखकरं वरवार पाणिधरं ।
निर्विघ्नं भय नाशनं भयहरं भूतादि रक्षाकरं ।
वन्दे श्री जिन सेवकं हरिहरं श्री क्षेत्रपालं परं ॥

.चरा**म**ाळ

जयमाला

सुरासुर खेचित पूजित पाद, गुणावर सुन्दर कृत शुभनाद ।
मनोहर पन्नग कण्ठ विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥१॥
सुडािकन शािकन नाशन वीर, सुकािकन रािकन भ्रंशन धीर ।
अनुपम मस्तक शोिभत भाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥२॥
सुलािकन हािकन पन्नग त्रास, कुभूपित तस्कर दुिभक्ष नाश ।
निशाकर शेखर मंडितमाल, सदा शुभ हो जयक्षेत्र सुपाल ॥३॥
समुद्गल साद्वल लूकर वृन्द, सुराक्षस भोजन दुर्लभकन्द ।
सदामल कोमल अङ्ग विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥४॥

सुचित्रक कुंजर सागरपार, सुदुर्जन सेचन शत्रु संहार। स्कम्पित किन्नर भूत रसाल, सदा श्भ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥५॥ सुऋद्धि समृद्धि सुदायक सूर, सुपुत्र सुमित्र कलत्र कपूर। सुरंजित वासुर कांति विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥६॥ सुकन्दुर कुण्डल हार सुवाद्य, सुशेखर सुस्वर किकिनि नाद । भयंकर भीषण भासूर काल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥७॥ सुकामिन खेलत दिव्य शरीर, सुवाहन हासन मोदन धीर। सुभाषत राजत विश्व विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥८॥ सुथापित निर्मल जैन सुवाक्य, न कंपित दुर्भिक्ष दुस्तर साक्य । प्रकाशित जैन सुधर्म स्साल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥९॥ सुभाषित क्षेत्र सुभव्य सुवंश, महोदय जैन सरोवर हंस । महाशुभ सागर केलि विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥१०॥

मालिनी

असम सुख सुसारं तीक्ष्ण दॅंष्ट्रा करालं । रचकर करज ढीलं दीर्घ जिह्वा करालं ॥ सुघट विक्रत चक्रं शान्ति दास प्रशस्तं । भजतु नमतु जैनं भैरव क्षेत्रपालं ॥ ॐ आँ क्रों हीं अत्रस्थ विजयभद्र, वीरभद्र, मणिभद्र, भैरव, अपराजित पंच क्षेत्रपालेभ्यो, अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ॥

॥ कल्पसूत्रांश ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए, इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिए, उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिद्वावणिया-समिए. मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते उवसंते, परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अर्किचणे, छिन्नगंथे, निरुवलेवे, कंसपाइ इव मुक्कतोए, संखे इव निरंजणे, जीवे इव अप्पडिहयगई, गगणमिव निरालंबणे, वाऊव्व अपडिबद्धे, सारयसलिलं व सुद्धिहियए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, कुम्मो इव ग्तिंदिए, खिंगिविसाणं इव एगजाए, विहग इव विष्यमुक्के, भारंडपक्खी इव अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोंडीरे, वसभो इव जायथामे, सीहो इव दुद्धरिसे, मंदरो इव अप्पकंपे, सागरो इव गंभीरे, चंदो इव सोमलेस्से, सूरो इव दित्ततेए, जच्चकणगंच्च जायरूवे, वसुंधरा इव सव्वफासविसहे, सुहुय-हुयासणे इव तेयसा जलंते,

णित्थ णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पिडबंधो भवइ । से य पिडबंधे चउिव्वहे पण्णते, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ सिचत्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु । खित्तओ-गामे वा, नगरे वा, अरण्णे वा, खित्ते वा, खले वा, घरे वा, अंगणे वा, नहे वा । कालओ-समए वा, आविलयाए वा, आणपाणुए वा, थोवे वा, खणे वा, लवे वा, मुहुत्ते वा, अहोरत्ते वा, पक्खे वा, मासे वा, उऊवा, अयणे वा, संवच्छरे वा, अण्णयरे वा दीहकालसंजीए वा। भावओ-कोहे वा, माणे वा, मायाए वा, लोभे वा, भए वा, हासे वा, पिज्जे वा, दोसे वा, कलहे वा, अब्भक्खाणे वा पेसूने वा, परपरिवाए वा, अरहरई वा, मायामोसे वा, जाव मिच्छादंसणसल्ले वा. तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवड ॥११८॥

श्री शान्तिनाथ स्तोत्र

| विश्वातिशायिमहिमा, ज्वलत्तेजोविराजितम् । शान्ति शान्तिकरं स्तौमि, दुस्तिव्रातशान्तये | ॥१॥ |
|---|-------|
| षोडशविद्यादेव्योऽपि, चतुषष्टिसुरेश्वराः । ब्रह्मादयश्च सर्वेऽपि, यं सेवन्ते कृतादराः | 11711 |
| मुँ हीं श्री जये विजये, मुँ अजये परैरिप । मुँ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु शान्ति महाजये | แรแ |
| न क्वापि व्याधयो देहे, न ज्वरा न भगंदरा: । कासश्वासादयो नैव, बाधन्ते शान्तिसेवनात् | ાાજાા |
| यक्षभूतिपशाचाद्या, व्यंतरा दुष्टमुद्गलाः । सर्वे शाम्यन्तु मे नाथ ! शान्तिनाथसुसेवया | ાહ 11 |

उपदेश श्लोक

परोपकारः सततं विधेयं, स्वशक्तितो ह्यत्तमनीतिरेषा । न स्वोपकाराच्च स भिद्यते. तत. तं कुर्वतैतद् द्वितयं कृतं स्यात् ॥ (उपदेशस्ताकर) पंचनमुकारो खल् विहिदाणं सत्तिओ अहिंसा च इंदियकसायविजओ एसो धम्मो सहपओगो । (उपदेशपद) अहिंसा ध्यानयोगश्च, रागादीनां विनिग्रहः । साधर्मिकानुरागश्च सारमेतज्जिनागमे ॥ जं चरणं पढमगुणो जतीण मुलं तु तस्स वि अहिंसा । तप्पालणे च्चिय तओ जडयव्वं अप्पमत्तेण । नाणं पगासगं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो तिण्हं पि समायोगे मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥ जत्थ य विसयविराओ, कसायचाओ गुणेषु अनुराओ । किरियासु अपमाओ, सो धम्मो सिवसुहोवाओ ॥ जह जह रागदोष विलिजन्ती तह तह पयहिअव्वं।



શ્રી અમરહંસગણિવિરચિત શ્રી વર્ધમાનવિદ્યા જાપવિધિ

- (૧) આ વિધિ નમસ્કાર સ્વાધ્યાયાદિ ગ્રંથના આધારે તૈયાર કરી છે.
- (૨) ઇર્યા ૦ કરી પદ્માસને બેસવું પછી...શ્રી

तीर्थंकरगणधरप्रसादात् मम एष योगः फलतु ।

એમ બોલવું

- (૩) હાથ જોડી નમસ્કારમહામંત્ર અને ઉવસ્સગ્ગહરં ત્રણવાર બોલવું (વાસક્ષેપ હાથમાં લઈ)
- (૪) દેવીદેવીઓના સહાયક મંત્ર-

र्वं नमो अरिहंताणं भगवंताणं भगवईए सुअदेवयाए संतीदेवीए चउण्हं लोगपालाणं नवण्हं गहाणं दसण्हं दिग्पालाणं षोडशविद्यादेव्ये स्तंभनं कुरु कुरु र्वं ऐं अरिहंतदेवाय नमः स्वाहा ।

(વાસક્ષેપહાથમાં લઈને ત્રણવાર મંત્ર બોલીને ત્રણવાર વાસક્ષેપ કરવો)

- (પ) પાંચે અંગ ઉપર હાથ ફેરવી પવિત્ર બનાવવા.
- (१) (भूभिशुद्धि मंत्र → व्रॅ भूरिसभूतधात्री सर्वभूतिहते भूमिशुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

આ મંત્ર બોલી ત્રણવાર પટ પધરાવવાની જગ્યાએ (દક્ષિણા-વર્તથી) અને પોતાની ચારે બાજુ વાસક્ષેપ કરવો. (મંત્ર એકવાર બોલવો)

(७) धेनुभुद्राधी o 👸 अमृते अमृतोद्भवे अमृतवाहिनी अमृतवर्षिणी-अमृतं स्नावय स्नावय स्वाहा ।

એમ ત્રણવાર બોલી અમૃતકુંડ કલ્પવા.

(८) પંચાક્ષરમંત્રસ્થાપના → ''हाँ हीं हूँ हीं हः''

એમ ત્રણવાર જમણા હાથની અંગુષ્ઠ, તર્જની, મધ્યમા, અનામિકા અને કનિષ્ઠા આંગળીઓને સ્પર્શ કરતા અનુક્રમે બોલવું. તથા હૃદયમાં પંચપરમેષ્ઠી ચિંતવવા

(८) पंथांगरनानमंत्र → '' ईं अमले विमले सर्वतीर्थजले पाँ पाँ वाँ वाँ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।

(આ મંત્ર બોલતા ખોબામાં સમગ્રતીર્થોનું પાણી છે, એવો વિચાર કરી લલાટથી માંડી પગના તળીયા સુધી સ્નાન કરું છું એવો વિચાર કરવો)

(१०) वस्त्रशुद्धिमंत्र → '' मुँ हीं क्ष्वीं क्ष्वीं पाँ पाँ वस्त्रशुद्धि कुरु कुरु स्वाहा''।

(આ મંત્ર બોલતાં બોલતાં વસ્ત્રો ઉપર હાથ ફેરવી વસ્ત્રશુદ્ધિ કરવી)

(११) क्ष्मषद्दर्भात्र → ''ईं विद्युत्स्फुलिंगे महाविद्ये मम सर्व-कल्मषं दह दह स्वाहा''।

(આ મંત્ર ત્રણવાર બોલતાં ત્રણવાર ભુજાઓ પર સ્પર્શ કરીને પાપનું દહન કરવું)

(9.7) हृद्ध4 (9.7) ह्यू (9.7) क्ष्वीं क्ष्वीं स्वाहा''।

(આ મંત્ર ત્રણવાર બોલતાં ડાબા હાથે ત્રણવાર હૃદયસ્પર્શ કરવો)

(૧૩) રક્ષામંત્ર →

ightarrow મસ્ત \dot{s} ä

→ ડાબાહાથના સાંધે क

→ ડાબીકમર रु

कु → ડાબાપગે

स्रे → જમણાપગે

स्वा \rightarrow %भंधी \pm भंश

→ જમણા હાથના સાંધે. हा

આ મંત્રોચ્ચાર વખતે જમણા હાથે તે તે સ્થાને સ્પર્શ કરવો. આમ ઉલટ કરવું આવી રીતે સુલટ-ઉલટ ત્રણ વખત કરતા છેલ્લે 👸 આવે)

મંત્રપ્રભાવ કુસ્વપ્ર, કુનિમિત્ત, અગ્નિ, વીજળી, શત્રુ આદિથી રક્ષણ થાય છે.

(૧૪) સકલીકરણ = પંચભૂતતત્ત્વશુદ્ધિ મંત્ર

| મંત્ર → | क्षि | प | ð | स्वा | हा । |
|---------------|--------|-------|-------|------|-------|
| સ્પર્શસ્થાન → | જાનુ, | નાભિ, | હૃદય, | મુખ, | શિખા |
| વર્ણકલ્પના → | પીત | શ્વેત | રક્ત | હરિત | નીલ |
| ત πવ → | પૃથ્વી | જલ | અગ્નિ | વાયુ | આકાશ. |

(ઉપરવત્ ત્રણવાર ઉલટ-સુલટ કરી તે-તે સ્થાને અક્ષરો કલ્પવા)

(૧૫) રક્ષાકવચ = આયુધમંત્ર :

- मुँ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष ।
- इं नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष रक्ष ।
- मं नमो आयरियाणं शिर्षं रक्ष रक्ष । ते...ते स्थाने अभुशा ढाथथी स्पर्श કरवो
- र्जं नमो उवज्झायाणं कवचं भव भव डाथ-पगनो स्पर्श કरवो
- हैं नमो लोए सव्बसाहूणं आयुधं भव भव तर्श्वनी - अने मध्यमा લાંબી કરવી. (આ મંત્ર માત્ર એક વાર બોલવો)

• ११६ •

हाँ हीं हूँ हैं हाँ હૃદયમાં કંઠમાં તાળવામાં ભૂમધ્યે, બ્રહ્મરંધ્રમાં (૧૬) પંચમંત્રાક્ષર = અંગન્યાસ

બે અંગૂઠામાં ''नमो अस्हिंताणं'' બોલીને ન્યાસ કરવો. બે તર્જનીમાં ''नमो सिद्धाणं'' બોલીને ન્યાસ કરવો બે મધ્યમામાં ''नमो आयस्याणं'' બોલીને ન્યાસ કરવો બે અનામિકામાં ''नमो उवज्झायाणं'' બોલીને ન્યાસ કરવો. બે કનિષ્ઠામાં ''नमो लोए सव्वसाहूणं'' બોલીને ન્યાસ કરવો. પછી

नमो अरि० नमो सिद्धाणं नमो आय० नमो उव० नमो लोए० (क्रमशः डाजा हाथे न्यास करवो पंचपरभेष्ठीनी धारणा करवी) आ मंत्र मात्र એक्टवार गणवो.

(૧૭) "∄ ∄ नमः" આ મંત્ર બોલી જમણા હાથે પટબંધન ઉપર વાસક્ષેપ કરવો. પછી તેને (મંત્રોચ્ચાર વખતે વાસક્ષેપ હાથમાં રાખવો નમસ્કાર કરવો) પછી…પટબંધન ખોલવું અને પટને નમસ્કાર કરી બે હાથે પટને ઉપાડી મોરપીંછીથી પૂંજી પટને યોગ્યસ્થાને સ્થાપન કરવો. મધ્યબિંદુથી સમગ્ર પટના આવર્તોની વાસક્ષેપ પૂજા કરવી. (વર્ધમાન વિદ્યાથી)

- (૧૮) પટ તરફ બંને હાથ ચત્તા રાખી નવકારથી સ્થાપના કરવી.
- (१૯) १ आड्वान पूक्षभंत्र → '' 👸 ह्रीं नमोऽस्तु भगवन् !

वर्धमानस्वामिन् ! अत्र एहि एहि संवौषट् ।''

આહ્વાનીમુદ્રા → ૫ટ તરફ ચત્તા હાથ રાખી અનામિકાને બંને અંગુઠા જોડવા

२ स्थापनापूळामंत्र \rightarrow '' हीं नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमानस्वामिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः'' ।

સ્થાપનીમુદ્રા → પટ તરફ ચત્તા હાથ રાખી અનામિકાને બંને અંગુઠા જોડવા.

3. संनिधानपूर्क्षभंत्र→ '' मुँ हीं नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमानस्वामिन् ! मम संनिहितो भव भव वषट् ।

સંનિધાની મુદ્રા → બંને હાથની મુક્રીઓ સામસામે રાખી અંગુઠા ઊંચા કરવા.

४. સંનિરોધના પૂજામંત્રightarrow '' $\ddot{\mathbf{J}}$ हीं नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान-स्वामिन् ! पूजान्तं यावदत्रैव स्थातव्यम्''।

સંનિરોધિની મુદ્રા → બે હાથની મુક્રી સામસામે રાખી અંગુઠો મુક્રીનો અંદર રાખવો.

અવગુંઠની મુદ્રા \rightarrow બે મુકી સામસામે રાખી બે તર્જની સીધી લાંબી કરવી.

આ પાંચે મુદ્રાએ વર્ધમાન विद्याना અધિષ્ઠાયકને આશ્રયીને પણ કરવી, પરંતુ... મંત્રમાં भगवन् ! वर्धमानस्वामिन् ! ने બદલे.. वर्धमानिवद्याधिष्ठायक...इत्यादि બોલવું.

(૨૦) છોટિકા — જમણા હાથથી ચપટી તે તે દિશામાં મંત્રોચ્ચાર પૂર્વક વગાડવી.

- ૧. બેઠા હોય તે દિશામાં સામે બે ચપટી अ, आ ।
- २. જમણા હાથે इ, ई,
- उ. पाछण उ, ऊ ।
- ૪. ડાબાહાથે ए, ऐ ।
- પ. મસ્તક ઉપર ओ, औ ।
- **દ. નીચે...अં, અઃ** । (માત્ર એક વખત)
- (२१) संજीवनी ५२ ९ मंत्र → '' मुँ हीं नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमान-स्वामिन् ! अत्र अमृतझरणेण संजीवी भवतु संजीवी भवतु (आ मंत्र धेनुभुद्राधी એક वार બોલવો)
- (२२) '' मुँ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमानस्वामिन् ! गंधादीन् गृहाण गृहाण नमः'' (આ મંત્ર અંજલીમુદ્રાથી એકવાર બોલવો) પૂર્વવત્

- અધિષ્ઠાયકને આશ્રયીને આ બે મંત્ર બોલવા.
- (૨૩) વર્ધમાનવિદ્યામૂલમંત્ર એક વખત બોલી પટ ઉપર વાસક્ષેપ કરવો.
- (૨૪) માનસોપચાર→
- ''कं'' पृथ्व्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ।
- ''हं'' आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ।
- ''यं'' वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि ।
- ''रं'' वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ।
- ''सं'' सर्वोपचारात्मकं द्रव्यं समर्पयामि ।

આમ કલ્પીને જમણા હાથે પટ ઉપર વાસક્ષેપ કરવો.

- (૨૫) ખમા. દઈ ઇચ્છા. સંદિ. ભગ. સાધિષ્ઠાયક સમગ્ર વર્ધમાનવિદ્યા આરાધનાર્થ કાઉ. કરું ? ઇચ્છં, સાધિ. વર્ધમાનવિજ્જાએ કરેમિ કાઉ. વંદણવત્તિ. અન્નત્થ…ચાર લોગ. (સાગર. ગં. સુધી) પારી પ્રગટ લોગ.
- (૨૬) ૧. સૌભાગ્યમુદ્રા, ૨. પરમેષ્ઠિમુદ્રા ૩. પ્રવચનમુદ્રા ૪. સુરભિમુદ્રા પ. અંજલિમુદ્રા આ દરેક મુદ્રાએ વર્ધમાનવિદ્યા ગણવી. પ્રવચન-મુદ્રામાં ડાબો હાથ છાતીએ લગાડવો.
- (२૭) प्राણायाम → ૧. જમણી નાસિકા દબાવી ડાબીથી શ્વાસ કાઢવો °થાસ કાઢતા પૂર્વે ''रागात्मकं रक्तवायुं विसर्जयामि'' બોલવું
 - ર. ડાબી નાસિકા દબાવી જમણીથી શ્વાસ કાઢવો. શ્વાસ કાઢતા પૂર્વે

- ''द्रेषात्मकं कृष्णवायं विसर्जयामि'' બોલવું.
- ૩. સમતાભાવ લાવવા જમણી નાસિકા દબાવી ડાબીથી શ્વાસ લેતી वभते ''सत्त्वात्मकं शुक्लवायं धारयामि'' બોલવું तथा...पांथ भुद्रा (ઉપર કહેલી) વર્ધમાનવિદ્યાને બતાવવી પછી શ્વાસ છોડવો.
- (૨૮) વર્ધમાન વિદ્યાનો જાપ શરૂ કરતા પૂર્વે.
- ૧. અંજલીમુદ્રાથી સંકલ્પ કરવો → વિક્રમ સં∘.. વર્ષે...માસે... તિથૌ ... વાસરે .

आचार्यश्री...शिष्य स्वनाम...मम दुरितक्षपणार्थं सर्वेषां शिव-शान्ति-तृष्टि-पृष्टि-कल्याणार्थं

वर्धमानविद्याध्यानं जपं करोमि । जापे मम एकाग्रचित्तता भवत् ।

- २. ''इमं विज्जं पउंजामि सिज्झउ मे पसिज्झउ'' आभ બોલવું તેથી બધો જાપ સફળ થાય છે.
- (२८) वर्धमानविद्या मंत्रनो १०८ वार अप अरवो (जापे मेरुल्लङ्गन-भूकंपन-ओष्ठचालन-दंतविवृत्तित्यागः) પછી... પટને આંગળીથી સ્પર્શ કરવો. પછી અસ્ત્રમુદ્રા વડે આસન હલાવવું

અસ્ત્રમુદ્રા → બંને હાથની તર્જની મધ્યમા સીધી સામે કરી અંગુઠો બાકીની આંગળીથી અંદર દબાવવો.

(૩૦) અંજલી જોડી.

हुँ आह्वाहनं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम् । पूजाविधिं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ! ॥१॥ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम् । तत्सर्वं कृपया देव ! क्षमस्व परमेश्वर ! ॥२॥

(૩૧) ઉત્થાપન → આ બે શ્લોક બોલી નવકારથી બે ચત્તા હાથ વડે ઉત્થાપન કરવું. પછી…કનિષ્ઠા આંગળીથી ક્રમસર ચારે આંગળી વાળવી.

(૩૨) વિસર્જનમંત્ર \rightarrow '' मुँ ह्वाँ नमोऽस्तु भगवन् ! वर्धमानस्वामिन् ! पुनरागमनाय स्वस्थानं गच्छ गच्छ'' । એમ બોલતા વિસર્જનમુદ્રાથી વિસર્જન કરવું (ત્રણવાર)

પૂર્વવત્...અધિષ્ઠાયકને આશ્રયીને પણ આ મંત્ર બોલવો.

(૩૩) વર્ધમાનવિદ્યાસ્તવ બોલવું આ (પુસ્તક પેજ નંબર ૩૪)

પ્રભુવીર! વસ્ત્ર પર લાગતો ડાઘ અમે દૂર કરી દઈશું. શરીર પર ચોંટતી ધૂળ તો. અમારાથી દૂર થઈ જશે પણ...કર્મનાશના ક્ષેત્રે લગભગ મૂર્ચ્છતદશામાં જીવતા અમારા જાલિમ પ્રમાદને આપે જ દૂર કરવો પડશે. કારણકે અમો શરીર નિદ્રાની સાથે મોહનિદ્રાના પણ એટલા જ ભોગ બન્યા છીએ!

વાસક્ષેપ મંત્રવાની વિધિ

અનામિકા આંગળીથી વાસક્ષેપના થાળમાં વચ્ચે દક્ષિણાવર્તના આકારે ત્રણ આંટા કરીને ઉપર સ્વસ્તિક અને તેની મધ્યમાં 👸 ને આલેખવો. પછી... ૧. પૂર્વથી પશ્ચિમ ૨. ઉત્તરથી દક્ષિણ ૩. ઈશાનથી નૈઋત્ય ૪. અગ્નિથી વાયવ્ય, આ ક્રમે ચાર રેખાઓ કરી આઠ આરાવાળું ચક્ર આલેખવું. પછી... મધ્યમાં મૂળબીજ ह્યાં આલેખવો ह્યાં ના છેડેથી દક્ષિણાવર્ત આકારે સાડા ત્રણ આંટા આપવા. અને છેડે क्रौं આલેખવો ત્યારબાદ ह्યાં ની સામે.

- ★ पूर्व दिशाभां 👸 हीँ नमो अस्हिताणं नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर यिंतवन.
- ★ અિનમાં 👸 ह्रीं नमो सिद्धाणं ની સ્થાપના. મનથી મંત્રાક્ષર ચિંતવન.
- ★ दक्षिशमां 👸 हीँ नमो आयरियाणं नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर ચિંતવન.
- ★ नैઋत्यमां व्व हीँ नमी उवज्झायाणं नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर यिंतवन.
- ★ पश्चिममां 👸 हीं नमो लोए सळ्वसाहूणं नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर यिंतवन.

823 •

- ★ वायव्यमां 👸 ह्रीं नमो दंसणस्स नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर यिंतवन.
- ★ ઉત્તરમાં 👸 ह्रीं नमो नाणस्स ની સ્થાપના. મનથી મંત્રાક્ષર ચિંતવન.
- ★ ઈशानमां 👸 ह्रीं नमो चारित्तस्स नी स्थापना. मनथी मंत्राक्षर थिंतवन.

પછી...આચાર્ય સૂરિમંત્ર ઉપાધ્યાય પાઠકમંત્ર અન્ય વર્ધમાન વિદ્યાના સ્મરણ સાથે સાતમુદ્રાથી વાસક્ષેપ સ્પર્શ કરવો. (ગુરુપંરપરાથી મળેલો વાસક્ષેપ એમાં ભેળવવો.)

સાતમુદ્રા— પરમેષ્ઠી, ગરુડ, ધેનુ, સૌભાગ્ય, પદ્મ, મુદ્દગર, અંજલિ.

નવકારવાળી મંત્રિત કરવાની વિધિ

નીચેની ગાથા ૧૦૮ વાર બોલવા પૂર્વક ૧૦૮ વાર નવકારવાળી ઉપર વાસક્ષેપ કરવો.

गाथा - हॅं स्तै: सुवर्णेबींजैर्या, रचिता जपमालिका सर्वगात्रेषु सर्वाणि, वाञ्छितानि प्रयच्छतु-१ नवडारवाणी गुरुपुष्यना योगमां मंत्रित डरवी.

નવકારવાળીને સપ્ત મુદ્રાઓ બતાવવી.

₹२४ •

બીજાક્ષરોનો સંક્ષિપ્ત અર્થ

ઇં - પ્રણવ ધ્રુવ, વિનય અને તેજસ બીજ **પેં - વાગુ અને તત્ત્વબીજ** आ - પાશ બીજ क्लीं - डाम जीश फट् - विसर्थन અને ચલનબીજ हसौं हसौं हसौं - આશક્તિ બીજ वषट् - ६६न भी४ हो - शिव અને શાસન બીજ वौषद् - आक्ष्ण अने पूल ગ્રહણ બીજ संवौषट् - आકर्षण जीજ क्षि - પૃથ્વી બીજ प - અપુ બીજ स्वा - वायु भी% हा - આકાશ બીજ ब्लॅं - દ્રાવણ બીજ ष्ट्रैं - આકર્ષણ બીજ ર્ह્ઈ - માયા અને ત્રૈલોક્ચ બીજ

ग्लौँ - स्तंत्मन जी% ऋौँ - અંક્શ અને નિરોધ બીજ क्ष्वीं - विषापदार जील द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूँ सः - એ પાંચ વાણી બીજ છે. स्वाहा - હवन અने शांति जील स्वधा - पौष्टिक जील नमः - शोधन जीજ શ્રી - લક્ષ્મી બીજ अर्ह - જ્ञान બીજ इं - विष्णु બીજ क्षः फट् - शस्त्र जी४ 👸 - તાર-ધ્રુવ-વેદાદિ, નૈગમાદિ, શ્રુત્યાદિ हीं - માયા, લજ્જા, શક્તિ, શિવ પાર્વતી, ભવનેશ, ગિરિજાનામ અને બીજ છે **हॅं - વર્મ-કવચ-ત્રિતત્ત્વ ક્રોધ. છંદ** બીજ

यः - ઉચ્ચાટન અને વિસર્જન બીજ जुँ - વિદ્વેષણ श्रलीं - અમૃત બીજ र्क्षी - સોમ બીજ ग्लौं - न२७१४ स्वाहा - शांतिवायक मंत्र जील स्वधा - पौष्टिक वायक जील આ બે શાંતિક પૌષ્ટિક વિધાનોમાં બોલવા જરૂરી છે. हंस - विषने દૂર કરનાર બીજ **हूँ - કૂંચ દીર્ઘ વર્ગ, દીર્ઘતન્**ચ્છદ क्ष्म्ल्च्यं - पिंउ भी४

ક્ષ્મ્પ્ત્વ્યૂં - પિંડ બીજ નમઃ - શિરોમં, અગ્નિવાચ, વનિતા, અગ્નિપ્રિયા, દહનપ્રિયા, પાવક, દ્વિઃઠ-ઠદ્વયં છે.

एं ह्रीं श्रीं - ત્રિબીજ છે. हा - निરોધન બીજ त्रीं - તારાબીજ છે ठः - स्तंભन जी% त्रा - ચંડી બીજ ब्लौं - विभक्षिंउ जीक स्त्रीं - स्त्री બीજ ग्लैं - स्तंभन जी% स्वीं - ઇन्द्र जीश घे घे - वध जील क्ष्मं - પીઠ બીજ द्राँ र्द्री - द्रावश સંશક બીજ जँ - સૃષ્ટિ બીજ नः - મલ બીજ यः - અચલ બીજ हाँ हीं हैं हैं हीं हः આ શુન્યરૂપ બીજ. **પેં** વાગુ બીજ. आँ हीं ऋाँ આ ત્રણ પાશાદિ બીજ

श्रीपञ्चषष्टि स्तोत्रम्

| आदौ नेमिजिनं नौमि, संभवं सुविधि तथा । | |
|--|-------|
| धर्मनाथं महादेवं, शान्ति शान्तिकरं सदा | ॥१॥ |
| अनंत सुव्रतं भक्त्या, निमनाथं जिनोत्तमम् । | |
| अजितं जितकंदर्पं, चंद्रं चंद्रसमं प्रभुम् (समप्रभम्) | 11711 |
| आदिनाथं तथा देवं, सुपार्श्वं विमलं जिनम् । | |
| मिल्लनाथं गुणोपेतं, धनुषां पंचिवंशितिम् | пξп |
| अरनाथं महावीरं, सुमतिं च जगद्गुरुम् । | |
| श्रीपद्मप्रभनामानं, वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥४॥ | |
| शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांसं श्रेयसे सदा। | |
| (श्री)कुंथुनाथञ्च वामेयं, श्रीअभिनंदनं विभुम् | ।।५॥ |
| जिनानां नामभिर्लब्ध(र्बद्ध): पंचषष्टिसमुद्भवः । | |
| यंत्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरंतरम् | ાાફાા |
| यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधै: । | |
| भूतप्रेतपिशाचादि-भयस्तत्र न विद्यते | 11911 |
| सकलगुणनिधानं यंत्रमेनं विशुद्धं, | |
| हृदयकमलकोशे, धीमतां ध्येयरूपम् | |
| जयतिलकगुरुः श्रीसूरिराजस्य शिष्यः, | |
| वदित सुखनिदानं, मोहलक्ष्मीनिवासम् | 11011 |

पञ्चषष्टि यन्त्र स्थापना

| 22 | 3 | 9 | १५ | १६ |
|----|------|----|----|----|
| १४ | २० | २१ | 7 | ۷ |
| १ | ૭ | १३ | १९ | २५ |
| १८ | २४ | ų | Ę | १२ |
| १० | . 88 | १७ | २३ | 8 |

ધજા ઉપર લખવાનો યંત્ર

| ૫૬ | €0 | ૬ ૧ |
|----|----|------------|
| ૫૮ | પઉ | ₹ ₹ |
| ६उ | ६४ | ૫૦ |

દંડ-પાટલી ઉપર લખવાનો ૩૪નો યંત્ર

| ٧ | 9 € | ર | 9 |
|----|-----|----|----|
| ६ | 3 | १उ | ૧૨ |
| 14 | 10 | ۷ | ૧ |
| 8 | પ | 99 | ૧૪ |

१२८

૧૭૦ યંત્ર

| રપ | 00 | ૧૫ | ૫૦ |
|----|----|------------|----|
| २० | ४५ | 30 | ૭૫ |
| 90 | ૩૫ | €0 | પ |
| ૫૫ | 90 | ૬ પ | ४० |

ઘંટ ઉપર લખવાનો યંત્ર

| પ | 9 € | 3 | 90 |
|------------|-----|----|----|
| . ४ | ૯ | ۴ | ૧૫ |
| ૧૪ | 9 | ૧૨ | ૧ |
| ૧૧ | ર | ૧૩ | ۷ |

સિદ્ધ ભગવંત

સિદ્ધભગવંતો અનાદિ અનંત છે. તેમનું અસ્તિત્વ જીવોને નિગોદમાંથી બહાર કાઢવાથી લઈ સિદ્ધપદ સુધી પહોંચાડવા માટે સતત કિયાશીલ છે અકિય પદ હોવા છતાં કિયા માત્રનું પ્રયોજક સિદ્ધપદ છે. એ એક રહસ્ય ભૂત કોયડો છે. કારણ કે સિદ્ધિગતિનો માર્ગ બતાવવા માટે અને સિદ્ધિપદ પામવા માટે જ તીર્થંકરભગવંતો અને ગણધર-ભગવંતો સતત પ્રયત્નશીલ હોય છે તેથી પરંપરાએ સિદ્ધભગવંતો જ સર્વના પરમોપકારી છે. (પૂજ્યપાદ્દ આ. દે. શ્રી કલાપૂર્ણસૂરિજી મ.સા.) વિ.સં. ૨૦૪૯ વૈ.સ. ૮ બીકનુર-કામારેડી)

848

નવગ્રહ જાપ

| | 0 K T | 100 | | | | |
|-------|---|----------------------|----------|------------|---------------|--|
| ગ્રહ | મંત્ર | તીર્થકર | 34 | જાતસુખ્તા | માલારંગ | |
| સૂર્ય | ૐ હીં રન્તાકુ સૂર્યાય સહગ્ર કિરણાય નમો નમ: I | ৸শ্বস্ত | भुद्ध | ର ଝୁଉନ୍ | લાલ | |
| ž, | ૐ રોહિશીપતયે ચંદ્રાય ૐ હ્યું ર્લા દ્રીં ચન્દ્રાય નમ: । | ચંદ્રપ્રભ | અરિહંત | ૧૧ હજાર | सङ्ग्रह | |
| મંગલ | ૐ નમો ભૂમિયુત્રાય ભુભૂકૃટિનેત્રાય વક્રવદનાય દઃ સઃ મંગલાય સ્વાહા ! | વાસુપૃજ્ય | भिद्ध | ૧૦ હજાર | લાલ | |
| ભુધ | ૐ નમો બુધાય શ્રૉ શ્રૌં શ્રૅ: દઃ સ્વાહા | વિમલનાથ | ઉપાધ્યાય | કજીક ગ | બીલો | |
| ગુર | ૐંગાઁ ગીઁ મૂઁ હીઁ બહસ્પતયે સુરપૂજપાય નમઃ ! | આદિનાથ | આચાર્ય | રાહ્ય ગા | પીળા | |
| ક્રકિ | ૐ યઃ અમૃતાય અમૃત વર્ષશાય દૈત્વગુરવે નમઃ સ્વાહા I | સુવિધિનાથ | અરિહંત | કાર્જી કા | સફેદ | |
| મા | ઝેં શનેશ્વરાય આં કો હીં કોડાય નમઃ ! | મુનિસુવ્રત સ્વામી | કૃામ | ક્ષ્ય કહ્ય | કાળો વાદળી | |
| રાહુ | ૐ વાં શ્રી વ્રઃ વ્રઃ પિંગલનેત્રાય કૃષ્ણરૂપાય રાહવે નમઃ સ્વાહા । | નેમિનાથ | निस | ২% ৪ % ১ | કાળો | |
| કેતુ | ॐ धें धीं ईं टः टः टः छत्रतुषाय राष्टुतनवे डेतवे नमः स्वाखा। | પાર્શનાથ | કિપ્તર | રહ્ય ગા | કાળો | |
| | | | | | | |

શ્રી નવગ્રહ શાંતિ જાપ મંત્ર

| | | | 1 | આ નવગ્રહ શાાત જાપ મત્ર | ક સાાત જ | શ્રુપ મત્ર | | |
|-----------|----------|---------|---------|------------------------|----------|---------------|-----------------|------------------------|
| 9 K | ክ‰ | માલા | નાડ | अनुकृष केरट | અનુકૃળ | અંગુલી | ને પ્ર થ | આ નક્ષત્રમાં |
| | સંખા | بخ | | हामस पर | માલુ | ગ્રહણ | ۲.۲ | ગ્રહણ કરવું |
| `त स् | 9 | લાલ | નુક | માણેક ૩ | સોના | અનામિકા | હીરા નિલમ | કૃતિકા, ઉત્તરાફાલ્ગુની |
| | લજીવર | | | Rutoy | | | ગોમેદ | ઊત્તરાત્રાહા |
| ۲ٍ م | 44 | 3ફ્રમ્સ | સોમ | મોતી ૩ | યાંદી | કૃતિહા | ગોમેદ | રોહિણી, હસ્ત, શ્રવણ |
| | લજાર | | | Pearl | | | | |
| મંગલ | 10 | લાલ | મંગલ | પ્રવાલ દ | યાંદી | અનામિકા | હીરા નિલમ | મૃગાશીર્ષ, ચિત્રા, |
| | લજાર | | | Corai | | | ગોમેદ | મનિષ્ઠા |
| ন ক্র | ১ | લીલો | ন উ | ત્રા પ્ર | म् | કૃતિહા | | આશ્લેષા, જ્યેષ્ઠા, |
| | લજાર | | | Emerald | | | | રેવતી |
| 3 | ગુહ | વીનો | 35 | ત્રું જાર | स्रोम | प %्नी | નીલમ | પુનર્વસુ, વિશાખા, |
| | લજાર | | | Topaz | | | શુકા | પૂર્વાભાદ્રપદ |
| \$. ₹. | <u>ئ</u> | ઝફ્સ | \$ 8 | શીરા 1/8 | પ્લેટીનમ | તર્જની | કાહ્યાન | ભરણી, |
| | લજાર | | | Diamond | યાંદી | | પ્રવાલ | પૂર્વાફાલ્ગુની |
| | | | | | | | તૈખરાજ | પૂર્વાષાઢા |
| હ્યા | ლ ი | વાદળી | H | નિલમ ૪ | પંચધાતુ | मलमा | માણેક | ัชร์ |
| | હજાર | કાળો | | Saphire | ਡੱ | | પ્રવાલ | અનુરાધા, |
| | | | | | स्र | | તૈખકાઢ | ઉત્તરાભાદ્રપદ |
| ગાર | 26 | કાળો | | ગોમેદ પ | માહ્યાવ | મજ્ઞમા | માણેક મોતી | આદા, |
| | લજાર | | | Zircon | યાંદી | | | સ્વાતિ, |
| | | | | | | | | શતભિષા |
| .₩ | 26 | કાળો | ਜੂ | વેડુર્ય પ | યાંદી | અનામિકા | પ્રવાલ | અથની, મઘા, મૂળ |
| | લજાર | | | Catseye | | | | |
| | | | | | | | | |

ચાતુર્માસ પ્રવેશ વગેરે પ્રસંગ પર નગરપ્રવેશની વિધિ

પ્રાથમિક વિધિ-પ્રવેશના એક દિવસ પહેલાં સાંજે થોડી માટી અને ૧૧ કાંકરી લાવવી (વડીલ અને વક્તા અલગ હોય તો દ કાંકરી અધિક લેવી) તેને રાતે અથવા પ્રવેશ દિનના પ્રાતઃકાલે માટી તથા એકેક કાંકરીને નવ વખત શ્રી વર્ધમાનવિદ્યાથી અભિમંત્રિત કરીને પોતાની પાસે રાખવી. સવારે મંગલ કરી, પૂજ્ય ગુરુદેવ તથા આજ્ઞા આશીર્વાદદાતા ગુરુદેવને વંદનાદિ કરવું આવેલ વાસક્ષેપ લેવો અને.... સહવર્તીઓને પણ વાસક્ષેપ કરવો. શુકન લઈ મુહૂર્તના સમય પહેલા જ્યાંથી નગર પ્રવેશ કરવાનો હોય, ત્યાં પહોંચી જવું.

પ્રવેશ સ્થાન પર કરવાની વિધિ

ઇરિયાવહિયં કરવા. બધાએ બેસીને ભાવમંગલ સ્વરૂપ નમસ્કાર મહામંત્ર ઉવસગ્ગહરં સ્તોત્ર આદિ સ્તોત્ર તથા મંત્રવિદ્યાનું સ્મરણ કરવું. ત્યારબાદ બની શકે તો બધાએ અથવા વડીલ+વક્તાએ જે દિશા સન્મુખ પ્રવેશ કરવાનો હોય તે દિશાની હદ પર ઊભા રહીને ક્ષેત્રદેવતા (ગામ-નગર દેવતા)ને આહ્યાનાદિ કરવા પછી...

ખિત્તદેવયાએ કરેમિ કાઉં અન્નત્થિં...એક નવકારનો કાઉં કરવો પછી "યસ્યાઃ ક્ષેત્રં。" સ્તુતિ કહી નવકાર બોલવો. પછી ક્ષેત્રપાલનો મંત્ર ત્રણવાર બોલીને ત્રણવાર ભૂમિપર વાસક્ષેપ કરી તેમની નગરપ્રવેશ માટે અનુમતિ લેવી. ત્યારબાદ ભૂમિપર સંક્ષિપ્તથી નામ નિર્દેશ સાથે નવગ્રહ, દશદિક્પાલનું વાસક્ષેપ કરવા દ્વારા વિધાન કરવું. ત્યારબાદ... અભિમંત્રિત કરેલી એકેક કાંકરીને ક્રમશઃ લઈને નીચેનો શ્લોક અને શ્રીધર્મચક્ર વિદ્યા બોલીને વારા ફરતી ચાર દિશા (સન્મુખ દિશાથી પ્રારંભ) અને ઉર્ધ્વઅધો દિશામાં તે તે કાંકરીનો પ્રક્ષેપ કરવો. (વડીલ અને વક્તાએ)

श्क्षो हैं पण्डु भगंदर दाहं कासं सासं च सुलमाइणि । पासपहुपभावेण नासंति सयलरोगाइं हीं स्वाहा ॥१॥

विद्या- हैं नमो भगवओ महई महावीरवद्धमाणसामिस्स जस्स वरधम्मचक्कं जलंतं गच्छेइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जुए वा रणे वा रायगणे वा वारणे बंधणे मोहणे थंभणे सव्वसत्ताणं अपराजिओ भवामि स्वाहा ।

પછી...વડીલ સમયાનુસાર મંગલરૂપે નવકાર, ग्रॅंऋषभ अजित०भवन्तु स्वाहा, શ્રીગૌતમ અષ્ટક આદિ સંભળાવે ग्रॅंनमो जिणाणं०...अर्हते नमः स्वाहा ।

એક વાર અથવા ત્રણવાર સમૂહમાં બોલાવે પછી....જમીન પર સળીથી ચોરસ આકાર કરી તેમાં અભિમંત્રિત માટીને મૂકે.

પછી...શુભમુહૂર્ત પ્રાપ્ત થયે નીચેના મંત્રનું મનમાં ત્રણવાર સ્મરણ કરવું.

मन्त्र - र्जनमो अरहंताणं र्जनमो भगवईए चंदावईए महाविज्जाए भत्तहाए गिरे गिरे हुलु हुलु चुलु चुलु मयुरवाहिनिए स्वाहा। आ भंत्रनो %प सवारे १०८ वार ४री क्षेवो) त्यार आद शुक्त / स्वरनो નિર્ણય કરી પ્રથમ ચરણ બનાવેલ ચોરસમાં મૂકી શ્રી નવકાર મહામંત્રના સ્મરણ કરતા હર્ષોલ્લાસ સાથે નગરની હદમાં પ્રવેશ કરવો. (પ્રવેશ કરતી વખતે શ્રાવક ગંહૂલી વગેરે કરે તો સારું) પ્રવેશ કર્યા પછી...નજીકમાં જે વિશાલ વૃક્ષ આવે તેના થડમાં ચાર કાંકરી મૂકાવવી અને...એક કાંકરી ચાતુર્માસ સુધી વડીલ યા વક્તા પાસે રાખવી. (વિહાર થયે સ્વચ્છ સ્થાન પર મૂકી દેવી。)

મકાન પ્રવેશ વિધિ

શ્રી સકલ સંઘ સાથે મકાનના દ્વાર પર આવીને (વડીલ સંક્ષિપ્ત નવગ્રહ, દિક્પાલ પૂજન કરે...ભવનપતિદેવનું (તે સ્થાનના દેવનું) પૂજન કરી ભવણ દેવતાનો કાઉં કરે...''ज्ञानािदगुणం'' સ્તુતિ, નવકાર... ભવનદેવતાની અનુજ્ઞા માંગે) સંઘ ગહુલી વગેરે કરે. મંગલગીતો ગાવે. પછી વડીલ મંગલસ્વરૂપ નવકાર બોલે તથા... 🕇 नमो जिणाणं અમૂહમાં બોલાવે... મુહૂર્ત આવેથી સંઘની અનુમતિ લઈને શુકનસ્વરનો નિર્ણય કરી શ્રીસૂરિમંત્ર (શ્રી)વર્ધમાનવિદ્યાનું ત્રણવાર સ્મરણ કરીને ઉલ્લાસ અને વાજિત્રોના નાદ સાથે મકાનમાં મંગલ પ્રવેશ કરે... પછી સ્વસ્થાન પર બેસી શ્રી સંઘને માંગલિક સંભળાવે. સ્વયં શ્રીસૂરિમંત્ર, શ્રીવર્ધમાનવિદ્યાનું મનમાં સ્મરણ કરે. અન્ય મહાત્માઓ પણ સ્થાન પર બેસીને સમયાનુસાર મંગલ કરી લે.

નોધ : નગરપ્રવેશ યા ચાતુર્માસ પ્રવેશ દિવસે મંગલરૂપે આયંબીલ કરવું અને શ્રી સંઘમાં કરાવવા જોઈએ.

રક્ષા પોટલી મંત્રિત કરવાની વિધિ

मंत्र - वृँ हूँ क्षुँ फुट् किरिटि किरिटि घातय घातय, परकृतविघ्नान् स्फेटय स्फेटय, सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्द हूँ क्षः स्वाहा आ मंत्रथी वासक्षेप सात वार मंत्रीने रक्षा पोटली ઉपर नांभवो तथा श्रीवर्धमान विद्या अथवा श्रीसूरिमंत्रथी मंत्रित करवी अने मुद्राओ वगेरे अताववी श्रेर्छे.

જાજમ પાથરવાની વિધિ

જોઈતી વસ્તુઓની યાદી : (૧) આયંબીલ કરેલી ૮ કુંવારી કન્યાઓ (૧૨ વર્ષ સુધીની) (૨) ૫ સોપારી (૩) વાટકીમાં કંકુ, (૪) ગૌતમસ્વામીજીનો ફોટો, (૫) વાસક્ષેપ વાટકામાં બટવામાં રાખવો, (દ) જે પાથરવાની છે તે સ્વચ્છ જાજમ, (૭) તાંબાનો પૈસોસિક્કો, (૮) ચોખા ૨૦૦ ગ્રામ (૯) શુદ્ધજલ કળશામાં, (૧૦) ગોમૂત્ર વાટકામાં (૧૧) ડાભનું ઘાસ (૧૨) ધરો (૧૩) ફૂલો (૧૪) ચાર-પાંચ પાવલી (૧૫) ધૂપ (૧૬) દીપક.

मंत्र -

उँ नमो गोयमस्स अक्खीणमहाणसस्स भगवन् भास्करी हीं श्रीं वृद्धि वृद्धि आनय आनय मम मनोरथं पूरय पूरय स्वाहा । उँ हीं अर्ह नमो गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणमहाणसस्स लिद्धसंपन्नस्स भगवन् भास्कर मम मनोवाञ्छितं कुरु कुरु स्वाहा ।

१३५•

વિધિ :- સહુ પ્રથમ એક બે સોપારી કંકુવાળી કરવી, ૧ સોપારી, ૧ તાંબાનો પૈસો અને એક ચપટી ચોખા આદિ ઉપરોક્ત મંત્રથી અથવા શ્રીવર્ધમાન વિદ્યાથી ૧૦૮ વાર મંત્રી લેવા, સોપારી જમણા હાથમાં રાખવી અને મંત્ર જાપ થયા પછી સોપારી ઉપર વાસક્ષેપ કરવો. (પૂજ્ય ગુરુભગવંત હોય તો તેમની પાસે મંત્રિત કરાવવું)

- ★ જમણા હાથની મુકીમાં સોપારી, પૈસો, ચોખાને વાસક્ષેપ લેવો, અને ઉત્તર દિશા કે ઈશાન ખૂણા સામે રાખીને વિધિ કરાવનાર શ્રાવકે રહેવું.
- ★ જાજમ પાથરવાનું મુહૂર્ત આવે ત્યારે હાજર રહેલા દરેક ભાગ્યશાળીઓ પાસે ૧૨ નવકાર ગણાવવા.
- ★ જાજમ શુદ્ધ અને ચોકખી લેવી, અને તેના પર શ્રીગૌતમસ્વામીનો મંત્ર ગણી લેવો.
- ★ જે કુંવારી કન્યાઓ છે તેમને કપાળમાં તિલક કરવા, શુભ વસ્ત્રો પહેરાવવા, અને જાજમના ૪ છેડા ૪ કન્યાઓના હાથમાં આપવાં.
- ★ જાજમ પાથરવાની હોય તે જગ્યા શુદ્ધ જલથી અને ગોમ્ત્રથી પવિત્ર કરવી.
- ★ જાજમ જ્યાં પાથરવાની છે તેની વચ્ચે તેમજ ચાર ખૂણે કંકુના સાથીયા કન્યાઓ પાસે કરાવવા, તથા તેના પર ચોખા ચોટાડવા (નાંખવા)
- ★ વચ્ચે મંત્રિત સોપારી મૂકાવવી અને ડાભ ધરો ફુલને ૧ા રૂપિયો વચ્ચે મૂકાવવો, તથા ચાર ખૂણે ચાર પાવલી સોપારી ડાભ ધરો ફૂલ

• १३६ •

મૂકાવવા અને વચલા ભાગમાં ધૂપ દીપ ચાલુ રખાવવા.

- ★ ચોખા પૈસા સોપારી વાસક્ષેપ વગેરે જાજમ પાથરતાં પહેલાં ઈશાનખૂણે અથવા ઉત્તરદિશા તરફ જાજમની નીચે ઉછાળવા અને પછી તુરત જ કુંવારી કન્યાઓ દ્વારા જાજમ પથરાવતાં સર્વે જણાં નવકાર ગણતાં ગણતાં જમણો પગ પ્રથમ મુકતાં જાજમ પર જઈને બેસે.
- ★ જ્યાં સુધી ઘી બોલવાનું હોય (ઉછામણી કરવાની હોય) ત્યાં સુધી જાજમને ખાલી ન રાખવી, કોઈને કોઈ માણસે વારાફરતી બેસી રહેવું.
- ★ જાજમ પાથરતાં તેની નીચે બરાબર વચ્ચે સાથીયો કરેલ છે તેના પર કોઈનો પગ ન આવે માટે તે જગ્યાએ ટેબલ કે પાટલો મૂકાવી. તેના પર ધૂપ-દીપ મૂકાવવાં.
- ★ 🖟 ં કન્યાઓ ને શીખ આપવી.

પછી....श्री नवકાર બોલવો. चुँ नमो जिणाणं स्वाहा सभूહમાં બોલાવવું, ત્યારબાદ जय सिरि विलास स्तोत्र બોલવું (પેજ ૫૦ પર છે)

આ સ્તોત્ર સાંભળ્યા પછી શ્રાવકો બોલીની શરૂઆત કરે. આ જાજમની વિધિ રાજસ્થાની ક્ષેત્રોમાં વિશેષ પ્રકારે કરવામાં આવે છે. તે પર્યુષણમાં સુપનનું ઘી બોલતાં પહેલાં અને દેરાસરની પ્રતિષ્ઠા અંજનશલાકા ઉપધાનમાલ, સંઘમાલ વગેરે પ્રસંગોએ ઘી બોલતાં પહેલા કરવામાં આવે છે.

₹30€

દેરાસરની વર્ષગાંઠે ધજા ચડાવવાનો વિધિ

દેરાસરના મૂળનાયક પ્રભુજીની વરસગાંઠના દિવસે સવારે સત્તર ભેદી પૂજા ભણાવવી, એમાં નવમી ધ્વજપૂજા વખતે ધજાનો થાળ ગુરુમહારાજ પાસે પાટલા ઉપર મૂકવો. ગુરુમહારાજ વર્ધમાન વિદ્યા અગર સૂરિમંત્ર દ્વારા મંત્રી વાસક્ષેપ નાંખે તે ધજા ઉપર કેશરનાં છાંટણાં કરવાં ને કેશરના ત્રણ કે પાંચ સાથિયા કરવા અને પછી તે થાળ ભાગ્યવાન હાથમાં રાખી ઊભા રહે, ત્યાર બાદ નવમી પૂજા ભણાવવી. તે પૂજા પૂર્ણ થયે થાળને સૌભાગ્ય વતી સ્ત્રીના માથે મૂકીને ડંકાના નાદ સાથે મંદિરની અથવા પ્રભુની ત્રણ પ્રદક્ષિણા આપવી તેમજ ધૂપ દીપ ધારાવલી પણ કરવી ત્યારબાદ મંદિરના શિખરે ચઢવું. ત્યાં દંડ અને કળશની અષ્ટપ્રકારી પૂજા કરવી. પછી....

ઇં પુण्याहं पुण्याहं વગેરેના નાદપૂર્વક ધજા ચડાવવી. પછી નવકારમંત્ર અને મોટીશાન્તિ સાંભળવી.

નીચે આવી બાકીની પૂજાઓ ભણાવવી.

આ દિવસે બને તો સ્વામિવાત્સલ્ય કરવું. છેવટે સંઘપૂજા અને પ્રભાવના પણ કરવી.

નોંધ - જેની નિશ્રા હોય તે અથવા ક્રિયાકારક બતાવે તે પ્રમાણે કરવી.

संसारचऋसूत्र

अधुवे असासयिम्म, संसारिम्म दुक्ख-पउराए । किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाऽहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ? ॥१॥

अध्रुव, अशाश्वत और दुःख-बहुल संसार में ऐसा कोन-सा कर्म है, जिससे में दुर्गति में न जाऊँ।

सुद्रुवि मग्गिज्जंतो, कत्थ वि केलीइ नित्थ जह सारो । इंदिअविसएसु तहा, नित्थ सुहं सुद्रु वि गविट्ठं ॥२॥

बहुत खोजने पर भी जैसे केले के पेड़ में कोई सार दिखाई नहीं देता, वैसे ही इन्द्रिय-विषयों में भी कोई सुख दिखाई नहीं देता।

जह कच्छुल्लो कच्छुं, कंड्यमाणो दुहं मुणइ सुक्खं । मोहाउरा मणुस्सा, तह कामदुहं सुहं बिंति ॥३॥

खुजली का रोगी जैसे खुलजाने पर दु:ख को भी सुख मानता है, वैसे ही मोहातुर मनुष्य कामजन्य दु:ख को सुख मानता है। जाणिज्जइ चिन्तिज्जइ, जम्मजरामरणसंभवं दुक्खं।

जााणज्जइ।चान्तज्जइ, जम्मजरामरणसभव दुक्ख। न य विसएसु विरज्जई, अहो सुबद्धो कवडगंठी ॥४॥

जीव जन्म, जरा (बुढ़ापा) और मरण से होने वाले दुःख को जानता है, उसका विचार भी करता है, किन्तु विषयों से विरक्त नहीं हो पाता। अहो ! माया की गाँठ कितनी सुदृढ होती है। जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य । अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जंतवो ॥५॥

जन्म दुःख है, जरा दुःख है, रोग और मृत्यु दुःख है। अहो ! संसार दुःख ही है, जिसमें जीव क्लेश पा रहे हैं।

कर्मसूत्र

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥१॥

जिस समय जीव जैसे भाव करता है, वह उस समय वैसे ही शुभ-अशुभ कर्मों का बन्ध करता है।

न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ, न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा । एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥२॥

जाति, मित्र-वर्ग, पुत्र और बान्धव उसका दु:ख नहीं बँग सकते। वह स्वयं अकेला दु:ख का अनुभव करता है। क्योंकि कर्म कर्ता का अनुगमन करता है।

कम्मं चिणंति सवसा, तस्सुदयम्मि उ परव्वसा होति । रुक्खं दुरुहइ, सवसो, विगलइ स परव्वसो तत्तो ॥३॥

जीव कर्म बाँधने में स्वतन्त्र है, परन्तु उस कर्म का उदय होने पर भोगने में उसके अधीन हो जाता है। जैसे कोई पुरुष स्वेच्छा से वृक्ष पर तो चढ़ जाता है, किन्तु प्रमादवश नीचे गिरते समय परवश हो जाता है। रागद्दोसपमत्तो, इंदियवसओ करेड़ कम्माइं । आसवदारेहिं अवि-गुहेहिं तिविहेण करणेणं ॥४॥

राग-द्वेष से प्रमत्त बना जीव इन्द्रियाधीन होता है। उसके आस्रवद्वार (कर्मद्वार) बराबर खुले रहने के कारण मन-वचन-काया के द्वारा निरन्तर कर्म करता रहता है।

सळ्वभूयऽप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ । पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधई ॥५॥

जो समस्त प्राणियों को आत्मवत् देखता है और जिसने कर्मास्रव के सारे द्वार बन्द कर दिये हैं, उस संयमी को पापकर्म का बन्ध नहीं होता। सेणावइम्मि णिहए, जहा सेणा पणस्सई। एवं कम्माणि णस्संति, मोहणिज्जे खयं गए ॥६॥

जैसे सेनापित के मारे जाने पर सेना नष्ट हो जाती है, वैसे ही एक मोहनीय कर्म के क्षय होने पर समस्त कर्म सहज ही नष्ट हो जाते हैं।

राग-परिहारसूत्र

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति । कम्मं च जाई मरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥१॥

राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। कर्म मोह से उत्पन्न होता है। वह जन्म-मरण का मूल हैं। जन्म-मरण को दु:ख का मूल कहा गया है।

न वि तं कुणइ अमित्तो, सुद्धु वि य विराहिओ समत्थो वि । जं दो वि अनिग्गहिया, करंति रागो य दोसो य ॥२॥

अत्यन्त तिरस्कृत समर्थ शत्रु भी उतनी हानि नहीं पहुँचाता, जितनी अनिगृहीत/अनियंत्रित राग और द्वेष पहुँचाते हैं।

जइ तं इच्छिसि गंतुं, तीरं भवसायरस्स घोरस्स । तो तबसंजमभंडं, सुविहिय ! गिण्हाहि तूरंतो ॥३॥

यदि तू घोर भवसागर के पार जाना चाहता है, तो हे सुविहित ! शीघ्र ही तप-संयम रूपी नौका को ग्रहण कर ।

जेण विरागो जायइ, तं तं सव्वायरेण करिणज्जं । मुच्चइ हु ससंवेगी, अणंतवो होइ असंवेगी ॥४॥

जिससे विराग उत्पन्न होता है, उसका आदरपूर्वक आचरण करना चाहिए । विरक्त व्यक्ति संसार-बन्धन से छूट जाता है और आसक्त व्यक्ति का संसार अनन्त होता जाता है ।

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणी-पलासं ॥५॥

भाव से विरक्त मनुष्य शोक-मुक्त बन जाता है। जैसे कमिलनी का पत्र जल में लिप्त नहीं होता, वैसे ही वह संसार में रहकर भी दु:खों की परम्परा से लिप्त नहीं होता।

• १४२ •

धर्मसूत्र

जइ किंचि पमाएणं, न सुडु भे वट्टियं मए पुर्व्वि । तं मे खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाओ अ ॥१॥

किंचित् प्रमादवश यदि मेरे द्वारा आपके प्रति उचित व्यवहार नहीं किया गया हो तो मैं नि:शल्य और कषाय-रहित होकर आपसे क्षमा-याचना करता हूँ।

परसंतावयकारण-वयणं, मोत्तूण सपरहिदवयणं । जो वददि भिक्खु तुरियो, तस्स दु धम्मो हवे सच्चं ॥२॥

जो दूसरों को सन्ताप पहुँचाने वाले वचनों का त्याग करके स्व-पर-हितकारी वचन बोलता है, उसके सत्य-धर्म होता है।

पत्थं हिदयाणिट्ठं पि, भण्णमाणस्स सगणवासिस्स । कडुगं व ओसहं तं, महुरविवायं हवइ तस्स ॥३॥

अपने गणवासी (साथी) द्वारा कही हुई हितकर बात, भले ही वह मन को प्रिय न लगे, पर कटुक औषध की भाँति परिणाम में मधुर ही होती है।

विस्ससणिज्जो माया व, होइ पुज्जो गुरुव्व लोअस्स । सयणु व्व सच्चवाई, पुरिसो सव्वस्स होइ पिओ ॥४॥

सत्यवादी मनुष्य माता की तरह विश्वसनीय, जनता के लिए गुरु की तरह पूज्य और स्वजन की भाँति सबको प्रिय होता है।

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिष्टि कुळाइ । साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ ति वुच्चई ॥५॥

त्यागी वही कहलाता है, जो कान्त और प्रिय भोग उपलब्ध होने पर उनकी ओर से पीठ फेर लेता है और स्वाधीनतापूर्वक भोगों का त्याग करता है।

जहा पोम्मं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा । एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥६॥

जिस प्रकार जल में उत्पन्न हुआ कमल जल से लिप्त नहीं होता, इसी प्रकार काम-भोग के वातावरण में उत्पन्न हुआ जो मनुष्य उससे लिप्त नहीं होता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।

तेल्लोकाड-विडहणो, कामग्गी विसयरुक्ख-पज्जलिओ । जोव्वण-तणिल्लचारी, जं ण डहइ सो हवइ धण्णो ॥७॥

विषय रूपी वृक्षों से प्रज्वलित कामाग्नि तीनों लोक रूपी अटवी को जला देती है। यौवन रूपी तृण पर संचरण करने में कुशल कामाग्नि जिस महात्मा को नहीं जलाती, वह धन्य है।

जा जा वज्जई स्वणी, न सा पडिनियत्तई । अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥८॥

जो-जो रात बीत रही है, वह लौटकर नहीं आती। अधर्म करने वाले की रात्रियाँ निष्फल चली जाती है।

• १४४ •

संयमसूत्र

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥१॥

आत्मा ही वैतरणी नदी है। आत्मा ही कूटशाल्मली वृक्ष है। आत्मा ही कामदुहा धेनु है और आत्मा ही नन्दनवन है।

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्टिय सुप्पट्टिओ ॥२॥

आत्मा ही सुख-दु:ख का कर्ता और विकर्ता (भोक्ता) है। सत्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा ही अपना मित्र है और दुष्प्रवृत्ति में स्थित आत्मा ही अपना शत्रु है।

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे । एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३॥

जो दुर्जेय संग्राम में हजारों-हजार योद्धाओं को जीतता है, उसकी अपेक्षा जो एक अपने को जीतता है, उसकी विजय परमविजय है।

एगओ विर्ड़ कुज्जा, एगओ य पवत्तणं । असंजमे नियतिं च, संजमे य पवत्तणं ॥४॥

एक ओर से निवृत्ति और दूसरी ओर से प्रवृत्ति करनी चाहिए—असंयम से निवृत्ति और संयम में प्रवृत्ति ।

• १४५ •

रागे दोसे य दो पावे. पावकम्म पवतणे । जे भिक्ख रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥५॥

राग और द्रेष-ये दो पाप पापकर्म के प्रवर्तक हैं। जो सदा इनका निरोध करता है वह संसार-मंडल से मुक्त हो जाता है।

जहा कुम्मे सअंगाई, सए देहे समाहरे । एवं पावाइं मेहावी, अज्झप्पेण समाहरे ॥६॥

जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, वैसे ही मेधावी पुरुष पापों को अध्यातम के द्वार समेट लेता है।

से जाणमजाणं वा, कट्टं आहम्मिअं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं, बीय तं न समायरे ॥७॥

जान या अनजान में कोई अधर्म कार्य हो जाय तो अपनी आत्मा को उससे तुरन्त हटा लेना चाहिए, फिर दूसरी बार वह कार्य न किया जाये।

धम्मारामे चरे भिक्खु, धिइमं धम्मसारही । धम्मारामरए दंते, बंभचेर-समाहिए पटि।।

धैर्यवान्, धर्म के रथ को चलाने वाला, धर्म के आराम में रत, दान्त और ब्रह्मचर्य में चित्त का समाधान पाने वाला भिक्षु धर्म के आराम में विचरण करे।

अप्रमादसूत्र

सीतंति सुवंताणं, अत्था पुरिसाण लोगसारत्था । तम्हा जागरमाणा, विधुणध पोराणयं कम्मं ॥१॥

जो पुरुष सोते हैं उनके जगत् में सारभूत अर्थ नष्ट हो जाते हैं। अत: सतत आत्म-जागृत रहकर पूर्वार्जित कर्मों को नष्ट करो। जागरिया धम्मीणं, अहम्मीणं च सुत्तया सेया। वच्छाहिवभगिणीए, अकहिंस जिणो जयंतीए।।२।।

'धार्मिकों का जागना श्रेयस्कर है और अधार्मिकों का सोना'—ऐसा भगवान् महावीर ने वत्सदेश के राजा शतानीक की बहन जयन्ती से कहा था।

सळ्ञओ पमत्तस्स भयं । सळ्ञओ अप्पमत्तस्स नित्थ भयं ॥३॥

प्रमत्त को सब ओर से भय होता है। अप्रमत्त को कोई भय नहीं होता। आदाणे णिक्खेवे, वोसिरणे ठाणगमणसयणेसु। सव्वत्थ अप्पमत्तो, दयावरो होदु हु अहिंसओ ॥४॥

वस्तुओं को उठाने-रखने में, मल-मूत्र का त्याग करने में, बैठने तथा चलने-फिरने में, और शयन करने में जो दयालु पुरुष सदा अप्रमादी अर्थात् विवेकशील रहता है, वह निश्चय ही अहिंसक है।

आत्म-मोक्षसूत्र

जीवा हंवति तिविहा, बहिरप्पा तह य अंतरप्पा य । तच्चाण परं तच्चं. जीवं जाणेह णिच्छयदो ॥१॥

जीव (आत्मा) तीन प्रकार का है—बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा। परमात्मा के दो प्रकार हैं-अईत् और सिद्ध ।

णिहंडो णिद्रन्दो, णिम्मणो णिक्कलो णिरालंबो । णीरागो णिद्दोसो, णिम्मुढो णिब्भयो अप्पा ॥२॥

आत्म वचन-वचन-कायरूप त्रिदंड से रहित, निर्द्वन्द्व, निर्मम-ममत्वरहित, निष्कल-शरीररहित, निरालम्ब, रागरहित, निर्दोष, मोहरहित तथा निर्भय है।

णिग्गंथो णीरागो. णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मम्को । णिक्समो णिक्सोहो, णिम्माणो णिम्मदो अप्या ॥४॥

वह आत्मा निर्ग्रन्थ—ग्रन्थिरहित, नीराग, निःशल्य सर्व दोष मुक्त, निष्काम, निष्क्रोध, निर्मान तथा निर्मद है।

सद्दृहिद य पत्तेदि य, रोचेदि य तह पुणो य फासेदि । धम्मं भोगणिमित्तं, ण दु सो कम्मक्खयणिमित्तं ॥५॥

अभव्य जीव यद्यपि धर्म में श्रद्धा रखता है, उसकी प्रतीति करता है, उँसमें रुचि रखता है, उसका पालन भी करता है, किन्तु यह सब वह धर्म को भोग का निमित्त समझकर करता है, कर्मक्षय का कारण समझकर नहीं।

पुण्णं पि जो सिमच्छिदि, संसारो तेण ईहिदो होदि । पुण्णं सुगईहेदुं, पुण्णखण्णेव णिळ्वाणं ॥६॥

जो पुण्य की इच्छा करता है, वह संसार की ही इच्छा करता है। पुण्य सुगति का हेतु है, किन्तु निर्वाण तो पुण्य के क्षय से ही होता है। वरं वयतवेहि सग्गो, मा दुक्खं होउ णिख् इयरेहिं। छायातविद्वयाणं, पिडवालंताण गुरुभेयं।।७।।

(तथापि) व्रत व तपादि के द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति उत्तम है। इनके न करने पर नरकादि के दु:ख उठाना ठीक नहीं है। क्योंकि कष्ट सहते हुए धूप में खड़े रहने की अपेक्षा छाया में खड़े रहना कहीं ज्यादा अच्छा है।

रत्नत्रयसूत्र

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विष्मा न हुंति चरणगुणा । अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥१॥

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता । ज्ञान के बिना चारित्रगुण नहीं होता । चारित्रगुण के बिना मोक्ष (कर्मक्षय) नहीं होता और मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं होता ।

आया हु महं नाणे, आया मे दंसणे चरित्ते य । आया पच्चक्खाणे, आया मे संजमे जोगे ॥२॥

आत्मा ही मेरा ज्ञान है। आत्मा ही दर्शन और चारित्र है। आत्मा ही

प्रत्याख्यान (नियम) है और आत्मा ही संयम और योग है। अर्थात् ये सब आत्मरूप ही हैं।

जेण तच्चं विबुज्झेज्ज, जेण चित्तं णिरुज्झदि । जेण अत्ता विसुज्झेज्ज, तं णाणं जिणसासणे ॥३॥

जिससे तत्त्व का बोध होता है, चित्त का निरोध होता है तथा आत्मा विशुद्ध होती है, उसे जिनशासन में ज्ञान कहा गया है। स्बहं पि स्यमहीयं, किं काहिइ चरणविप्पहीणस्स । अंधस्स जह पलित्ता, दीवसयसहस्सकोडी वि ॥४॥

चारित्र-शून्य पुरुष का विपुल शास्त्राध्ययन भी वैसे ही व्यर्थ है, जैसे अन्धे के आगे लाखों-करोडों दीपक जलाना। अब्भंतरसोधीए, बाहिरसोधी वि होदि णियमेण । अब्भंतर-दोसेण हु, कुणदि णरो बाहिरे दोसे ॥५॥

आभ्यन्तर-शुद्धि होने पर बाह्य-शुद्धि भी नियमत: होती ही है। आभ्यन्तर-दोष से ही मनुष्य बाह्य दोष करता है। मदमाणमायलोह-विवज्जियभावो द भावसद्धि ति । परिकहियं भव्वाणं, लोयालोयप्पदरिसीहिं ॥६॥

मद, मान, माया और लोभ से रहित भाव ही भावशृद्धि है, ऐसा

लोकालोक के ज्ञाता-द्रष्टा सर्वज्ञदेव का भव्य जीवों के लिए उपदेश है।

श्रमणधर्मसूत्र

सीह-गय-वसह-मिय-पसु, मारुद-सूरूविह-मंदिरंदु-मणी । खिदि-उरगंवरसरिसा, परम-पय-विमग्गया साहू ॥१॥

परमपद की खोज में निरत साधु सिंह के समान पराक्रमी, हाथी के समान स्वाभिमानी, वृषभ के समान भद्र, मृग के समान सरल, पशु के समान निरीह, वायु के समान निरसंग, सूर्य के समान तेजस्वी, सागर के समान गम्भीर, मेरु के समान निश्चल, चन्द्रमा के समान शीतल, मणि के समान कांतिमान, पृथ्वी के समान सिंहष्णु, सर्प के समान अनियत–आश्रयी तथा आकाश के समान निरवलम्बी होते हैं। (साधु की ये चौदह उपमाएँ हैं।)

न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥२॥

केवल सिर मुँडाने से कोई श्रमण नहीं होता, ओम् का जप करने से कोई ब्राह्मण नहीं होता, अरण्य में रहने से कोई मुनि नहीं होता और कुश-चीवर धारण करने से कोई तपस्वी नहीं होता।

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो । नाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३॥

वह समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण, ज्ञान से मुनि और तप से तपस्वी होता है।

१५१

किं काहदि वणवासो, कायकलेसो विचित्त उववासो। अज्झयणमोणपहदी, समदारहियस्स समणस्स ॥४॥

समता-रहित श्रमण का वनवास, कायक्लेश, विविध उपवास, अध्ययन और मौन आदि व्यर्थ है।

भावो हि पढमलिंगं. ण दव्वलिंगं च जाण परमत्थं । भावो कारणभूदो, गुणदोसाणं जिणा बिंति ॥५॥

भाव ही प्रथम या मुख्य लिंग है। द्रव्य लिंग परमार्थ नहीं है, क्योंकि भाव को ही जिनदेव गुण-दोषों का कारण कहते हैं। भावविस्द्धिणिमित्तं, बाहिरगंथस्स कीरए चाओ । बाहिरचाओ विहलो, अब्भंतरगंथजुत्तस्स ॥६॥

भावों की विशुद्धि के लिए ही बाह्य परिग्रह का त्याग किया जाता है। जिसके भीतर परिग्रह की वासना है उसका बाह्य त्याग निष्फल है।

समिति-ग्रिस्त्र

तहेव फरुसा भासा, गुरुभुओवघाइणी । सच्चा-वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥१॥

कठोर और प्राणियों का उपघात करने वाली, चोट पहुँचाने वाली भाषा न बोलें। ऐसा सत्य-वचन भी न बोलें जिससे पाप का बन्ध होता है।

णाणाजीवा णाणाकम्मं, णाणाविहं हवे लद्धी । तम्हा वयणविवादं, सगपरसमएहिं वज्जिज्जा ॥२॥

इस संसार में नाना प्रकार के जीव हैं, नाना प्रकार के कर्म हैं, नाना प्रकार की लब्धियाँ हैं, इसलिए कोई स्वधर्मी हो या परधर्मी, किसी के भी साथ वचन-विवाद करना उचित नहीं।

चक्खुसा पडिलेहिता, पमज्जेज्ज जयं जई । आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओवि समिए सया ॥३॥

यतना (विवेक) पूर्वक प्रवृत्ति करने वाला अपने दोनों प्रकार के उपकरणों को आँखों से देखकर तथा प्रमार्जन करके उठाये और रखे। यही आदान-निक्षेपण समिति है। अर्थात् किसी भी वस्तु को विवेकपूर्वक उठाना-रखना चाहिए।

खेत्तस्स वई णयरस्स, खाइया अहव होइ पायारो । तह पावस्स णिरोहो, ताओ गुत्तीओ साहुस्स ॥४॥

जैसे खेत की रक्षा बाड़ और नगर की रक्षा खाई या प्रकार करते हैं, वैसे ही पाप-निरोधक गुप्तियाँ साधु के संयम की रक्षा करती हैं।

तपसूत्र

हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे नरा । न ते विज्जा तिगिच्छंति, अप्पाणं ते तिगिच्छगा ॥१॥

जो मनुष्य हित-मित तथा अल्प आहार करते हैं, उन्हें कभी वैद्य से

चिकित्सा कराने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। वे तो स्वयं अपने चिकित्सक होते हैं, अपनी अन्तर्शुद्धि में लगे रहते हैं। जे पुयणुभत्तपाणा, सुयहेऊ ते तवस्सिणो समए।

ज पुथणुभत्तपाणा, सुयहऊ त तवास्सणा समए। जो अ तवो सुयहीणो, बाहिरयो सो छुहाहारो ॥२॥

जो शास्त्राभ्यास के लिए अल्प-आहार करते हैं वे ही आगम में तपस्वी माने गये हैं । श्रुतिवहीन अनशन-तप तो केवल भूख का आहार करना है अर्थात् भूखे मरना है ।

सो नाम अणसणतवो, जेण मणोऽमंगुलं न चिंतेइ। जेण न इंदियहाणी, जेण य जोगा न हायंति ॥३॥

वास्तव में वही अनशन-तप है जिससे मन में अमंगल की चिन्ता उत्पन्न न हो, इन्द्रियों की हानि (शिथिलता) तथा मन-वचन-कायरूप योगों की हानि (गिरावट) न हो।

बलं थामं च पेहाए, सद्धामारोग्गमप्पणो । खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ॥४॥

अपने बल, तेज, श्रद्धा तथा आरोग्य का निरीक्षण करके तथा क्षेत्र और काल को जानकार अपने को उपवास में नियुक्त करना चाहिए। क्योंकि शक्ति से अधिक उपवास करने से हानि होती है।

उवसमणो अक्खाणं, उववासो विण्णदो समासेण । तम्हा भुंजंता वि य, जिदिंदिया होति उववासा ॥५॥

संक्षेप में इन्द्रियों के उपशमन को ही उपवास कहा गया है। जितेन्द्रिय

लोग भोजन करते हुए भी उपवासी ही होते हैं। जह बालो जंपन्तो, कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ। तं तह आलोइज्जा, मायामयविष्पमुक्को वि ॥६॥

जैसे बालक अपने कार्य-अकार्य को सरलतापूर्वक माँ के समक्ष व्यक्त कर देता है, वैसे ही हमें भी अपने समस्त दोषों की आलोचना माया-मद (छल-छदा) त्यागकर करनी चाहिए।

एवमणुद्धियदोसो, माइल्लो तेणां दुक्खिओ होइ। सो चेव चत्तदोसो, सुविसुद्धो निव्वुओ होइ॥७॥

जैसे काँटा चुभने पर सारे शरीर में वेदना होती है और काँटे के निकल जाने पर शरीर नि:शल्य अर्थात् सर्वांग सुखी हो जाता है, वैसे ही अपने दोषों को प्रकट न करने वाला मायावी दु:खी या व्याकुल रहता है और उनको गुरु के समक्ष प्रकट कर देने पर सुविशुद्ध होकर सुखी हो जाता है।

जो पस्सदि अप्पाणं, समभावे संठवित्तु परिणामं । आलोयणमिदि जाणह, परमजिणंदस्स उवएसं ॥८॥

अपने परिणामों को समभाव में स्थापित करके आत्मा को देखना ही आलोचना है। ऐसा जिनेन्द्रदेव का उपदेश है।

अद्धाणतेण-सावद-राय-णदीरोधणासिवे ओमे । वेज्जावच्चं उत्तं, संगहसारक्खणोवेदं ॥९॥

जो मार्ग में चलने से थक गये, हैं, चोर श्वापद (हिस्र पशु), राजा द्वारा

व्यथित, नदी की रुकावट, मरी (प्लेग) आदि रोग तथा दुर्भिक्ष से पीड़ित हैं, उनकी सार-सम्हाल, लेवा तथा रक्षा करना वैयावृत्य है।

पूयादिसु णिखेक्खो, जिण-सत्थं जो पढेइ भत्तीए। कम्ममल-सोहणट्ठं, सुयलाहो सुहयरो तस्स ॥१०॥

आदर-सत्कार की अपेक्षा से रहित होकर जो कर्मरूपी मल को धोने के लिए भक्तिपूर्वक जिनशास्त्रों को पढ़ता है, उसका श्रुतलाभ स्व-पर सुखकारी होता है।

सज्झायं जाणंतो, पंचिंदियसंबुडो तिगुत्तो य । होइ य एकग्गमणो, विणएण समाहिओ साहू ॥११॥

स्वाध्यायी पुरुष पाँचों इन्द्रियों से संवृत, तीन गुप्तियों से युक्त, विनय से समाहित तथा एकाग्रमन होता है।

णाणेण ज्झाणसिज्झी, झाणादो सव्वकम्मणिज्जरणं। णिज्जरणफलं मोक्खं, णाणब्भासं तदो कुज्जा ॥१२॥

ज्ञान से ध्यान की सिद्धि होती है। ध्यान से सब कर्मी की निर्जरा (क्षय) होती है। निर्जरा का फल मोक्ष है। अतः सतत ज्ञानाभ्यास करना चाहिए। नाणमेगरगचित्तो अ. ठिओ अ ठावयई परं।

सुआणि अ अहिज्जित्ता, रओ सुअसमाहिए ॥१३॥

अध्ययन के द्वारा व्यक्ति को ज्ञान और चित्त की एकाग्रता प्राप्त होती है। वह स्वयं धर्म में स्थित होता है और दूसरों को भी स्थिर करता है तथा अनेक प्रकार के श्रुत का अध्ययन कर वह श्रुतसमाधि में रत हो जाता है।

ध्यानसूत्र

सीसं जहा सरीरस्स, जहा मूलं दुमस्स य । सव्वस्स साधुधम्मस्स, तहा झाणं विधीयते ॥१॥

तं होज्ज भावणा वा, अणुपेहा वा अहव चिंता ॥३॥

जैसे शरीर में सिर और वृक्ष में उसकी जड़ मुख्य है वैसे ही साधु के समस्त साधु-धर्मों का मूल ध्यान है। जं थिरमज्झवसाणं, तं झाणं जं चलंतयं चित्तं।

स्थिर अध्यवसान अर्थात् मानसिक एकाग्रता ही ध्यान है। चित्त की जो चंचलता है उसके तीन रूप हैं—भावना, अनुप्रेक्षा और चिन्ता। जस्स न विज्जिद रागो, दोसो मोहो व जोगपरिकम्मो। तस्स सहासहडहणो, झाणमओ जायए अग्गी।।४॥

जिसके राग-द्वेष और मोह नहीं है तथा मन-वचन-कायरूप योगों का व्यापार नहीं रह गया है, उसमें समस्त शुभाशुभ कर्मों को जलाने वाली ध्यानाग्नि प्रकट होती है।

जे इदियाणं विसया मणुण्णा, न तेसु भावं निसिरे कयाइ । न याऽमणुण्णेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥५॥

समाधि की भावना वाला तपस्वी-श्रमण इन्द्रियों के अनुकूल विषयों में कभी रागभाव न करे और प्रतिकूल विषयों में मन से भी द्वेषभाव न करे।

• १५७ •

णाहं होमि परेसिं. ण मे परे संति णाणमहमेक्को । इदि जो झायदि झाणे, से अप्पाण हवदि झादा ॥६॥

वही श्रमण आत्मा का ध्याता है जो ध्यान में चिन्तवन करता है कि ''मैं न 'पर' का हूँ, न 'पर' पदार्थ या भाव मेरे हैं, मैं तो एक शुद्ध-बद्ध ज्ञानमय चैतन्य हुँ।"

णातीतमट्टं ण य आगमिस्सं, अट्टं नियच्छंति तहागया उ। विधृतकप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता खवगे महेसी ॥७॥

तथागत अतीत और भविष्य के अर्थ को नहीं देखते। कल्पना-मुक्त महर्षि वर्तमान का अनुपश्यी हो, कर्म-शरीर का शोषण कर उसे क्षीण कर डालता है।

मा चिट्रह मा जंपह, मा चिन्तह कि वि जेण होड़ थिरो । अप्पा अप्पम्मि रओ, इणमेव परं हवे झाणं ॥८॥

हे ध्याता ! तू न तो शरीर से कोई चेष्टा कर, न वाणी से कुछ बोल और न मन से कुछ चिन्तन कर, इस प्रकार त्रियोग का निरोध करने से त् स्थिर हो जाएगा—तेरी आत्मा आत्मरत हो जायेगी । यही परम ध्यान है ।

अनुप्रेक्षासूत्र

पत्तेयं पत्तेयं नियगं, कम्पफलमणुहवंताणं । को कस्स जए सयणो ? को कस्स व परजणो भणिओ ? ॥१॥

प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मफल को अकेला ही भोगता है। ऐसी स्थिति में कौन किसका स्वजन है और किसका परजन ?

अणुसोअइ अन्नजणं, अन्नभवंतरगयं तु बालजणो । नवि सोयइ अप्पाणं, किलिस्समाणं भवसमुद्दे ॥२॥

अज्ञानी मनुष्य अन्य भवों में गये हुए दूसरे लोगों के लिए तो शोक करता है, किन्तु भव-सागर में कष्ट भोगने वाली अपनी आत्मा की चिन्ता नहीं करता।

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥३॥

जरा और मरण के तेज प्रवाह में बहते-डूबते हुए प्राणियों के लिए धर्म ही द्वीप है, प्रतिष्ठा है, गति है तथा उत्तम शरण है।

माणुस्सं विग्गहं लद्धं, सुई धम्मस्स दुल्लहा । जं सोच्या पविज्जंति तवं खंतिमहिंसयं ॥४॥

मनुष्य-शरीर प्राप्त होने पर भी ऐसे धर्म का श्रवण तो दुर्लभ ही है, जिसे सुनकर तप, क्षमा और अहिंसा को प्राप्त किया जाए। आहच्च सवणं लद्धं, सद्धा परमदुल्लहा । सोच्चा ने आउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई ॥५॥

कदाचित् धर्म का श्रवण हो भी जाये, तो उस पर श्रद्धां होना परम दुर्लभ है। क्योंकि बहुत-से लोग न्यायसंगत मोक्षमार्ग का श्रवण करके भी उससे विचलित हो जाते हैं।

सुइं च लद्धं सद्धं च, वीरियं पुण दुर्ह्रहं । बहवे रोयमाणा वि, नो एणं पडिवज्जए ॥६॥

धर्म-श्रवण तथा श्रद्धा हो जाने पर भी पुरुषार्थ होना और दुर्लभ है। बहुत से लोग संयम में अभिरुचि रखते हुए भी उसे सम्यक्-रूपेण स्वीकार नहीं कर पाते।

संलेखनासूत्र

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ । संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥१॥

शरीर को नाव कहा गया है और जीव को नाविक। यह संसार समुद्र है, जिसे महर्षि जन तैर जाते हैं।

चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मन्नमाणो । लाभंतरे जीविय वृहइत्ता, पच्चा परिण्णाय मलावधंसी ॥२॥

साधक पग-पग पर दोषों की आशंका (सम्भावना) को ध्यान में रखकर चले। छोटे-से-छोटे दोष को भी पाश समझे, उससे सावधान रहे। नये-

• १६० •

नये लाभ के लिए जीवन को सुरक्षित रखे। जब जीवन तथा देह से लाभ होता हुआ दिखाई न दे तो परिज्ञानपूर्वक शरीर का त्याग कर दे।

संलेहणा य द्विहा, अब्भितरिया य बाहिरा चेव । अब्भितरिया कसाए, बाहिरिया होइ य सरीरे ॥३॥

संलेखना दो प्रकार की है-अभ्यन्तर और बाह्य । कषायों को कुश करना आभ्यन्तर संलेखना है और शरीर को कुश करना बाह्य संलेखना। न वि कारणं तणमओ संथारो, न वि य फासुया भूमी । अप्पा खलु संथारो, होइ विसुद्धो मणो जस्सो ॥४॥

जिसका मन विशुद्ध है, उसका शय्या न तो तुणमय है और न प्रासुक भूमि है। उसकी आत्मा ही उसका संस्तारक है।

सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥५॥

जो जीव सम्यग्दर्शन के अनुरागी होकर, निदान-रहित तथा शुक्ललेश्यापूर्वक मरण को प्राप्त होते हैं, उनके लिए बोधि की प्राप्ति सुलभ होती है।

निर्वाणसूत्र

सब्बे सरा नियट्टंति, तक्का जत्थ न विज्जइ । मई तत्थ न गाहिया, ओए अप्पइट्टाणस्स खेयन्ने ॥१॥

जहाँ से सारे स्वर लौट जाते हैं, जहाँ तर्क का प्रवेश नहीं है, जिसे बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती, जो ओज-प्रतिष्ठान-खेद रहित है, वही मोक्ष है।

ण वि दुक्खं ण वि सुक्खं, ण वि पीडा णेव विज्जदे बाहा । ण वि मरणं ण वि जणणं, तत्थेव य होइ णिव्वाणं ॥२॥

जहाँ न दुःख है न सुख, न पीड़ा है न बाधा, न मरण है न जन्म, वहीं निर्वाण है।

ण वि इंदिय उवसम्मा, ण वि मोहो विम्हयो ण णिद्दा य । ण य तिण्हा णेव छुहा, तत्थेव य होइ णिव्वाणं ॥३॥

जहाँ न इन्द्रियाँ हैं न उपसर्ग, न मोह हैं न विस्मय, न निद्रा है न तृष्णा और न भृख, वहीं निर्वाण है।

ण वि कम्मं णोकम्मं, ण वि चिंता णेव अट्टरुद्दाणि । ण वि धम्मसुक्कझाणे, तत्थेव य होइ णिव्वाणं ॥४॥

जहाँ न कर्म है न नोकर्म, न चिन्ता है न आर्त-रौद्र ध्यान, न धर्मध्यान है और न शुक्लध्यान, वहीं निर्वाण है।

१६२

विज्जिद केवलणाणं, केवलसोक्खं य केवलं विखं। केवलिदिट्टि अमुत्तं, अत्थित्तं सप्पदेसत्तं ॥५॥

वहाँ केवलज्ञान, केवलदर्शन, केवलसुख, केवलवीर्य, अरूपता, अस्तित्व और सप्रदेशत्व ये गुण होते हैं।

મંત્ર પરંપરા

- બીજ મંત્ર → જેમાં બીજાક્ષરો તથા અન્ય અક્ષરો હોય પણ મંત્ર દેવતાનું નામ ન હોય.
- नाम मंत्र → જે मंत्रमां मंत्र देवतानुं नाम હोय ते दा.त. 'मुँ श्री पार्श्वनाथाय नमः'।
- આગ્નેય મંત્ર → પૃથ્વી, અગ્નિ, આકાશ મંડળવાળા મંત્રો
- સૌમ્ય મંત્ર → જળ અને વાયુ મંડળવાળા મંત્રો.
- નોંધ: મંત્રના અંતમાં फट् પલ્લવનો પ્રયોગ થાય તો સૌમ્ય મંત્રો આગ્નેય મંત્રો બને. અને नमः પલ્લવ લાગે તો આગ્નેય મંત્રો સૌમ્ય મંત્રો બને.

• १६३ •

મંત્રના ત્રણ લિંગ

- મંત્રના અંતે वषट् અને फट् પલ્લવ હોય તે પુલિંગ મંત્ર
- મંત્રના અંતે वौषट् અને स्वाहा પલ્લવ હોય તે સ્ત્રીલિંગ મંત્ર.
- મંત્રના અંતે हू અને नमः पલ्લव હોય ते नपु. લિંગ મંत्र.

પલ્લવ → મંત્રના અંતે લાગતો શબ્દ. પલ્લવમાં नमः, स्वाहा, वषट् वौषट्, हुँ, फट् વગેરેની મુખ્યતા હોય છે.

બીજા અક્ષર → 👸 , हीं, श्રीं , क्लीं , क्लीं क्रों, વગેરે મંત્રના પ્રારંભમાં અથવા અંતમાં લાગતા શબ્દો.

નામ મંત્ર → પલ્લવ અને બીજાક્ષર છોડીને મધ્યમાં જેનો મંત્ર હોય તેનો ઉલ્લેખ હોય તે.

→ વર્શોનું વિશિષ્ટ સંયોજન તે.

યંત્ર → દેવી તત્ત્વોની વિશિષ્ટ સ્થાપના.

તંત્ર → વસ્તુઓમંત્રિત કરીને થતા પ્રયોગ.

મંત્ર → વર્ણો - અક્ષરોને આધીન હોય છે.

યંત્ર → મંત્રના દેવ-દેવીને આધીન હોય છે.

તંત્ર → યંત્ર-મંત્રને આધીન હોય છે.

• १६४ •

મંત્ર

મંત્ર શાસ્ત્રોની નિધિ

ભદુબાહુ સ્વામી : ઉવસગ્ગહરં
 સિદ્ધસેન : કલ્યાણ મંદિર

માનતુંગસુરિ : ભકતામર સ્તોત્ર
 નંદિષેણ : અજિત-શાંતિ

• મુનિસુંદરસુરિ : સંતિકર • માનદેવસુરિ : લઘુશાંતિ (૯૦૦ વર્ષ) આ સર્વે સ્તોત્ર, સ્મરણ વગેરે મંત્ર વિદ્યા છે. ''ॐ क्ष्प्ल्यूँ फट्'' ઈત્યાદિ શબ્દોથી ભરેલા ગુપ્ત ભાષાના શબ્દોના સમૂહ મંત્ર વિદ્યા છે. એવું માનવું નહીં જયાં પ્રસંગનું વર્શન હોય તે ગાથા પણ મંત્ર બને છે.

જાપના ૧૩ પ્રકાર

● રેચક ● પુરક ● કુંભક ● સાત્વિક

● રાજસિક ● તામસિક ● સ્થિરીકૃતિ ● સ્મૃતિ

● હક્કા ● નાદ ● ધ્યાન ● ધ્યેયેક ● તત્ત્વ

– સિંહતિલકસૂરિકૃત મંત્રાધિરાજ કલ્પ

જાપના ૩ પ્રકાર

કઈ રીતે કળ જાપ • વાચિક (ભાષ્ય) ઉચ્ચારથી ૧ ગણું • ઉપાંશ જીહાથી ૧૦૦ ગણું

મનથી ૧૦૦૦ ગણું • માનસ

१६५

સાધકે મુખ્યતયા ઉપાંશુ અને માનસ જાપ ઉપર વિશેષ ભાર આવવો.

મોક્ષ પ્રાપ્તિ, ગ્રહશાંતિ હેતુ, સર્વપ્રકારની સિદ્ધિ, રોગ નિવારણ, વગેરે માટે ભારતીય મહર્ષિઓ જાપને ઉત્તમ સાધન માને છે.

મંત્ર-વિદ્યા સાધના પ્રારંભ રાશિ ફળ

મેષ ઃ ધન્ય ધાન્ય દાયક તુલા ઃ સર્વસિદ્ધકર

વૃષભ : સાધક વિનાશ વૃશ્ચિક : સુવર્ણલાભ

મિથુન : સંતતિ નાશ ધન : સન્માન નાશ

કર્ક : સર્વસિદ્ધિ દાયક મકર : પુણ્યપ્રદ

સિંહ : બુદ્ધિનાશક કુંભ : ધનસમુદ્ધિ

કન્યા : લક્ષ્મીપ્રદાન મીન : દુઃખદાયી

મંત્ર જાપમાં દિશા વિચાર

● વશીકરણ → પૂર્વાભિમુખ

● ધન-સંપત્તિ વગેરે લાભ → પશ્ચિમાભિમુખ

● શાંતિ, તૃષ્ટિ વગેરે → ઉત્તરાભિમુખ

● અન્ય પ્રયોગ → દક્ષિણાભિમુખ

• १६६ •

મંત્ર-વિદ્યા અનુષ્ઠાન આરંભ - નક્ષત્રફળ

→ બંધુવૃદ્ધિ ૧. અનુરાધા ૧૪. કૃતિકા → દુઃખ

૨. જયેષ્ઠા ૧૫. રોહિણી → જ્ઞાનલાભ → પુત્રહાનિ

મુલા → કીર્તિ વૃદ્ધિ З. ૧૬. મુગશીર્ષ → સુખ

૪. પૂર્વાષાણ ightarrow યશવૃદ્ધિ ૧૭. આદ્રા ightarrow બંધુનાશ

પ. ઉ.ષાઠા → યશવૃદ્ધિ ૧૮.પુનર્વસુ → ધનલાભ

€. શ્રવણ → દુઃખ વૃદ્ધિ ૧૯. પુષ્ય → શત્રુનાશ

૭. ધનિષ્ઠા \rightarrow દારિદ્રય વૃદ્ધિ ૨૦. આશ્લેષા \rightarrow મૃત્યુ

૮. શતભિષા → બુદ્ધિ ૨૧. મેઘા → દુઃખ મોચન

૯. પૂર્વાભદ્રપદા → સુખ ૨૨. પૂર્વા. ફા. → સૌંદર્ય

૧૦. ઉત્તર ભદ્ર. \rightarrow સુખ ૨૩. ઉ. ફા. → જ્ઞાન વૃદ્ધિ

૧૧. રેવતી → કીર્તિ વૃદ્ધિ ૨૪. હસ્તા \rightarrow ધનલાભ

૧૨. અશ્વિની \rightarrow સુખ ૨૫. ચિત્રા → જ્ઞાનવૃદ્ધિ

૧૩. ભરણી ightarrow મરણ ૨ ε . સ્વાતિ \rightarrow શત્રુનાશ

૨૭. વિશાખા → દુઃખજનક

મંત્ર-વિદ્યા સાધના-આસન ફળ :

● વાંસ → વ્યાધિ, દ્રસ્દ્રિતા ● કાળા મૃગ → જ્ઞાન સિદ્ધિ

ullet પત્થર o બિમારી ullet વ્યાધ્રચર્મ o મોક્ષ-લક્ષ્મી

● ધરતી → દુઃખાનુભવ ● રેશમ → પુષ્ટિ દાયક

● કાષ્ટ → દુર્ભાગ્ય ● કંબલ → દુઃખનાશ

● તૃણ → યશનાશ ● રંગીન કંબલ → સર્વાર્થ સિદ્ધિ

● પર્શ → ચિત્ત વિક્ષેપ

કપાસ, કંબલ, વ્યાધ્ર, મૃગચર્મના આસન જ્ઞાન, સિદ્ધિ, સૌભાગ્ય આપનાર છે.

મંત્ર-સિદ્ધિ કચારે ?

આ વિષયમાં જૈન અને જૈનેતર ગ્રંથો બેના મત પ્રાપ્ત થાય છે. પરંતુ સર્વ સંમત છે. મંત્રમાં દેવ અને વિદ્યામાં દેવીની મુખ્યતા હોય છે.

- (૧) મંત્ર વિદ્યાના અધિષ્ઠાયક દેવ-દેવી પર પૂર્ણ શ્રદ્ધા
- (૨) આમ્નાય પ્રાપ્ત મંત્રદાતા ગુરૂ પર બહુમાન

નોંધ ઃ જે જે મંત્રના વિદ્યાના અધિષ્ઠાયક દેવ-દેવી તે તે મંત્રના જાપ દ્વારા તે તે દેવી-દેવતા મંત્ર સાધકની પર ખુશ થાય છે. અને મનોકામના પૂર્ણ કરે છે.

₹€८

મંત્ર ફળ ક્યારે

વિધિ પૂર્વક ૮ લાખ જાપ પૂર્ણ થાય ત્યારે મંત્ર ચૈતન્ય બને છે.

૧૦ લાખ - સ્વપનસિદ્ધિ

૧૪ લાખ - આગાહી કરવાનું સામર્થ

૧૮ લાખ - સમસ્યાઓ ઉકેલવાની વિપત્તિ નિવારવાની, સંમોહન ત્રાટક, કામણ પ્રયોગની સિદ્ધિઓ પ્રાપ્ત થાય છે.

મંત્રના સંપ્રદાય અભિપ્રેત મંત્ર પ્રકાર

૧. બીજ મંત્ર : ૧થી ૯ અક્ષર સુધીના મંત્ર

ર. મંત્ર મંત્ર : ૧૦થી ૨૦ અક્ષર સુધીના મંત્ર

૩. માળા મંત્ર : ૨૧ થી અધિક અક્ષર સુધીના મંત્ર

૧. સાત્ત્વિક મંત્ર ૨. રાજસિક મંત્ર ૩. તામસિક મંત્ર

૧. સિદ્ધ મંત્ર ૨. સાધારણ મંત્ર ૩. નિર્બીજ મંત્ર

એક અક્ષરના મંત્રને પિંહ કહે છે. બે અક્ષરના મંત્રને कर्तकी કહે છે.

ત્રણથી નવ અક્ષરના મંત્રને बीज કહે છે. દસથી વીસ અક્ષરના મંત્રને मंत्र કહેવાય છે. તેનાથી વધારે અક્ષરના મંત્રને माला मंत्र સંપ્રદાયવાળા કહે છે.

★ આ બધી માહિતી વિવિધ ગ્રંથોના આધારે આપી છે. આપણા ગુરુદેવની આજ્ઞા પ્રમાણે મંત્ર-વિદ્યા આમ્નાય મેળવી સાધના કરવાથી સફળતા મળે છે. ત્રણ-ત્રણ વખત સાધના કરવા છતાં સફળતા ન મળે તો આપણી કચાસ માનવી.

• १६९ •

મંત્ર વિદ્યા સ્થાન મહત્વ

| \rightarrow | ૧ | ગણુ |
|---------------|---|--|
| \rightarrow | 1000 | ગણુ |
| \rightarrow | 10,000 | ગણુ |
| \rightarrow | ٩,٥٥,٥٥٥ | ગણુ |
| \rightarrow | ૧ કરોડ | ગણુ |
| \rightarrow | અંનતગણુ | |
| | → → → | → 1000 → 10,000 → 1,00,000 → 1 5 शेऽ |

જાપ કરતી વખતે માળા સ્થાન

સવારે : નાભિ ઉપર હાથ રાખવો

બપોરે ઃ હૃદયની આગળ હાથ રાખવો

સાંજે : •મુખની આગળ હાથ રાખવો

મોક્ષ પ્રાપ્તિ, ગ્રહશાંતિ હેતુ, સર્વપ્રકારની સિદ્ધિ, ભારતીય મહર્ષિઓએ જાપને ઉત્તમ સાધન કહ્યું છે.

મંત્ર ગ્રહણ દિવસનું ફળ

| રવિ | \rightarrow | ધનલાભ | ગુરૂ | \rightarrow | જ્ઞાન બુદ્ધિ |
|------|---------------|-------------|-------|---------------|--------------|
| સોમ | → | શાંતિ | શુક્ર | \rightarrow | સૌભાગ્ય |
| મંગળ | \rightarrow | આયુષ્ય | શનિ | \rightarrow | વંશહાનિ |
| બુધ | \rightarrow | લાભ સૌંદર્ય | | | |

• १७० •

મંત્ર-વિદ્યા સાધના માટે વિધિ ક્રમ

મંત્ર-વિદ્યા સાધનામાં સામાન્યથી જે વિધિ છે એની મૂળભૂત ક્રિયાઓ ઉપર ધ્યાન રાખવું અત્યંત જરૂરી છે.

- સ્થાન : પવિત્ર, શુદ્ધ, સ્વચ્છ જોઈએ.
- જેની સાધના હોય તેના ચિત્ર સામે રાખવા... અથવા પ્રભુજીને સામે રાખવા.
- દરેક મંત્રના જાપ સમય-સંખ્યા નિર્ધારિત છે તેને અનુરૂપ જાપ કરવો.
- વસ્ત્ર : શુદ્ધ-સ્વચ્છ સાંધા વિનાના રાખવા ઉત્તમ છે.
- ધૂપ-દીપ રાખવા (પૂ. સાધુ-સાધ્વી મ. ન રાખે તો ચાલી શકે તેના સ્થાને ચાંદીના બે સિક્કા રાખવા. ધૂપ-દીપની કલ્પના કરવી.)
- પૂ. ગુરુદેવ ઉપર સમર્પણ ભાવ .
- મંત્ર દાતા ઉપર બહુમાન અને શ્રદ્ધા.
- ભારે આહારનો ત્યાગ.
- બ્રહ્મચર્યનું અવશ્ય મેવ પાલન.
- મંત્રોના શબ્દોના ઉચ્ચારણ શુદ્ધ તેમજ ધીમા જોઈએ.
 અથવા મનમાં જાપ કરવો.
- મંત્રની ઉપાસના, ધ્યાન, પૂજન અને જાપ શ્રદ્ધા વિશ્વાસપૂર્વક કરવા જોઈએ.
- દિશા, કાળ, મુદ્રા, આસન, વર્શ, પુષ્પ વગેરે જાણીને મંત્ર-સાધનાનો પ્રારંભ કરવો.

• १७१ •

चतुविंशति वर्धमान विद्या

ਰੱ ਫ਼ੀ श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं. **ਰੱ** ਵੀ श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं. ភ្នំដ្ឋា श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, អ្វីដ្ឋា श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, អ្វីដ្ឋា श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहणं, 🗗 🖁 श्रीं अर्ह नमो जिणाणं. 🗗 🗒 श्रीं अर्हं नमो ओहिजिणाणं, 🗗 🖺 श्रीं अर्हं नमो परमोहि जिणाणं, 🗗 🖺 श्रीं अर्हं नमो सब्बोहि जिणाणं, 👸 🖏 श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, ភ្នំ អ៊ី अर्ह नमो केवलि जिणाणं, ភ្នំ អ្វី अर्ह ភ្នំ नमो भगवओ अरहओ उसभसामिस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा 🕇 🖺 नमो अरहओ उसभसामिस्स आइतित्थगरस्स जस्सेअं जलं तं गच्छइ, चक्खं सव्बद्ध (सव्बत्थ) अपराजियं आयाविणी ओहाविणी मोहणी थंभणी जंभणी हिलि हिलि कालि कालि धारणी चोराणं भंडाणं भोइयाणं अहीणं दाढीणं सिगीणं नहीणं चोराणं चारियाणं वेरिणं जक्खाणं रक्खसाणं भूयाणं पिसायाणं मुहबंधणं गइबंधणं चक्खुबंधणं दिद्रिबंधणं करेमि सव्बद्धसिद्धे 👸 🖺 ठः ठः ठः स्वाहा ॥१॥

 गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं,

 गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो आरियाणं,
 गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं,
 गैंद्गी

 श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं,
 गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं,
 गैंद्गी

 श्रीं अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं,
 गैंद्गी
 श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं,

អ្វី म्ली श्रीं अर्ह नमो केविल जिणाणं, मुँ म्ली श्रीं अर्ह मैं नमो भगवओ अरहओ अजियजिणस्स सिञ्जउ मे भगवई महई महाविज्जा मैं नमो भगवओ अरिहओ अजिए अपराजिए महाबले लोगसारे सव्वट्ठसिद्धे मुँ म्ली ठः ठः रः स्वाहा ॥२॥

गुँदी श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो लोए सळ्वसाहुणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो सळ्वोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो भगवओ अरहओ संभवस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरहओ संभवस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरिहओ संभवे महासंभवे अपराजियस्स संभूए महासंभावणे सळ्डिसिद्धे गुँदी ठः ठः ठः स्वाहा ॥३॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो केवलि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ अभिनंदणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा हैं नमो भगवओ अरिहओ नंदणे अभिनंदणे सुनंदणे महानंदणे सव्वट्टसिद्धे हैं द्वी ठ: ठ: रवाहा ॥४॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो लोए सळ्साहुणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सळ्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो केवलि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ सुमइस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरहओ सुमए सुमई समणे सुमणे सुमणसे सुसुमणसे सोमणसे सळ्वटुसिद्धे गुँ ही ठः ठः ठः स्वाहा ॥५॥

गुँ ही श्री अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो केविल जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ पउमप्पहस्स सिज्जड मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ पउमे महापउमे पउमुत्तरे पउमुप्पले पउमसरे पउमसिरि सव्वट्टिसिद्धे **५ द्वी** ठः ठः ठः स्वाहा ॥६॥

गुँदी श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो जोहिजिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँदी श्रीं अर्ह नमो भगवओ अरहओ सुपासस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरिहओ पासे सुपासे अइपासे सुहपासे महापासे सव्वटुसिद्धे गुँदी ठः ठः ठः स्वाहा ॥७॥

गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो अर्णतोहि जिणाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ह्री श्रीं अर्ह नमो भगवओं अरहओं चंदपभस्स सिज्जउ में भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओं अरहओं चंदे सुचंदे चंदप्पभे महाविद्याप्पभे सुप्पहे अइप्पहे

महाप्पहे सव्वद्वसिद्धे 👸 🖺 ठ: ठ: ठ: स्वाहा ॥८॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जोहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुमो भगवओ अरहओ पुष्फदंतस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ पुष्फे पुष्फे महापुष्फे पुष्फेसु पुष्फदंते पुष्फसुइ सव्वहसिद्धे गुँ ही उः उः उः स्वाहा ॥९॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अर्णतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सक्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अर्णतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो केविल जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ सीयला जिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ सीयले सीयले पासे पसंते पसीयले संते निळ्वुए निळ्वाणे निळ्वुएत्ति नमो भगवईए सळाडुसिद्धे गुँ ही उ: ठ: ठ: स्वाहा॥१०॥

९७६ ●

गुँ ही श्रीं अहं नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अरिहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं गुनमो भगवओ अरहओ सिज्जंस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ सिज्जंसे सिज्जंसे सेयंकरे सेयंकरे सुसिज्जंसे प्रिस्जंसे प्रिस्जंसे सुपिंकरे सुव्वहिसद्धे गुँ ही उ: उ: स्वाहा ॥११॥

गुँ ही श्रीं अहं नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो भगवओं अरहओं वासुपूजस्स सिज्जड मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओं अरिहओं वासुपूज्जे वासुपूज्जे अइपूज्जे महापूज्जे पूज्जारुहे सव्वहसिद्धे गुँ ही टः टः टः स्वाहा ॥१२॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो लोए सळ्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो ओहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सळ्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो केविल जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ विमलस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरहओ अमले अमले विमले विमले कमिलणी निम्मले सळ्वट्टसिद्धे गुँ ही टः टः टः स्वाहा ॥१३॥

गुँ ही श्री अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो लोए सळ्साहुणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह गुँ नमो भगवओ अरहओ अणंत जिणस्स सिज्जउ मे भगवई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ अणंते के वलनाणे अणंते पज्जवानाणे अणंतेगमे अणंतकेवलदंसणे सळ्डहिसद्धे गुँ ही उ: ठ: ठ: स्वाहा ॥१४॥

गुँ ही श्रीं अर्हं नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो ओहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं नमो भगवओ अरहओ धम्म केविल जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्हं गुँ नमो भगवओ अरहओ धम्म जिनस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ धम्मे सुधम्मे धम्मचारिण धम्म धम्मे सुअधम्मे चरित्तधम्मे आगमधम्मे धम्मुद्धरणी उवएसधम्मे सव्वद्वसिद्धे गुँ ही ठः ठः ठः स्वाहा ॥१५॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जोहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सब्बोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो भगवओं अरहओं संति जिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओं अरिहओं गुँ संति संति पसंति उवसंति सब्बपापं उवसमेहिं सब्बहिसिद्धे गुँ ही ठः ठः ठः स्वाहा ॥१६॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सव्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो भगवओ अरहओ कुंथुजिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरहओ कुंथुजिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरहओ कुंथु कुंथे सुरकुंथे कीडकुंथुमई सव्वट्ठसिद्धे गुँ ही ठः ठः ठः स्वाहा ॥१७॥

गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो लोए सळ्साहुणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो जोहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो सळ्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अर्ह गुं नमो भगवओ अरहओ अरजिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरहओ अरहो अरणी आरणीस्स पिणियले (सयाणिए) सळ्वटुसिद्धे गुँ ही ठः ठः ठः स्वाहा ॥१८॥

👸 🖁 श्रीं अर्हं नमो अरिहंताणं, 👸 🖁 श्रीं अर्हं नमो सिद्धाणं,

 गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो आरियाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो लोए सव्वसाहुणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो जिणाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो जोहिजिणाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो परमोहि जिणाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँद्गी श्रीं अर्ह गुँनमो भगवओ अरहओ मिल्लिजणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरहओ मिल्लिजणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरहओ मिल्लिजणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँनमो भगवओ अरहओ मिल्लि सुमिल्लि जयमिल्लि महामिल्लि अप्पडिमिल्लि सव्वटुसिद्धे गुँद्गी ठः ठः ठः स्वाहा ॥१९॥

गुँ ही श्रीं अहं नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो आरियाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो लोए सळ्वसाहुणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो जोहिजिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो सळ्वोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ही श्रीं अहं गुने भगवओं अरहओं मुणिसुवयस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओं अरिहओं सुळ्यए महासुळ्यए अणुळ्यए महाळ्यए वएयइ महादिवादित्ये सळ्वटुसिद्धे गुँ ही उ: ठ: ठ: स्वाहा ॥२०॥

ម៉ឺដ្ឋី श्रीं अर्हं नमो अरिहंताणं, ម៉ីដ្ឋី श्रीं अर्हं नमो सिद्धाणं, ម៉ីដ្ឋី श्रीं अर्हं नमो आरियाणं, ម៉ីដ្ឋី श्रीं अर्हं नमो उवज्झायाणं, ម៉ីដ្ឋី श्रीं अर्हं नमो लोए सव्वसाहुणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं नमो जिणाणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं नमो ओहिजिणाणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं नमो परमोहि जिणाणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं नमो सव्वोहि जिणाणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, मुँ द्वी श्रीं अर्हं में नमो भगवओ अरहओ निमिजिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा मैं नमो भगवओ अरहओ निम निम नामिणि नमामिणि सव्वट्टसिद्धे मुँ द्वी टः टः टः स्वाहा ॥२१॥

गुँ ही श्री अर्ह नमो अरिहंताणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो सिद्धाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो तिद्धाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो उवज्झायाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो जिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अगिति तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अगिति तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अगिति तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो अगितिह तिणाणं, गुँ ही श्री अर्ह नमो भगवओ अरहओ अरिटुनेमिस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिटुनेमिस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिटुनेमिस्स रहावत्ते (अरे रहावत्ते) आवत्तेवत्ते अरिटुनेमिस्स सम्मुटुसिद्धे गुँ ही उः उः उः स्वाहा ॥२२॥

गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो अस्हिंताणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो सिद्धाणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो आस्याणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो उवज्झायाणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो लोए सळ्वसाहुणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो जिणाणं, गुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो ओहिजिणाणं, गुँ ह्मी श्रीं अर्हं नमो परमोहि जिणाणं, गुँ ह्मी श्रीं अर्हं नमो सब्बोहि जिणाणं, गुँ ह्मी श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, गुँ ह्मी श्रीं अर्हं गुँ नमो भगवओ अरहओ पासजिणस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा गुँ नमो भगवओ अरिहओ उग्गे उग्गे महाउग्गे उग्गजसे गामपासे नगरपासे पासे पासे सुपासे पासमालिणि सब्बद्धिसद्धे गुँ ह्मी ठः ठः ठः स्वाहा ॥२३॥

វីឌី श्रीं अर्ह नमो अरिहंताणं, ភ្នំឌី श्रीं अर्ह नमो सिद्धाणं, मुँ हैं। श्री अहीं नमो आरियाणं, मुँ हैं। श्री अहीं नमो उवज्झायाणं, मुँ हैं। श्रीं अर्हं नमो लोए सव्वसाहणं, 👸 🖺 श्रीं अर्हं नमो जिणाणं, 👸 🖺 श्रीं अर्हं नमो ओहिजिणाणं. 👸 🖺 श्रीं अर्हं नमो परमोहि जिणाणं, 👸 🖺 श्रीं अर्हं नमो सब्बोहि जिणाणं, नुं ह्री श्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं, उँ द्वी श्रीं अहीं नमो केविल जिणाणं, उँ द्वी श्रीं अहीं उँ नमो भगवओ अरहओ वद्धमाणसामिस्स सिज्जउ मे भगवई महई महाविज्जा 🕇 नमो भगवओ अरिहओ सुर-असुर तेलुक पुइअस्स वेगे वेगे महावेगे निद्धतरे निरालंबणे अंतरहिओ भवामि नै 🖺 वीरे नै 🖺 महावीरे 🕇 🖺 महावीरे, हैं 🖺 जयवीरे हैं 🖺 जयवीरे, हैं 🖺 सेणवीरे हैं 🖺 सेणवीरे, मुँ ह्री वद्धमाणवीरे मुँ ह्री वद्धमाणवीरे, मुँ ह्री जये मुँ ह्री विजये मुँ ह्री जयन्ते 🗗 🎇 अपराजिए 🗗 🚝 अणिहए 🗗 🚝 सव्वट्टसिद्धे निव्वुए महाणसे महाबले 🕇 🖺 ठ: ठ: ठ: स्वाहा ॥२४॥

આમ્નાય→ આ ૨૪ પ્રકારની વર્ધમાનવિદ્યાને સિદ્ધ કરવા માટે તે તે તીર્થંકર પરમાત્માના જિનાલયમાં ચઉત્થભત્તંના પચ્ચકખાણ સાથે (ઉપવાસ આગળ-પાછળ એકાસણું) ૧૦૮ વાર ગણવામાં આવે તો સિદ્ધ થાય છે.

> चउत्थेणं साहणं अरहंताययणेसु । अट्ठसएण जावेण सिज्झई, सव्वकम्मीआएसा ॥

પ્રયોગ→ આ વિદ્યાઓ અચિંત્ય પ્રભાવ શાળી છે. વિવિધ ઉપયોગમાં આવે છે. તેની જાણકારી જોગ વિશારદથી પ્રાપ્ત કરવી.

અધિકારી→ શ્રી મહાનિશીથગ્રંથના યોગોદ્વહન કરનાર પૂજ્ય મુનિભગવંતો. અથવા....ગીતાર્થ ગુરુભગવંત જેમને આપે તેઓ.

संंड स्प→ र्नं नमो भगवओ अरहओ अमुं विज्जं पउज्जामि से मे विज्जा पसिज्जउ। (६२ेड विद्याना જाप डस्ती वणतं डरी शडाय)

शुद्धि पत्रक

| 3 0 | | | | |
|------------|------------|--------------------|--------------------------|--|
| पेज नं | पंक्ति | अशुद्ध पाठ | शुद्ध पाठ | |
| હ | ٦ | गहाण | गहाणे | |
| 80 | 3 O | सुरेन्द्रकरणी | सुरेन्द्रकरिणी | |
| १२ | ર | दरदरिते | दरदुरिते | |
| १३ | 7 | सर्वगोत्तमः | सर्वतोमुखः | |
| ?'0 | ?? | चतुवर्णी | चतुर्वर्णी | |
| 80 | 7 | विउब्बिणइ | विउव्वणइ् | |
| 80 | 9 | पन्नासमणाणं | प्णहसमणाणं | |
| 80 | २१ | भगवई महाविज्जा | भगवई महर्ड महाविज्जा | |
| 80 | १३ | र्जा औं प्र | म जीं प्रों प्रों | |
| ⊏દ | ર | क्ष्वाँ | क्ष्वीँ | |
| גג | ٩ | छिन्यि ॥३॥ | छिन्धि छिन्धि छिन्धि॥२॥ | |
| てて | ₹ ६ | मध्यक्षुद्रोपद्रव | मध्ये क्षुद्रोपदव | |
| 22 | १७ | मध्यक्षुद्रोपद्रव | मध्ये क्षुद्रोपदव | |
| ९ २ | ┖ | क्षीरोदधिसमावृतः | क्षारोदधिसमावृतः | |
| 98 | ર | सुमति | श्री सुमितं | |
| 98 | Ų | एतांश्व पोडश जिनान | पोडशैंवं जिनानेतान् | |
| 48 | و | शेषाः तीर्थकृतः | शेपास्तीर्थकृतः | |
| ९७ | 3 0 | देवा, | देवाः, | |

| पेज नं | पंक्ति | अशुद्ध पाठ | शुद्ध पाठ |
|--------|--------|-----------------|----------------|
| 310 | १२ | सर्वदाः | सर्वदा |
| ९७ | १⊏ | नमः | नमो नमः |
| ९९ | ११ | प्रातःये | प्रानर्थे |
| ९९ | ?3 | प्रानः उत्थाय | प्रातस्त्थाय |
| 99 | १६ | नंदितः | नन्दसम्पदाम् |
| 300 | ર | स्मरणात् जापात् | स्मरणाज्जापाल् |
| १३५ | १ | फुट् | फट् |
| १७४ | ११ | समणे | सुमणे |

- नोंध:-(1) पृष्ठ १७२ से १८३,२४ वर्धमान विधामें जहाँ-आरियाणं शब्द है वहाँ आयरियाणं पाठ शुद्ध है ।
 - (2) पृष्ठ ९१ पंक्ति १६, 'सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं, पादान्तमष्टमं पुनः' पाठ है वहा 'नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेत् रक्षेत् पादान्तमष्टमं' करना
 - (3) पृष्ठ १२४ गाथा **'म हीं रत्नैः** तथा सा सर्वगात्रेषु जापेषु सर्वाणि इतना सुधारना ।

प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, शांतिस्नात्र आदि विधानो में जो मुद्रा बताई जा रही है उस पर निश्रादाताओं को विचार करना आवश्यक है ।आज प्रायः निर्बीज मुद्रा की जा रही है अपेक्षा सहित के विधानो में सबीज मुद्राए बतानी चाहिए । मुद्राओं का परिशीलन करके अज्ञात प्रथाओं को अपनाओ ताकि विधान शीघ्रफलदायी बने ।

- विद्या प्रवाद पूर्व/ मंत्र-मुदाविशारदों का कथन

आह्वान मुद्रा



 उभयकिनिष्ठिकामूलसंयुक्तांगुष्ठाग्रद्वयमुत्तानितं संहितं पाणियुगमाह्वानमुद्रा ।

अर्थ: दोनों हाथों की किनष्ठिका के मूल [अंगुली के अन्तिम पर्व] में स्थापित दोनों अंगुष्ठों के अग्रभाग को उन्मुखकर दोनों हाथों की अंगुलीयों को पंक्तिबद्ध मिलाना आह्वानमुद्रा है।

उपयोग: अनुष्ठान - साधना के वक्त आराध्यदेव तत्त्व को आमंत्रण।

स्थापन मुद्रा



• तदेव तर्ज्जनीमूलसंयुक्तांगुष्ठद्वयांवाङ्मुखस्थापनमुद्रा ।

अर्थ: आह्वानमुद्रा के समान ही दोनों हाथों की तर्जनी अंगुली के मूल में दोनों अंगुष्ठों को स्थापित कर उसको अधोमुख [उल्य] करना स्थापनमुद्रा।

उपयोग: आराध्यदेव तत्त्व की स्थापना।

आह्वानी मुद्रा



 हस्ताभ्यामञ्जलिकृत्वा प्राकामामूलपर्व्वांगुष्ठसंयोजने-नाह्ववानी ।

अर्थ: दोनों हाथों से अञ्जली करके भलीभौतिमूलपर्व [हथेली के पौंचों का बीच भाग] पर अंगुष्ठा का संयोजन [स्पर्शन या स्थापन] करना आह्वानीमुद्रा है।

उपयोग: अनुष्ठान – साधना के वक्त आराध्य देवी तत्त्व को आमंत्रण।

स्थापनी मुद्रा



• इयमेवाधोमुखा स्थापनी ।

अर्थ: आह्वानीमुद्रा को ही अधोमुख करना स्थापनीमुद्रा है।

उपयोग: आराध्यदेवी तत्त्व की स्थापना।

संनिधान मुद्रा (आगे का भाग)



• संलग्नमुष्ट्युच्छ्रितांगुष्ठौ करौ संनिधानी।

अर्थ: संलग्न मुट्ठीवाले दोनों हाथों के अंगुष्ठों को ऊपर करना संनिधानी मुद्रा है।

उपयोग: आमंत्रित आराध्यको अनुष्ठान पर्यंत स्थायी बनने हेतु विनंती।

संनिधान मुद्रा (पीछे का भाग)



संलग्नमुष्ट्युच्छितांगुष्ठौ करौ संनिधानी।

अर्थ: संलग्न मुट्ठीवाले दोनों हाथों के अंगुष्ठों को ऊपर करना संनिधानी मुद्रा है।

संनिरोध-निष्ठुर मुद्रा



संलग्न मुट्टीवाले दोनों अंगुष्ठो को भीतर की ओर करना संनिरोध
 [निष्ठुर] मुद्रा है।

उपयोग: आमंत्रित आराध्य को अनुष्ठान पर्यंत अवश्यमैव स्थिरता हेतु आज्ञा।

अवगुण्ठन मुद्रा



 शिरोदेशमारभ्याप्रपदंपार्श्वभ्यां तर्जन्योर्भ्रमणमवगुंठन-मुद्वदेत्येके ।

अर्थ: मस्तक के मूलभाग से लेकर पाँव तक, शरीर के दोनों पार्श्वों में अर्थात् दोनों तरफ दोनों तर्जनी अंगुलियों का भ्रमण करवाना अवगुंठन मुद्रा है ऐसा कुछ जन कहते है।

[Note-इस मुद्रा को सही रूप में चित्र के माध्यम से समझना पाना असम्भव है फिर भी वर्तमान में प्रसिद्ध अवगुण्ठनमुद्रा का Phota दिया है]

उपयोग: दुष्टतत्त्व-शक्तियों का नियंत्रण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्जली मुद्रा



उत्तानौ किञ्चिदाकुञ्चितकरशाखौ पाणी विधारयेदिति
 अञ्चलीमुद्रा ।

अर्थ: उठी हुई और किञ्चिद् झुकी हुई अंगुलीयोंवालें दोनों हाथों को अच्छी तरह से धारण करना अञ्चली मुद्रा है।

उपयोग: नम्रतादर्शक मुद्रा, अर्घ्य + मन, वचन काया समर्पित करने हेतु ।

निर्बज सौभाग्य मुद्रा [आगे का भाग]



दोनों हाथ जोड़कर दोनों मध्यमा अङ्गुली को सीधी करके दोनों अनामिका को तर्जनी से पकड़ना, कनिष्ठिका को अनामिका के पीछे रखना और कनिष्ठिका के तृतीय पर्व पर अंगुष्ठों को रखने से निर्बज सौभाग्य मुद्रा बनती है।

उपयोग: सौभाग्यमय जीवन बनाने हेतु, सौभाग्य प्राप्त हेतु पुरुषतत्त्व प्रधान साधना में प्रयुक्त है।

सौभाग्य मुद्रा [पीछे का भाग]



धार्मिक परंपरागत अनुष्ठानों में निर्बज सौभाग्य मुद्रा प्रचिलत है।
 पंच मुद्रा का विधान के वक्त उपयोग होता है किसी भी प्रकार के अपेक्षा युक्त अनुष्ठान हो तो सबीज मुद्रा भी साथ में करनी चाहिए।
 सबीज मुद्रा करने से ही अपेक्षित अर्थ की प्राप्ति होती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only

सबीज सौभाग्य मुद्रा



अत्रैवांगुष्ठ्यद्वयस्याधः किनिष्ठिकां तदाक्रान्ततृतीयपर्विकां न्यसेदिति सबीजसौभाग्य मुद्रा ।

अर्थ: यह मुद्रा भी सौभाग्यमुद्रा की तरह ही बनायी जाती है विशेष में यह है कि दोनों अंगुष्ठों को नीचे की ओर करके, किनष्ठिका अंगुली का तृतीयपर्व जो आक्रान्त है उस तृतीयपर्व के स्थान में अंगुष्ठों को रखना सबीज सौभाग्यमुद्रा है।

उपयोग: स्त्रीतत्त्वप्रधानसाधना में प्रयुक्त तथा आशंसा के अनुष्ठान में प्रयुक्त ।

Jain Education International For Provide 2 Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमेष्ठी मुद्रा - (१)



 उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबन्धं विधायांगुष्ठाभ्यां किनिष्ठिके तर्जनीभ्यां च मध्यमे संगृह्यानामिके समीकुर्यात् इति परमेष्ठिमुद्रा ।

अर्थ: उठे हुए दोनों हाथों की अंगुलियों से वेणीबंध [परस्पर में अंगुलियों को एक-दूसरे में गूंथ] करके, फिर दोनों अंगुष्ठों को दोनों किनिष्ठिका अंगुलियों से और दोनों तर्जनी अंगुलियों को दोनों मध्यमा अंगुलियों से अच्छी तरह पकड़कर दोनों अनामिका अंगुलियों को समानरूप से एक दूसरे के स्पर्श करते हुए सीधा करना परमेष्ठी मुद्रा है।

उपयोग: गुण प्राप्ति तथा योगशुद्धि ।

परमेष्ठी मुद्रा - (२)



 यद्वा वामकरांगुली – रूर्ध्वीकृत्यमध्यमां मध्ये कुर्यादिति द्वितीया ।

अर्थ: बाँये हाथ की अंगुलियों को ऊपर की ओर करके मध्यमा अंगुली को हथेली के मध्य में करना दूसरी परमेष्ठी मुद्रा है। उपयोग: पंचपरमेष्ठी के गुणों की प्राप्ति, यह मुद्रा में नवकारमंत्र स्मरण करने से गुणों का विकास।

पद्म मुद्रा

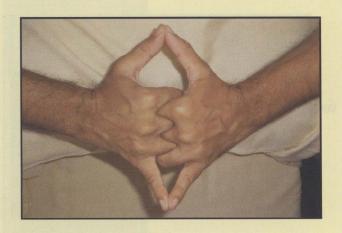


 पद्माकारौ करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसे-दिति पद्ममुद्रा ।

अर्थ: दोनों हाथों को कमल के आकार का करके कमलाकार हाथ के बीच में दोनों अंगुष्ठों को कर्णिका के आकार का बनाना पद्म मुद्रा है।

उपयोग: पद्मवत् निर्लेपता प्राप्ति, तथा निस्पृहताकारक आकर्षण हेतु।

गरुड मुद्रा - (१)



 आत्मनोऽभिमुखदक्षिणहस्तकनिष्ठिकयावामकनिष्ठिकां संगृह्याधः परावित्ततहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ।

अर्थ: अपनी ओर अभिमुख किये हुए दाँये हाथ की कनिष्ठिका अंगुली से बाँये हाथ कनिष्ठिका अंगुली को पकड़कर नीचे की ओर परावर्तित प्रत्यावर्त्तन किये हुए हाथों से गरुड मुद्रा होती है।

उपयोग: जीवन में प्रतिबंधक तत्त्वों का नाश।

धेनु -सुरिभ मुद्रा - (अधोमुख)



 अन्योऽन्यग्रथितांगुलीषु किनिष्ठिकानामिकायोर्मध्य-मातर्ज्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकारा धेनुमुद्रा ।

अर्थ: परस्पर दोनों हाथों की गुंथी हुई अंगुलीयों में किनष्ठिका को अनामिका के साथ संयोजित करने से और मध्यमा अंगुली को तर्जनी अंगुली के साथ संयोजित करने से गोस्तन आकारवाली धेनु मुद्रा होती है।

उपयोग: अधोमुख तत्त्वों को-पदार्थों को जीवंत-सचेतन करना, प्राण प्रतिष्ठा के वक्त उपयुक्त ।

धेनु - सुरिभ मुद्रा - (तिर्यग्मुख)



 दक्षिणहस्तस्य तर्ज्जनीं वामहस्तस्य मध्यमया संद्धीत मध्यमां व तर्ज्जन्याऽनामिकां किनिष्ठिकया किनिष्ठिकां चानामिकया एतच्चाधोमुखं कुर्यात् एषा धेनुमुद्रेत्यन्ये विशिषन्ति ।

अर्थ: दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली को बाँये हाथ का मध्यमा अंगुली से मिलाना और दाहिने हाथ की मध्यमा बाँये हाथ की तर्जनी से मिलाना, इसी प्रकार दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली को किनष्ठिका अंगुली साथ और किनष्ठिका को अनामिका के साथ मिलाकर इस मुद्रा को नीचे की ओर करना, यह भी धेनु मुद्रा ऐसा अन्य आचार्य कहते हैं।

उपयोग: तिर्यग्मुख तत्त्वों को जीवंत करने हेतु ।

Jain Education International For Private 18 Consults Only www.jainelibrary.org

धेनु - सुरिभ मुद्रा - (ऊर्ध्वमुख)



अर्थ: सौभाग्य मुद्रा की तरह बनेगी मुख उपर की ओर करना।
उपयोग: आकाशतत्त्व को जीवंत करना। यह मुद्रा धार्मिक परंपरा
के अनुष्ठान में प्रयुक्त है। अनुष्ठान के अनुरूप त्रिविभाग
है। गोस्तन आकार में बनती है। मुद्रा करते वक्त अमृतदुग्धका प्रवाह प्रवाहित हो रहा है ऐसी कल्पना करना।

वज्र मुद्रा



 वामहस्तस्योपिर दक्षिणकरं कृत्वा किनिष्ठिकांगुष्ठाभ्यां मणिबन्धं संवेष्ट्यशेषांगुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा ।

अर्थ: बाँये हाथ के उपर दाहिने हाथ को करके, किनष्ठिका अंगुली और अंगुष्ठ दोनों के द्वारा, मणिबन्ध (कलाई) को लपेटकर शेष अंगुलियों को अलग-अलग करके उपर की ओर फैलना वज्र मुद्रा है।

उपयोग: वज्र समान आत्मशक्ति तथा प्राप्त शक्ति की वृद्धि।

अङ्कुश मुद्रा



बद्धमुष्टेर्वामहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य किञ्चिदाकुचये-दित्यंकुशमुद्रा।

अर्थ: बाँये हाथ की बन्धी हुई मुठ्ठी से तर्जनी को फैलाकर तर्जनी अंगुली को ही कुछ झुकना अंकुश मुद्रा है।

उपयोग: विरोधी तत्त्व को पराजित करने हेतु । मन को अंकुश में रखने के लिए ।

मुदगर-गदा मुद्रा



 वामहस्तमुष्टेरुपिर दक्षिणमुष्टिं कृत्वा गोत्रेण सह किञ्चिद्-न्नामयेदिति गदामुद्रा ।

अर्थ: बाँये हाथ की मुट्ठी के उपर दाहिने हाथ की मुट्ठी को करके शरीर के साथ हाथ को कुछ उठाना गदा मुद्रा है।

उपयोग: विविध प्रकार की दुष्टशक्तिओं का उन्मूलन।

अस्त्र मुद्रा (१)



दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्धा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति अस्त्रमुद्रा ।

अर्थ: दाहिने हाथ की मुठ्ठी बाँधकर तर्जनी और मध्यमा को फैलाना, अस्त्र मुद्रा ।

उपयोग: शक्ति का प्रदर्शन। यह मुद्रा आसुरी उपासना के वक्त की जाती है।

अस्त्र मुद्रा - (२)



 दोनों हाथ जोड़कर अंगुलीओं को अंदर रखकर दोनों अंगुष्ठ को उपर करके दोनों तर्जनी अंगुली को फैलाना ।

उपयोग: शक्ति का प्रदर्शन। यह मुद्रा परंपरागत सात्त्विकविधान – उपासना के वक्त की जाती है।

पर्वत [गिरि] मुद्रा



उभयोः करयोरनामिकामध्यमे परस्परानिभमुखे ऊर्ध्वकृत्य
 मीलयेच्छेषांगुलीः पातयेदिति पर्व्वतमुद्रा ।

अर्थ: विपरीत मुखवाली दोनों हाथों को अनामिका अंगुलियों और मध्यमा अंगुलीयों को उपर उठाकर परस्पर मिलाना और शेष अंगुलियों को नीचे गिराना पर्वत मुद्रा है।

उपयोग: पर्वत की तरह स्थिरतागुण की प्राप्ति। चंचलता का नाश। वायु जन्य रोग निवारण।

कुर्म मुद्रा



हाथ के उपर हाथ रखकर की जाती है। फोटा देखने से कर पायेंगे।

उपयोग: पृथ्वी तत्त्व की प्रतिक है। कुर्म की तरह भारवहन करने की शक्ति का विकास। तथा साधना की स्थिरता प्रतिष्ठा आदि में कुर्मस्थापन वक्त करनी चाहिए।

मत्स्य मुद्रा



 बायें हाथ पर दायें हाथ रखकर अंगुष्ठ को अलग करने से बनती है ।

उपयोग : यह जलतत्त्व की मुद्रा है जल जन्य रोग का प्रतिकार होता है । अनुष्ठान में सामग्री की शुद्धि इस मुद्रा से होती है ।

शंख मुद्रा



 बाँये हाथ से मुट्ठी बांधकर किनिष्ठिका अंगुली को फैलाकर दबाना शंखमुद्रा है।

लाभ : थाइरोइडरोग बिमारी दूर होती है । नाभिकेन्द्र की ७२,००० स्नायुओं की शुद्धि । नाभि स्वस्थान पर स्थित होती है । पाचनतन्त्र में उपयोगी । लकवाग्रस्त एवम् वाणी विषयक दोष दूर । लक्ष्मी प्राप्ति ।

सहज शंख मुद्रा



 दोनों हाथ की अंगुलियों को परस्पर दबाने से हस्ततल दबाने से दोनों अंगुष्ठों को तर्जनी पर दबाने से होती है।

लाभ : शक्ति ऊर्ध्वगामी बनती है । स्तम्भनशक्ति की पृष्टि होती है । शंख मुद्रा के सभी लाभ प्राप्त होते हैं । प्राप्त लक्ष्मी की स्थिरता ।

विसर्जन - संहार मुद्रा (१)

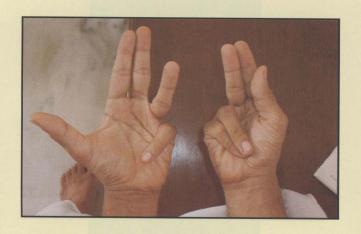


गाह्यस्योपिर हस्तं प्रसार्य किनिष्ठिकादि-तर्जन्यन्ता-नामङ्गुलीनां क्रमसंकोचनेनाङ्गुष्ठमूलानयनात् संहारमुद्रा । विसर्जनमुद्रेयम् ।

अर्थ: ग्रहण करने योग्य (जो सामग्री प्रतिष्ठा पूजादि में उपयोग में आनेवाली है) वस्तुओं के ऊपर हाथ को फैलाना, फिर किनष्ठिका से लेकर तर्जनी पर्यन्त अंगुलियों को क्रम से संकुचित करते हुए अंगुष्ठ के मूल भाग तक अंगुलियों को ले जाना संहार मुद्रा है। यह विसर्जन की मुद्रा है।

उपयोग: पारंपरिक सात्त्विक अनुष्ठान में आमंत्रिततत्त्वों का विसर्जन।

विसर्जन - संहार मुद्रा (२)



फोटो को देखने से कर सकते हैं।
 उपयोग: आसुरी शक्ति के अनुष्ठान में आमंत्रित तत्त्वों का विसर्जन।

चक्र मुद्रा



 वामहस्ततले दक्षिणहस्तमूलं संनिवेश्य करशाखा-विरलीकृत्य प्रसारयेतिति चक्रमुद्रा ।

अर्थ: बाँये हाथ के तल स्थान में दाँये हाथ के मूल को खकर दोनों हाथ की अंगुलियों को अलग अलग करके फैलाना चक्र मुद्रा है।

उपयोग: स्थगित वस्तुओं को गतिमान करने हेतु।

प्रवचन मुद्रा

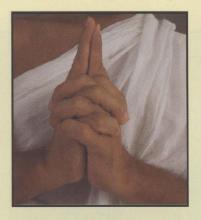


दक्षिणांगुष्ठेन तर्ज्जनीं संयोज्य शेषाङ्गुलीप्रसारणेन
 प्रवचनमुद्रा ।

अर्थः दाँये हाथ के अंगुष्ठ से दाँये हाथ की तर्जनी को संयुक्त (जोड़) कर शेष अंगुलियों को प्रसारित करना प्रवचन मुद्रा है।

उपयोग: वक्ता तथा श्रोता को ज्ञान की प्राप्ति हेतु।

पार्श्व मुद्रा



 पराङ्मुखहस्ताभ्यां वेणीबन्धं विधायाभिमुखीकृत्य तर्जन्यसंश्लेष्य शेषांगुलिमध्येऽङ्गुष्ठद्वयं विन्यसेदिति पार्श्व-मुद्रा ।

अर्थ: नीचे की ओर मुख किये हुए दोनों हाथों से वेणीबन्ध बनाना अर्थात् परस्पर में दोनों हाथों की अंगुलियों को एक दूसरे से गूंथना, फिर वेणीबन्ध किये हुए दोनों हाथों को एक दूसरे के सम्मुख करके, दोनों हाथ की तर्जनी अंगुलियों को परस्पर में सम्बद्ध करना, तत्पश्चात् शेष अंगुलियों के मध्य में दोनों अंगुष्ठों को रखना पार्श्व मुद्रा है।

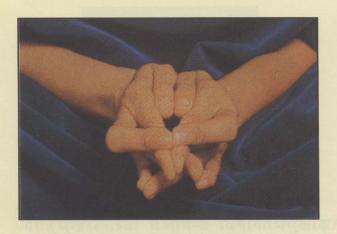
शक्ति मुद्रा



 विधाय मध्यमे प्रसार्य संयोज्य च शेषांगुलीभिर्मुष्टिं बन्धयेत् इति शक्तिमुद्रा ।

अर्थ: परस्पर में अभिमुख (आमने-सामने) दोनों हाथों से वेणीबन्ध बनाकर (अंगुलियों को परस्पर गूंथकर) दोनों मध्यमा अंगुलियों को फैलाकर मिलाना तथा शेष अंगुलियों से मुट्ठी बाँधना शक्ति मुद्रा है।

योनि मुद्रा (१)



 ग्रिथतानामगुलीना तर्जनीभ्यामनामिके संगृह्य मध्यपर्व-स्थांगुष्ठयोर्मध्यमयोः सन्धानकर योनिमुद्रा ।

अर्थ: दोनों हाथ की परस्पर में बन्धी हुई अंगुलियों की तर्जनियों के द्वारा दो अनामिका अंगुलियों को पकड़कर फिर दोनों मध्यमा अंगुलियों के मध्य पर्व में दोनों अंगुष्ठो को स्थापित करना, अंगुष्ठों को मिलाना योनि मुद्रा है।

उपयोग: सदाचारों की वृद्धि।

योनि मुद्रा (२)



 वामहस्तांगुलितर्जन्या किनिष्ठिकामाक्रम्य तर्जन्यग्रं मध्य-मया किनिष्ठिकाग्र पुनरनामिकया आकुंच्य मध्येऽङ्गुष्ठं निक्षिपेदिति योनिमुद्रा ।

अर्थ: बाँये हाथ की तर्जनी अंगुली से किनिष्ठिका अंगुली को पकड़ना फिर तर्जनी अंगुली के अग्र भाग को मध्यमा अंगुली से पकड़ना पुन: किनिष्ठिका अंगुली के अग्रभाग को अनामिका अंगुली से पकड़कर अथवा झुकाकर बीच के भाग में अंगुष्ठ को रखना योनि मुद्रा है।

अंगुष्ठ - लिङ्ग मुद्रा



दोनों हाथ की अंगुलियों को परस्पर एक-दूसरे में फंसाना, Left अंगुष्ठ को सीधा रखना ओर पीछे से Right अंगुष्ठ से दबाना तथा अंगुलियों का भी Pressure देने से बनती है।

अर्थ: स्मरणशक्ति बढ्ती है। मानसिक विचारों में परिवर्तन आता है। उपयोग: पाचनशक्ति बढाने में शरीर सुडोल बनाने में, सदाचार पालनमें शक्ति की प्राप्ति।

ज्ञानध्यान मुद्रा

ज्ञान मुद्रा



दो हाथों एकत्र करके हाथ के हस्ततल पर दायाँ हाथ रखकर सुखासन या पद्मासन करके नाभि पास हाथ रखने से ज्ञान-ध्यान मुद्रा होती है।

लाभ: ज्ञानमुद्रा से प्राप्त होने वाले सभी लाभ होते हैं। तथा ध्यान में प्रगति होती है। तर्जनी अंगुलि और अंगुष्टों के अग्रभाग को एकत्रित करके मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठका साथ में रखकर सीधी करने से ज्ञान मुद्रा बनती है।

लाभ: ज्ञानतंतु क्रियावंत होते हैं।
स्मरण शक्ति, एकाग्रता,
प्रसन्नता की वृद्धि होती है
अनिद्रा के रोग में लाभदायी
है। यह मुद्रा को सरस्वती
मुद्रा भी कहते हैं।

उपयोग : अनिद्रा, Maygrain, शरीर के Pitutory और Pencal मास्टर ग्लान्ड रोगो में उपयोगी।

ज्ञानवैराग्य मुद्रा



दायें हाथ की ज्ञान मुद्रा करके हृदय के पास हाथ को रखना और बायें हाथ की ज्ञान मुद्रा करके घुंटन के पास रखने से ज्ञानवैराग्य मुद्रा बनती है।

लाभ : ज्ञान मुद्रा के सभी लाभ तद्परांत वैराग्य की प्राप्ति। उपयोग: संसार में निष्पाप जीवन जीने में सहायक है।

तत्त्वज्ञान मुद्रा

बोधिसत्त्वज्ञान मुद्रा



• बायें हाथ की पृथ्वी मुद्रा
(अंगुष्ठ और अनामिका के
अग्रभाग को मिलाना) तथा
दायें हाथ की ज्ञान मुद्रा
(तर्जनी और अंगुष्ठ के
अग्रभाग को मिलाना)
करके दोनों घुंटन पर हाथ
रखने से तत्त्वज्ञान मुद्रा होती

लाभ: ज्ञानमुद्रा के सभी लाभ तथा तत्त्वज्ञान प्राप्ति । • हृदय के पास दायें हाथकी ज्ञान मुद्रा करके बायें हाथ की ज्ञानमुद्रा करके हृदय पर रखकर दोनों हाथ का अंगुष्ठ और तर्जनी एक दूंसरो से मिले उसी तरह रखने से बोधिसत्त्वज्ञान मुद्रा बनती है।

लाभ: ज्ञान मुद्रा के सभी लाभ तथा भावो में परिवर्तन, ध्यान में प्रगति होती है।

बंधक मुद्रा

पुस्तक मुद्रा





फोटा को अच्छी तरह से
 देखने से कर पायेंगे।

लाभ : उष्णता उर्जा बढ़ती है । हृदयविकार में लाभ-दायी, अद्भूत शान्ति की प्राप्ति ।

उपयोग: उच्च रक्तदाब नियंत्रण के लिये। आध्यात्मिक शक्ति में आगे बढने के लिए। दोनों हाथ की अंगुलीओं के अग्रभाग को अंगुष्ठ के पास लगाना तथा अंगुष्ठ के अग्रभाग को तर्जनी के पास रखने से बनती है।

लाभ: अध्ययन में लाभकारी, यह मुद्रा करने से ज्ञानप्राप्ति। ज्ञान तथा एकाग्रता प्राप्त करने हेतु क्षमता का विकास होता है।

उपयोग: ज्ञानप्राप्ति हेतु मन और चित्तकी एकाग्रता प्राप्त करने के लिए।

हार्ट मुद्रा



• फोटा को अच्छी तरह से देखने से कर पायेंगे।

लाभ: टेन्शन, प्रकम्पन, हृदय की बिमारीयाँ आदि दूर होती है। तादात्म्य भाव और ध्यान में प्रगति होती है। स्वयं में स्थिरता का गुण उपलब्ध होता है।

उपयोग: Pain, Highper Tension नाडी की अस्तव्यवस्था दूर करने लिए हृदय की बीमारी दूर करने के लिए।

मृगी मुद्रा

हंसी मुद्रा



 मध्यमा और अनामिका मिलाना। दोनों अंगुलियों के दूसरे पर्व के अग्रभाग पर अंगुष्ठ को रखने से तर्जनी और कनिष्ठिका को सीधा रखने से बनती है।

लाभ: मृगवत् सरलता सहजता के भावों की प्राप्ति । नम्रता की प्राप्ति । आहुति में यह मुद्रा उपयोगी है ।

उपयोग: दांत, सायन्स शरदी से शीरदर्द में राहत और मानसिक शांति के लिए।



फोटा को अच्छी तरह से देखने से कर सकते हैं।

लाभ: हंस के समान विवेकता की प्राप्ति। आहुति के वक्त यह मुद्रा करके मध्यमा के अग्रभाग पर आहुति द्रव्य रखकर आहुति देने से धन, धान्य विजय आदि इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

उपयोग: राजसिक और मानसिक शक्ति बढ़ाने के लिए।

पृथ्वीसुरिभ मुद्रा

जलसुरभि मुद्रा



 सुरिंभ मुद्रा करके दोनों अंगुष्ठों के अग्रभाग को अनामिका के पर्व पर रखने से बनती है।

लाभ : पृथ्वीतत्त्वजन्य अग्नि-तत्त्वजन्य रोग में राहत होती है । उदररोग में लाभकारी है ।

उपयोग: कफ प्रकृति के लिए, पाचन संबंधी रोगो के लिए और शरीर की जडता व स्थूल का दूर करने के लिए।



सुरिभ मुद्रा करके दोनों अंगुष्ठों के अग्रभाग को दोनों कनिष्ठिका के पर्व पर लगाने से बनती है।

लाभ: पित्तजन्य रोग में राहत। जलजन्य रोग में कीडनी के रोग में तथा Urine के रोग में लाभ।

उपयोग: पित प्रकृति, कीडनी और मूत्र जन्य रोगों के लिए।

वायुसुरभि मुद्रा

शून्यसुरिभ मुद्रा





सुरिभ मुद्रा करके दोनों अंगुष्ठों
 के अग्रभाग को तर्जनी के पर्व
 पर लगाने से बनती है।

लाभ: वायुजन्य रोग में राहत। मनकी चंचलता का नाश। ध्यान-जप में अत्यन्त उपयोगी है।

उपयोग : ध्यान व जाप में स्थिरता प्राप्त करने हेतु। सुरिभ मुद्रा करके दोनों अंगुष्ठों के अग्रभाग को मध्यमा के पर्व पर रखने से बनती है।

लाभ : अन्तरमुखी जीवन में लाभ । शान्ति, आनन्द, प्रफुल्लिता भाव का विकास होता है ।

उपयोग: कान के दर्द को दूर करने के लिए । अंतरसमृद्धि बढाने के लिए।

नोंध: विधान तथा रोगोपशमन वक्त मुद्रा कब कितने समय तक करनी चाहिए उनका ज्ञान प्राप्त करके मुद्रा का उपयोग करना।

શતશઃ વંદન…!!!

ગયા ભલે નજરથી દર અંતરથી દૂર તો જાય ના, શતકોટિ વંદન પણ પડે ઓછા એમનું ઋણ જીવનમાં ચુકવાય ના, છે કેટલા ઉપકાર લોગ જીવન પર આ જનમે તો એ ભુલાય ના, રહે ઝંખના સદા વાત્સલ્ય ભરી તુમ અમી નજરની, પણ....એ હેતભરી નજર જગમાં ક્યાંય કળાય ના, ભદ્રંકર તો ભદ્રંકર છે. એની તોલે કોઈ આવે ના. એમની જીવમૈત્રી અનમોલ છે એનો મોલ કદી અંકાય ના. એમની નવકાર રમણતા અજોડ છે. અમ જીવનમાં કદી જડાય ના, ચારિત્રના ગુણો વસ્યા તુમ ગગનમાં અમ ગાગરમાં કદી સમાય ના.

આવા પૂજ્યપાદ પંન્યાસ પ્રવસ્શ્રીભદ્રંકરવિજયજી મહારાજા

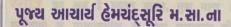
તથા.... યુગો સુધી ઝળહળશે ભુવનભાનુના અજવાળા આવા પૂજ્યપાદશ્રી ભુવનભાનુસૂરીશ્વરજી મ.સા.

તથા....

સફળતા એક અકસ્માત નથી પણ પસંદગી છે. આપણે સ્વસ્થ, સુખી સમૃદ્ધ રહી સિદ્ધિ હાંસલ કરતા રહી સર્વોપરી બનીએ તેનું સઘળું આયોજન આપણા જાગ્રત મનમાં થાય છે. આવા જાગૃત મનના સ્વામી પૂજ્યપાદ આ. ગુરુદેવશ્રી કલાપૂર્ણસૂરીશ્વરજી મ.ના

ચરણોમાં

મારો સ્વાધ્યાય સમાપન વેળાએ પુન: પુન: વંદન !



शिष्यरत्न

पूज्य मुनिश्री भेइयंह् वि.म.नी

પ્રેરણાથી

શ્રી સીમંધરસ્વામી આરાધનાભવન (સીરોલી)

ट्रस्ट डोव्हापुर,(महाराष्ट्र)ना

જ્ઞાનખાતામાંથી લાભ લીદોલ છે.

